भारतीय वाङ्मय

हिन्दी तथा अहिन्दीभाषी क्षेत्रों के साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष 9 | **अगस्त** 2008 | **अंक** 8

पत्रकारिता : तब और अब

''पत्रकारिता अमीरों की सलाहकार और गरीबों की मददगार होनी चाहिए।''

यह उक्ति हिन्दी पत्रकारिता के अविस्मरणीय ध्वजवाहक गणेशशंकर विद्यार्थी की थी। उनके 77वें बलिदान दिवस 25 मार्च सन् 2008 ई० को कानपुर में आयोजित विचार-संगोष्ठी में 'माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय' (भोपाल) के कुलपति श्री अच्युतानंद मिश्र ने कहा कि पत्रकारिता के मूल्यों के क्षरण के इस दौर में गणेशशंकर विद्यार्थी, बाबूराव विष्णु पराड़कर, माखनलाल चतुर्वेदी, माधवराव सप्रे जैसे ज्योति पुरुषों के पत्रकारी कृतित्व और संघर्ष तथा राष्ट्र और समाज को इनकी सेवाओं से पत्रकारिता की नई पीढ़ी को परिचित कराने की आवश्यकता है। उन्होंने इस बात पर चिंता जताई कि आजादी के आन्दोलन के दौर में जो पत्रकारिता मिशन थी और देश पर कुरबान हो जाने का जज्बा तब के पत्रकारों में था, आजादी मिलने के बाद इसमें भटकाव आ गया है। उस दौर में ही पत्रकार और पत्रकारिता ने आमजन का विश्वास हासिल किया था। जनविश्वास की यह अर्जित पूँजी आज भी पत्रकारिता के साथ बनी हुई है। इस साख और विश्वास को बनाए रखने की बहुत बड़ी जिम्मेदारी पत्रकारों की युवा पीढ़ी के कन्धों पर है। इसके लिए उन्हें देश की श्रेष्ठ पत्रकारीय विरासत को जानना, समझना और सही मायनों में उसका अनुगमन करना होगा।

उन्होंने कहा कि विद्यार्थीजी ने अपने अखबार 'प्रताप' में लिखा था ''पत्रकारिता अमीरों की सलाहकार और गरीबों की मददगार होनी चाहिए'', किन्तु पत्रकारिता के व्यावसायिकता के बढ़ते दबाव के चलते विद्यार्थीजी के इस मूलमंत्र को भुला दिया गया है। पत्रकारिता के सामने यह प्रश्न खड़ा है कि उसने गरीबों, दलितों, शोषितों और वंचितों के पक्ष-प्रवर्तन में क्या किया है? इस पर गम्भीर आत्मालोचन की जरूरत है। उन्होंने इस बात पर भी चिन्ता जताई कि मीडिया ने अपने लिए बनाई गयी दर्जन भर आचार-संहिताओं को रद्दी की टोकरी में डाल दिया है। उन्होंने पत्रकारीय भाषा के क्षेत्र में पनप रही अराजकता पर भी दु:ख व्यक्त किया और उसमें सुधार की आवश्यकता रेखांकित की।

अथ शिक्षा

'अथ शिक्षा व्याख्यास्याम:' सूत्र के अनुशासन में बँधकर लगातार आगे बढ़ती हुई हमारी जाति आज के तकनीकी-प्रतिस्पर्धापरक शैक्षणिक अनुशासन में ढलने की तैयारी कर रही है। 21वीं सदी के इस पहले दशक में जब हम विश्वस्तर पर अपनी साक्षरता और शिक्षा के विकास का तुलनात्मक विवेचन करते हैं तब पाते हैं कि विकासशील देशों के शैक्षणिक औसत की तुलना में हम बहुत पीछे नहीं हैं। आज़ादी के बाद, सन् 1961 की रिपोर्ट के अनुसार, तब हमारी जनसंख्या का 28%, शिक्षित था और सन् 2006 की रिपोर्ट के अनुसार आज यह औसत 66% का है। विशाल जनसंख्यावाले देश के सीमित आर्थिक संसाधनों के बीच आज़ादी के बाद से अब तक के 60 वर्षों में शैक्षणिक विकास का यह औसत कम तो नहीं कहा जा सकता। जन-जन में शिक्षा के प्रसार के लिए हमारी राष्ट्रीय सरकार आरम्भ से ही सचेत रही है। इसीलिए शिक्षा पर हमारे राष्ट्रीय व्यय का स्रोत, समग्र-राजस्व का शुरू में जहाँ 8% रखा गया था वह बढ़ते-बढ़ते अब तक 13-14% हो चुका है। इस सतत विकासमान-प्रक्रिया के बावजूद कुछ खामियाँ हैं जिनकी ओर ध्यान देना जरूरी है।

भारत का शैक्षणिक ढाँचा दुनिया में विशालतम है। मोटे तौर पर इसी ढाँचे के अन्तर्गत प्राथमिक से लेकर विश्वविद्यालय तक के सभी स्तरों पर लगभग 29 करोड़ बच्चे/युवक शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। यह संख्या दुनिया के कई देशों की समग्र आबादी से ज्यादा है, केवल चीन को छोड़कर। आज 66% के शैक्षणिक विकास का लक्ष्य प्राप्त करने के बावजूद हमारी 38 करोड़ आबादी अशिक्षित है जो अमेरिका की जनसंख्या के बराबर है।

हमारे विशाल शैक्षणिक ढाँचे का संचालन, केन्द्र और राज्य सरकारों के संस्थानों द्वारा किया जाता है। इस दौर में, इस ढाँचे के बीच, शिक्षकों का अभाव लक्ष्य किया जा रहा है। पूरे देश में प्राथमिक और माध्यमिक स्तर पर मिलाकर 8 लाख शिक्षकों की कमी दर्ज की गयी है। इस वर्ग के शिक्षक-समूह में 10% के लगभग 55 वर्ष से ऊपर की आयु के हैं जिनमें 6.5% शिक्षक प्रतिवर्ष अवकाश ग्रहण करते हैं अथवा शिक्षण कार्य को छोड़कर दूसरे व्यवसाय में लग जाते हैं। इस वर्ग में पढ़ानेवाले अध्यापकों की संख्या का औसत 40 बच्चे प्रति अध्यापक का है। 1/40 के औसत के अनुसार भी देश को 60 लाख शिक्षकों की जरूरत है जबकि इस समय केवल 52 लाख शिक्षक कार्यरत हैं, जिनकी तादाद भी क्रमश: घटती जा रही है। रिपोर्ट के अनुसार सन् 2011 तक, जब प्राथमिक और माध्यमिक स्तर पर 35 लाख शिक्षकों की नियुक्ति हो जायेगी, तब भी 25 लाख शिक्षकों की कमी आड़े आयेगी। यह स्थिति तब है जबकि अधिकांश छात्र किन्हीं कारणों से पढ़ाई छोड़ देते हैं। यदि 15 से 19 वर्ष की आयु के सभी छात्र विद्यालयों में पढ़ने जायें तो कक्षा 9 से 12 के अध्यापन हेतु 38 लाख अध्यापक चाहिए, जिनमें 26 लाख कार्यरत हैं और 12 लाख की कमी यहाँ भी है। शिक्षा और साक्षरता का यह आरम्भिक परिदृश्य निश्चित ही विचारणीय है। तकनीकी उच्च शिक्षा में तो यह कमी और भी ज्यादा है। इसीलिए विश्वविद्यालयों और उनसे संबद्ध महाविद्यालयों के सीमित संसाधनों के कारण होनहार प्रतिभाएँ भी विकास का अवसर पाने से वंचित रह जाती हैं। आज के इस ज्वलंत प्रश्न पर गम्भीर चिन्तन और विकल्पों की खोज जरूरी है ताकि हम भविष्य की चुनौतियों का मुकाबला करने में सक्षम हो सकें।

—परागकुमार मोदी

हमारी सांस्कृतिक अस्मिता का नया परिप्रेक्ष्य

लखनऊ में 'भारतीय संस्कृति की भूमिका' का लोकार्पण

''भारतीय संस्कृति सामासिक नहीं है। यह एक है, एकात्मक है। भारत में कई संस्कृतियाँ नहीं हैं। भारत एक जन है, यह समूहों/राज्यों की यूनियन नहीं है। भारत एक बड़ा जीवंत परिवार है और एक राष्ट्र है, अन्य अस्मिताएँ/पहचानें इस राष्ट्र की विविधताएँ ही हैं, अलग संस्कृति नहीं। 'भारत माता' है, हम सब इसके पुत्र। इस राष्ट्र की कई माताएँ नहीं हैं। एक माता और ढेर सारे पुत्रों के वात्सल्य नेह-स्नेह, दुलार-प्यार का नाम संस्कृति है। आश्चर्य है कि भारत के संविधान में 'भारतमाता' की सांस्कृतिक अनुभूति, प्रतीति और अभिव्यक्ति नहीं है।''

''भारत की एकता का आधार संस्कृति है। भारत के उल्लास, आनन्द और सह-अस्तित्व का आधार भी संस्कृति है। भारत के राष्ट्ररूप में बने रहने का कारण भी संस्कृति है। भारत में विज्ञान, शोध और परिश्रमी वातावरण के गतिशील रहने का भी मूलाधार संस्कृति है। भारत को गति, प्रगति और उन्नति की आधारभूत ऊर्जा भी संस्कृति है।'' (*भारतीय संस्कृति की भूमिका,* पृ० 203-204)

भारत और भारतीय संस्कृति को समझने के लिए भारतीय मानसिकता एवं दृष्टि की जरूरत है, इसे उपनिवेशवादी इतिहास-दृष्टि से समझने और समझाने की कोशिश भारत, भारतीय-जन, समाज और संस्कृति पर आघात है। विश्व के सभी स्वतंत्र और सार्वभौम राष्ट्र अपने इतिहास और संस्कृति का अध्ययन-विश्लेषण अपनी राष्ट्रीय मानसिकता एवं वैज्ञानिक मानकों के अनुरूप करते रहे हैं। किन्तु दुर्भाग्य से आज़ादी मिलने के 60 साल बाद भी हमारा राष्ट्रबोध, उपनिवेशवादी-मानसिकता से आक्रान्त है, सम्भवत: इसीलिए हमारे लिए चुनौती बन गये हैं सैकड़ों अनुत्तरित यक्ष-प्रश्न।

उपर्युक्त सांस्कृतिक सन्दर्भ को जानने, समझने और विश्लेषित करने का विद्वत्तापूर्ण परिश्रम है विद्वान लेखक और राजनीतिज्ञ श्री हृदयनारायण दीक्षित द्वारा लिखित एवं विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी द्वारा सद्य: प्रकाशित पुस्तक 'भारतीय संस्कृति की भूमिका'।

पिछले दिनों लखनऊ नगर निगम के त्रिलोकनाथ सभागार में साहित्यकारों, पत्रकारों, राजनयिकों की उपस्थिति के गरिमामय वातावरण में विश्वविद्यालय प्रकाशन द्वारा प्रकाशित 'भारतीय संस्कृति की भूमिका' का लोकार्पण करते हुए मुख्य अतिथि प्रख्यात पत्रकार श्री प्रभाष जोशी ने कहा कि यह पुस्तक हमारी चिन्तन-दृष्टि को बदलने के साथ-साथ संस्कृति जैसे गम्भीर विषय पर पुनर्विचार करने को बाध्य करती है। इस पुस्तक में श्री दीक्षित ने आज संस्कृति पर हो रहे पाश्चात्य आक्रमण के प्रति हमें सचेत किया है। इसके साथ महाभारतकाल की तरह आज के यक्ष-प्रश्न उठाये गये हैं जिनका जवाब हर भारतीय को देना होगा और यदि वह नहीं देते हैं तो हमें आज का यक्ष जिन्दा नहीं रहने देगा।

इसी क्रम में श्री जोशीजी ने कहा कि, ''आज राजनीति में आचार्य चाणक्य और ऋषि-मुनियों की परम्परा की जगह अवसरवादिता और सौदेबाजी ने ले ली है। इसलिए हमें पुनर्विचार करना होगा और अपनी उस सनातन परम्परा को अपनाना होगा तथा उसी परम्परा के अनुरूप राजनीति करनी होगी वरना हम अमेरिका के पिछलग्गू बन कर रह जायेंगे। आजादी के संघर्ष के दौर में राजनीतिज्ञ दादाभाई नौरोजी ने ब्रिटिश सरकार के खिलाफ किताब लिखी और ब्रिटिश सरकार का विरोध किया। इसी तरह लोकमान्य तिलक और महात्मा गाँधी संस्कृति और देश के लोगों पर लिखते रहे। इसी परम्परा को भाजपा नेता हृदयनारायण दीक्षित आगे बढ़ा रहे हैं और लगातार भारतीय संस्कृति पर लिख रहे हैं। इस विषय पर वे कई पुस्तकें लिख चुके हैं। ऐसे विद्वान राजनीतिज्ञ का सम्मान किया जाना चाहिए। यह पुस्तक भारतीय संस्कृति के संबंध में देश को नयी दिशा देती है। आशा है कि यह लोगों की दृष्टि बदलने में भी सहायक होगी। इन्हीं अर्थों में यह पुस्तक प्रासंगिक हो गयी है।''

प्रसिद्ध लेखक, पत्रकार श्री रामबहादुर राय ने इस पुस्तक के सम्बन्ध में कहा कि, ''लेखक ने अपनी पुस्तक में संस्कृति की व्याख्या करते हुए संविधान पर सवाल उठाए हैं, जो सर्वथा प्रासंगिक हैं। संविधान-सभा ने 4 नवम्बर 1949 को संविधान में संशोधन को लेकर सदस्यों के प्रस्ताव को नहीं स्वीकार किया। इसी तरह महात्मा गाँधी संविधान के अन्तिम प्रारूप पर बहस चाहते थे, किन्तु जवाहरलाल नेहरू ने बहस नहीं होने दी। इसलिए हमें फिर से विचार करना चाहिए और अपने संविधान को देश की गरिमा के अनुरूप बनाना चाहिए। श्री दीक्षित की इस पुस्तक में इन प्रासंगिक बातों पर विचार किया गया है इसलिए भी यह पुस्तक आज की ज़रूरत है।''

भाजपा विधानमंडल के नेता श्री ओमप्रकाश शर्मा ने कहा कि, ''भारतीय संस्कृति पाश्चात्य संस्कृति से श्रेष्ठ है, इसलिए इसे विदेशी संस्कृति से हीन समझने की मानसिकता बदलनी होगी। भारत और उसकी सांस्कृतिक विरासत को समझने के लिए श्री दीक्षित की पुस्तक का स्वागत होना चाहिए।'' कार्यक्रम के अध्यक्ष नगरप्रमुख श्री दिनेश शर्मा ने श्री दीक्षित के लेखन, व्यक्तित्व और सांस्कृतिक दृष्टि को स्पष्ट करते हुए पुस्तक-प्रकाशन की सराहना की। लोकार्पण-समारोह का संचालन आशुतोष मिश्र तथा धन्यवाद प्रकाश विश्वविद्यालय प्रकाशन के पराग मोदी ने किया।

पुस्तकों की चार उपलब्धियाँ हैं— ज्ञान प्राप्त कराना, उदारता एवं नम्रता सिखाना, आनन्द प्रदान कराना तथा लौकिक लाभ देना। **—जॉन डेन्हम**

स्याही से उपजे शब्द ओस की टपकी उन बूँदों के समान हैं जो किसी विचार या भाव का रूप लेकर हजारों-लाखों को सोचने के लिए मजबूर कर देते हैं। **—लार्ड बायस**

बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' की छाया-स्मृति

आचार्य रामचंद्र शुक्ल

मेरे पिताजी फारसी के अच्छे ज्ञाता और पुरानी हिन्दी-कविता के बड़े प्रेमी थे। आधुनिक हिन्दी-साहित्य में भारतेन्दुजी के नाटक उन्हें बहुत प्रिय थे। उन्हें वे कभी-कभी सुनाया करते थे। जब उनकी बदली हमीरपुर जिले के राठ तहसील से मिरजापुर हुई तब मेरी अवस्था आठ वर्ष की थी। उसके पहले ही से भारतेन्दु के सम्बन्ध में एक अपूर्व मधुर भावना मेरे मन में जगी रहती थी। सत्य हरिश्चन्द्र नाटक के नायक राजा हरिश्चन्द्र और कवि हरिश्चन्द्र में मेरी बाल-बुद्धि कोई भेद नहीं कर पाती थी। मिरजापुर आने पर कुछ दिनों में सुनाई पड़ने लगा कि भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के एक मित्र यहाँ रहते हैं, जो हिन्दी के प्रसिद्ध कवि हैं और जिनका नाम है उपाध्याय बदरीनारायण चौधरी।

भारतेन्दु-मंडल की किसी सजीव स्मृति के प्रति मेरी कितनी उत्कंठा रही होगी, यह अनुमान करने की बात है। मैं नगर से बाहर रहता था। एक दिन बालकों की मंडली जोड़ी गई, जो चौधरी साहब के मकान से परिचित थे। वे अगुवा हुए। मील-डेढ़-मील का सफर तै हुआ। पत्थर के एक बड़े मकान के सामने हम लोग जा खड़े हुए। नीचे का बरामदा खाली था। ऊपर का बरामदा सघन लताओं के जाल से आवृत्त था। बीच-बीच में खंभे और खुली जगह दिखाई पड़ती थी। उसी ओर देखने के लिए मुझसे कहा गया। कोई दिखाई न पड़ा। सड़क पर कई चक्कर लगे। कुछ देर बाद एक लड़के ने उंगली से ऊपर की ओर इशारा किया। लता-प्रतान के बीच एक मूर्ति खड़ी दिखाई पड़ी। दोनों कंधों पर बाल बिखरे हुए थे। एक हाथ खंभे पर था। देखते-ही-देखते वह मूर्ति दृष्टि से ओझल हो गई। बस, यही पहली झांकी थी।

ज्यों-ज्यों मैं सयाना होता गया, त्यों-त्यों हिन्दी के नूतन साहित्य की ओर मेरा झुकाव बढ़ता गया। एक बार एक आदमी साथ करके मेरे पिताजी ने मुझे एक बारात में काशी भेजा। मैं उसी के साथ घूमता-फिरता चौखंभे की ओर जा निकला। वहीं पर एक घर में से पं० केदारनाथ पाठक निकलते दिखाई पड़े। पुस्तकालय में वे मुझे प्राय: देखा करते थे। इससे मुझे देखते ही वे वड़ीं खड़े हो गये। बात-ही-बात में मालूम हुआ कि जिस मकान में से वे निकले थे, वह भारतेन्दुजी का घर था। मैं बड़ी चाह और कुतूहल की दृष्टि से कुछ देर तक उस मकान की ओर, न जाने किन भावनाओं में लीन होकर देखता रहा।

16 वर्ष की अवस्था तक पहुँचते-पहुँचते तो समवयस्क हिन्दी-प्रेमियों की एक खासी मंडली मुझे मिल गई, जिनमें काशीप्रसादजी जायसवाल, बाबू भगवानदासजी हालना, पं० बदरीनाथ गौड़, पं० उमाशंकर द्विवेदी मुख्य थे। हिन्दी के नये-पुराने लेखकों की चर्चा बराबर इस मंडली में रहा करती थी। मैं भी अब अपने को लेखक मानने लगा था। हम लोगों की बातचीत प्राय: लिखने-पढ़ने की हिन्दी में हुआ करती, जिसमें 'नि:संदेह' इत्यादि शब्द आया करते थे। जिस स्थान पर मैं रहता था, वहाँ अधिकतर वकील-मुख्तारों तथा कचहरी के अफसरों और अमलों की बस्ती थी। ऐसे लोगों के उर्दू-कानों में हम लोगों की बोली कुछ अनोखी लगती थी। इसी से उन्होंने हम लोगों का नाम 'नि:संदेह लोग' रख छोड़ा था।

चौधरी साहब से तो अब अच्छी तरह परिचय हो गया था। अब उनके यहाँ मेरा जाना लेखक की हैसियत से होता था। हम लोग उन्हें एक पुरानी चीज समझा करते थे। इस पुरातत्त्व की दृष्टि में प्रेम और कुतूहल का एक अद्‌भुत मिश्रण रहता था। यहाँ पर यह कह देना आवश्यक है कि चौधरी साहब खासे हिन्दुस्तानी रईस थे। बसन्त पंचमी, होली इत्यादि अवसरों पर उनके यहाँ खूब नाच रंग और उत्सव हुआ करते थे। उनकी हर एक अदा से रियासत और तबीयतदारी टपकती थी। कन्धों तक बाल लटक रहे हैं। आप इधर से उधर टहल रहे हैं। एक छोटा-सा लड़का पान तश्तरी लिये पीछे-पीछे लगा हुआ है। बात की कांट-छांट का क्या कहना है! जो बातें उनके मुँह से निकलती थीं, उनमें एक विलक्षण वक्रता रहती थी। उनकी बातचीत का ढंग उनके लेखों के ढंग से एकदम निराला होता था। नौकरों तक के साथ उनका 'संवाद' सुनने लायक होता था। अगर किसी नौकर के हाथ से कभी कोई गिलास वगैरह गिरा. तो उनके मुँह से यही निकलता कि 'कारे बचा त नाहीं।' उनके प्रश्नों के पहले 'क्यों साहब' अक्सर लगा रहता था।

वे लोगों को प्राय: बनाया करते थे, इससे उनसे मिलने वाले लोग भी उन्हें बनाने की फिक्र में रहा करते थे। मीरजापुर में पुरानी परिपाटी के बहुत ही प्रतिभाशाली कवि रहते थे, जिनका नाम था—वामनाचार्य गिरि। एक दिन वे सड़क पर चौधरी साहब के ऊपर एक कवित्त जोड़ते चले जा रहे थे। अन्तिम चरण रह गया था कि चौधरी साहब अपने बरामदे में कंधों पर बाल छिटकाये खंभे के सहारे खड़े दिखाई पड़े। चट कवित्त पूरा हो गया और वामनजी ने नीचे से वह कवित्त ललकारा, अन्तिम अंश था—'खम्भा टेकि खड़ी जैसे नारि मुगलाते की।'

एक दिन कई लोग बैठे बातचीत कर रहे थे, कि इतने में एक पंडितजी आ पहुँचे। चौधरी साहब ने पूछा—'कहिये, क्या हाल है?' पण्डितजी बोले—'कुछ नहीं, आज एकादशी थी, कुछ जल खाया है और चले आ रहे हैं।' प्रश्न हुआ—'जल ही खाया है कि कुछ फलाहार भी पिया है।'

एक दिन चौधरी साहब के एक पड़ोसी उनके यहाँ पहुँचे। देखते ही सवाल हुआ—'क्यों साहब, एक लफ्ज मैं अक्सर सुना करता हूँ, पर उसका ठीक अर्थ समझ में न आया। आखिर घनचक्कर के क्या मानी है, उसके क्या लक्षण हैं?' पड़ोसी महाशय बोले—'वाह, यह क्या मुश्किल बात है। एक दिन रात को सोने के पहले कागज-कलम लेकर सबेरे से रात तक जो-जो काम किये हों, सब लिख जाइये और पढ़ जाइये।'

[*विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी द्वारा सद्य: प्रकाशित कथाशिल्पी प्रेमचंद द्वारा सम्पादित 'हंस-आत्मकथा अंक (1932)' से*]

हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा, राजभाषा एवं सम्पर्क भाषा ही नहीं, अपितु यह युगों-युगों से भारत के एकात्म स्वरूप की संरक्षिका भी है।

—डॉ० भोलानाथ तिवारी

संस्कृत कालेज के प्रिंसिपल ग्रिफिथ और मानस के संदर्भ

बनारस संस्कृत कालेज के आरम्भिक प्राचार्यों में आर०टी०एच० ग्रिफिथ का प्रसिद्ध नाम था। उन्होंने वेद संहिताओं का अंग्रेजी में पद्यानुवाद किया था तथा वाल्मीकीय रामायण को भी अंग्रेजी में अनूदित किया था। तुलसी कृत रामचरितमानस के अनेक अंश भी उन्हें कंठस्थ थे। कॉलेज में उन्हें कठोर अनुशासन का पालन करवाना पड़ता था। एक बार एक विद्यार्थी किसी अनुशासनहीनता के कारण उनके सामने लाया गया। चतुर विद्यार्थी को यह तो मालूम था कि कठोर अनुशासनप्रिय ग्रिफिथ साहब कोई रियायत करनेवाले नहीं हैं, तथापि उनके मानस-प्रेम को जानकर उसने निम्न अर्द्धाली पढ़ी।

जो लरिका कछु अनुचित करहीं।
गुरु पितु मातु मोद जिय धरहीं॥

अर्थात् बच्चों की शरारत को देख कर माता, पिता तथा गुरुजन उसका बुरा नहीं मानते, अपितु मन में प्रसन्न होते हैं। ग्रिफिथ साहब ने भी मानस का आधार लेकर अपराधी छात्र को दण्डनीय माना तथा स्पष्ट कहा—

जो नहीं दंड करौं खल तोरा।
भ्रष्ट होहि श्रुति मार्ग मोरा।

यह कह कर उन्होंने अपना फैसला सुना दिया जो छात्र के पक्ष में नहीं था।

—'*साहित्यकारों के हास्य-व्यंग्य*' से

समस्या और समाधान

सुव्यवस्थित देवनागरी लिपि के अव्यवस्थित की-बोर्ड

— जगदीश्वर जोहरी

संसार की सर्वोत्कृष्ट, सुव्यवस्थित और सुनियोजित लिपि देवनागरी मानी जाती है। उसकी ध्वन्यात्मक वैज्ञानिकता असंदिग्ध है। पर यन्त्रों में उसके इन गुणों की झलक नहीं मिलती। अपार क्षमतावाले कम्प्यूटर में भी देवनागरी सहज, सरल और त्वरित गतिशील नहीं है। आज के यान्त्रिक युग में यह स्थिति दुर्भाग्यपूर्ण है। कम्प्यूटर के लिए तो देवनागरी की-बोर्ड आदर्श होना चाहिए किन्तु यहाँ भी अक्षरों का स्थान असंगत, बेतरतीब, शिफ़्ट का अत्यधिक इस्तेमाल, इतना कि शायद ही कोई शब्द बिना शिफ़्ट के बन सके; कई वर्णों, मात्राओं को टुकड़ों में कई कुञ्जियों द्वारा पूरा करना; पंक्चुएशन चिह्न—यहाँ तक कि पूर्ण विराम तक का अभाव, विशेषताएँ हैं।

अल्पप्राण व्यञ्जनों के साथ उनके महाप्राण सहरूप अधिकांशत: उसी कुञ्जी में रखे गये हैं। फलस्वरूप कुञ्जी सञ्चालन और शिफ़्ट-की के इस्तेमाल का परिमाण और भी अधिक बढ़ गया है। पंक्चुएशन चिह्न भी चार अंकों के विशेष कोडों से कण्ट्रोल-की द्वारा उपलब्ध होते हैं।

हम समझते हैं कि देवनागरी की-बोर्डों में सहज, सरल, गतिशील सञ्चालन (टंकन, मुद्रण) के लिए, लिपि के वैज्ञानिक गुणों के अनुरूप, निम्नलिखित बातें होनी चाहिए—

(1) एक कुञ्जी में एक ही अक्षर रूप हो और यदि दो हों तो वे वार्णिक दृष्टि से परस्पर सम्बन्धित हों। (2) एक व्यञ्जनाक्षर पूर्ण रूप से (अकार सहित) एक ही कुञ्जी से प्राप्त हो—टुकड़े

प्रस्तावित कुञ्जी पटल का प्रारूप

कुञ्जी संख्या 46 (अंग्रेजी की-बोर्ड से एक कम)

कम्प्यूटर के दो तरह के कुञ्जी-पटल आमतौर पर प्रचलित हैं। एक तो टाइपराइटर वाला की-बोर्ड है। इसमें महाप्राण व्यञ्जन—ख, घ, ण, थ, ध, भ, श, ष और क्ष केवल अर्धाक्षर रूप में हैं जिन्हें मात्राएँ लगाने से पूर्व पहले अकार की विशेष मात्रा द्वारा पूरा बनाना पड़ता है। कुञ्जियों में ऊपर और नीचे के अक्षरों-मात्राओं में घोर अनियमितता है; असम्बद्ध अक्षर अव्यवस्थित ढंग से ठूँस दिये गए हैं—ट/अ, ठ/इ, ड/उ, छ/द, ढ/ए, झ/ा, थ/ि, ज्ञ/ा, ॅ/ ी आदि। सहज कल्पना की जा सकती है कि ऐसी दुरवस्था में त्रुटिहीन यन्त्र सञ्चालन (टंकन, मुद्रण) कितना धीमा और कठिन होगा।

दूसरा की-बोर्ड शुषा नाम से उपलब्ध है, जो रोमन आधारित है; अर्थात् अंग्रेजी अक्षरों की निर्धारित कुञ्जियों में ध्वन्यात्मक रूप से समतुल्य देवनागरी अक्षर बिठाने का प्रयास किया गया है, यथा aA, bB, cC आदि के स्थान पर अ/ा, ब/भ, च/छ आदि। स्पष्ट है कि यह ऐडजस्टमेंट आंशिक ही हो सकता है अतएव अनेक अक्षरों का सामञ्जस्य नहीं बन पाया है। इसमें 'पाई' वाले सभी अक्षर अर्धाक्षर रूप में हैं और जोड़कर नहीं। (अधोबिन्दु वाले ड़, ढ़, ज़, फ़ को छोड़ कर)। (3) अर्धाक्षर प्राप्त करने की एक ही विधि हो (र का रेफ अपवाद रहेगा)। (4) स्वराक्षर और उनकी मात्रा एक ही कुञ्जी में हो। (5) बारह खड़ी की कोई भी स्वर-मात्रा एक ही कुञ्जी से पूरे रूप में प्राप्त हो, दो मात्राएँ जोड़ कर नहीं। आगत-निर्गत स्वर ऑ, ह्रस्व ऍ, ऑ की मात्राएँ क्रमश: आ, ए, ओ की मात्राओं में अर्धचन्द्र जोड़ कर बना ली जाएँ। (6) सम्पूर्ण वर्णमाला उपलब्ध हो, और (7) पंक्चुएशन चिह्न सीधे ही प्राप्त हों।

प्रस्तुत लेख में ऐसे ही एक सम्भावित की-बोर्ड का प्रारूप प्रस्तुत है। इसमें अर्धाक्षर बनाने के लिए हॉफ़ लेटर, हॉफ़ शिफ़्ट (half shift) के प्रावधान को समावेश करने का सुझाव है। शिफ़्ट-की की दो कुञ्जियों में से दाहिनी ओर की कुञ्जी को हॉफ़-शिफ़्ट-की में बदला जा सकता है। इसी तरह संयुक्ताक्षर बनाने वाले सभी व्यञ्जनाक्षरों को प्रारूप में केवल लोअर शिफ़्ट में ही रखा गया है। हॉफ़-शिफ़्ट-की दबाने से ये अक्षर आधे हो जायेंगे वरना पूरे आयेंगे। यह तीसरी शिफ़्ट के विकल्प जैसा होगा।

ज़ाहिर है कि सरलता, सहजता और गतिशीलता के अलावा इसमें अन्य विशेषताएँ भी होंगी। (1) आँकड़ों का समस्त फ़िगर वर्क एक ही (अपर) शिफ़्ट पर कैप लॉक द्वारा हो सकेगा। (2) संस्कृत जन्य अन्यान्य भाषाओं की लिपियों के लिए इसे मामूली फेरबदल से अपनाया जा सकेगा। (3) जेबी (मोबाइल) तथा मैन्युअल यन्त्रों के लिए भी इसे सरलता से परिवर्धित किया जा सकेगा।

(2)

प्रसंगवश, यदि इकार की मात्रा को दक्षिणांगी किया जा सके तो अनेक वर्तमान तथा भावी समस्याओं से निजात मिल सकेगी। इस मात्रा चिह्न से खड़ी पाई हटा देने मात्र से यह मात्रा बिना किसी भ्रम या विकार के वामांगी से दक्षिणांगी हो जायगी, यथा चेत्रेत, शीक्षेत, हेन्दी, लेली आदि। इसका प्रभाव दूरगामी होगा। सभी स्वर-मात्राओं की संयोजन-विधि एक समान हो जायगी। तब की-बोर्ड में केवल अर्धाक्षर रूप ही पर्याप्त होंगे और कम्प्यूटर की मेमोरी व्यवस्था द्वारा पाई सहित उपयुक्त स्वर-मात्रा स्वत: ही लग जायेगी और 'हॉफ़-शिफ़्ट' की भी आवश्यकता न रहेगी। प्रस्तावित की-बोर्ड से यह भी सम्भव हो सकेगा। ध्यातव्य है कि इ की मात्रा भी आजकल दो प्रकार की चल पड़ी है, एकाक्षर के लिए छोटी और संयुक्ताक्षर के लिए लम्बी यथा—थिर, स्थिर। उधर भारत सरकार का केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय हल चिह्न से बनने वाले संयुक्ताक्षरों में यह मात्रा दो अक्षरों के बीच में डलवा कर स्कूली पाठ्य पुस्तकें छपवाने पर ज़ोर दे रहा है, यथा द्वितीय, बुद्धिमान, पद्मिनी, चिह्नित आदि जिससे अब विस्मित, लज्जित, सम्मिलित आदि भी दिखने लगे हैं। इस मात्रा को अक्षर के बाद लगाने से अनेक समस्याओं का निराकरण हो जायगा। इसे वैकल्पिक रूप में स्वीकारा जा सकता है।

(3)

एक बात और। अभी तक अन्तर्राष्ट्रीय अंकों का जो रूप देवनागरी की-बोर्डों में रखा जा रहा है—समान, लम्बे आकार का (1234567890) वह देवनागरी अक्षरों की प्रकृति के अनुकूल नहीं है। अन्तर्राष्ट्रीय अंकों का ही एक फ़ॉण्ट और होता है जिसमें अंकों की आकृति गोलाकार और असमान लम्बाई के होते हैं (1234567890) जो देवनागरी अंकों (१२३४५६७८९०) के अधिक अनुरूप हैं। हमको अंकों के लिए इसी फ़ॉण्ट को अपनाना चाहिए क्योंकि ये फिर भी देवनागरी अक्षरों से उतने बेमेल नहीं हैं।

> यदि हिन्दुस्तान को सचमुच एक राष्ट्र बनाना है, तो कोई माने या न माने राष्ट्रभाषा हिन्दी ही बन सकती है। **—महात्मा गाँधी**

राष्ट्रभाषा हिन्दी को अंग्रेजी विधा में न लिखें

— गगनेन्द्रकुमार केडिया

हर भाषा की अपनी विधा होती है। हिन्दी के लेखकों का दायित्व है कि हिन्दी में लिखते समय हिन्दी भाषा की विधा का अनुकरण करें, न कि अंग्रेजी भाषा की विधा का जो हिन्दी को अंग्रेजी में लिखने के समतुल्य है। एक शाब्दिक उदाहरण लें। हिन्दी में जिसे हम 'मुसलमान' बोलते हैं, अंग्रेजी में उसे 'मुस्लिम'। पर हिन्दी के लेखक धड़ल्ले से 'हिन्दू-मुस्लिम' लिखते हैं, 'हिन्दू-मुसलमान' नहीं लिखते। मैं तो यह मानता हूँ कि आज भी अंग्रेजी का ज्ञान हमारे लिए अनिवार्य है। विदेशों के साथ हमारा सम्पर्क-सूत्र अंग्रेजी ही है। योरोप के देशों की भाषा अंग्रेजी नहीं है। फ्रांस की फ्रेंच है, जर्मनी की जर्मन है, इटली की इटैलियन है। पर इन देशों से भी हमारा सम्पर्क अंग्रेजी भाषा के ही माध्यम से होता है क्योंकि वहाँ के निवासी भी अंग्रेजी समझ लेते हैं। उच्च शिक्षा के पाठ्यग्रन्थ, चाहे सामान्य हों या तकनीकी, अंग्रेजी में ही उपलब्ध हैं। 'आक्सफोर्ड इंग्लिश डिक्शनरी' में 100 के लगभग हिन्दी के शब्द समाहित हो चुके हैं। इनमें ब्राह्मन्, बनिया, संन्यासी, योगी, होली, ब्रह्मा, बाजार, घी, चटनी जैसे शब्द सम्मिलित हैं। 'टाइम्स आफ इंडिया' जैसे अंग्रेजी के सर्वश्रेष्ठ समाचारपत्र में न केवल समाचारों में, वरन् सम्पादकीय तक में हिन्दी के शब्दों का प्रयोग होने लगा है। समाचारों में, बिना अंग्रेजी अनुवाद के, हिन्दी के पूरे वाक्य तक रोमन लिपि में लिखे जाने लगे हैं। कारण यह है कि हर भाषा में अनेक ऐसे शब्द होते हैं जिनकी सही अभिव्यक्ति दूसरी भाषा में अनूदित शब्द से नहीं हो सकती। 'जिजीविषा' (जीने की इच्छा) के लिए अंग्रेजी में कोई शब्द नहीं है। आपको लिखना पड़ेगा 'दि डिजायर टू लिव'। अंग्रेजी के रेलगाड़ी से सम्बन्धित 'सिग्नल' शब्द के लिए हिन्दी में कोई सटीक शब्द नहीं है। ट्रेन के लिए 'रेलगाड़ी' और 'रेलवे' के लिए 'रेलमार्ग' शब्दों का प्रयोग ठीक है। पर 'सिग्नल' के लिए हम 'सिग्नल' शब्द का ही प्रयोग करते हैं। किसी भी भाषा की समृद्धि के लिए दूसरी प्रादेशिक एवं विदेशी भाषाओं के शब्दों को अपनाना मेरी दृष्टि में वर्जित नहीं है। क्रिकेट में क्षेत्ररक्षण के नियत स्थानों जैसे, 'स्लिप, थर्डमैन, स्क्वायरलेग' आदि का अनुवाद नहीं हो सकता। कर देंगे तो बड़ा अटपटा लगेगा। क्या 'स्लिप' के लिए 'फिसलना' या 'चूकना' लिखेंगे? इससे कुछ समझ में आएगा? इन शब्दों को हमें अपनी हिन्दी भाषा में सम्मिलित करना ही पड़ेगा। अंग्रेजी भाषा से, एक बहुप्रचलित अंतर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में, मेरा कोई विरोध नहीं है, न उसके आवश्यक शब्दों के हिन्दी में समावेश से ही। मेरा विरोध हिन्दी भाषा की विधा को छोड़कर, अनावश्यक एवं अस्वीकार्य रूप में उसे अंग्रेजी की विधा में लिखने से है।

अंग्रेजियत का भूत

अंग्रेज भूत (व्यतीत) हो गए, पर अंग्रेजियत वर्तमान है। जैसा मैंने ऊपर लिखा है, हर भाषा की अपनी विधा होती है। अंग्रेजी के व्यामोह में हम अपनी विधा को भूलकर, हिन्दी को अंग्रेजी की विधा में लिखने लगे हैं। यही नहीं, हिन्दी को अंग्रेजी के माध्यम से सिखाने के प्रयास भी हो रहे हैं। कुछ उदाहरण पढ़िए।

अंग्रेजी विधा में 'गोइंग टू' का प्रयोग होता है। इसका भूत इस कदर हिन्दीवालों पर सवार हुआ है कि क्या कहूँ। किसी गोष्ठी के आरम्भ की घोषणा करते हुए, उद्घोषक सामान्यतया कहता है ''अब हम गोष्ठी का प्रारम्भ करने जा रहे हैं।'' अरे भाई गोष्ठी का प्रारम्भ जहाँ बैठे हैं, वहीं होगा, कहीं जा नहीं रहे हैं। यह जा रहे हैं अंग्रेजी विधा है—''वी आर गोइंग टू स्टार्ट द मीटिंग।'' सीधे-सीधे बोलिए ''अब हम गोष्ठी का आरम्भ कर रहे हैं।'' अब मान्यवर ग्रन्थ का विमोचन करने जा रहे हैं।'' मान्यवर कहीं जा नहीं रहे हैं, जहाँ बैठे हैं वहीं विमोचन करेंगे। बोलना चाहिए ''अब मान्यवर ग्रन्थ का विमोचन कर रहे हैं या करेंगे।'' ''एक नया नाम जुड़ने जा रहा है।'' होगा ''एक नया नाम जुड़ने वाला है।'' ''हड़ताल पर जा रहे हैं।'' होना चाहिए ''हड़ताल पर जाने वाले हैं।'' पता नहीं अंग्रेजी का 'गोइंग टू' हिन्दी में इतने जोर-शोर से क्यों चल पड़ा।

एक वाक्य प्रकाशित हुआ है ''जहाज का कप्तान भाग लिया।'' यह भाग लिया कहाँ से आया? अंग्रेजी में लिखेंगे ''कैप्टेन आफ दी शिप टुक आफ।'' टुक अर्थात् लिया। हमें लिखना चाहिए भाग गया।

एक और उदाहरण देखें। हिन्दी में 'अमेरिका', 'चीन' और 'यूरोप' से 'अमेरिकी', 'चीनी' और 'यूरोपी' बनेगा। पर हम हिन्दी में भी अंग्रेजी शब्द 'अमेरिकन' 'चाइनीज' और 'यूरोपियन' का प्रयोग करने के आदी हैं।

अंग्रेजी का ज्ञान न होते हुए भी हम उससे मोहग्रस्त हैं। हिन्दी फिल्मों का एक गाना है ''गाना आये या ना आये, गाना चाहिए।'' वही बात अंग्रेजी के मोह की भी है—अंग्रेजी आये या न आये, बोलनी चाहिए। मुझे बड़ी हँसी आती है जब कार के चालक, मिस्त्री और मालिक तक 'रैडिएटर' को 'रेडीवाटर' बोलते हैं। इससे तो सीधे-सीधे 'पानी की टंकी' बोलते। एक अन्य बड़ा रोचक उदाहरण है, एक गहने की दुकान पर नामपट्ट लगा है 'एक्टिव आर्नामेन्ट्स'। ऐक्टिव का अर्थ हुआ सक्रिय। यह भूल से अट्रैक्टिव (आकर्षक) के स्थान पर लिखा गया है। इससे तो अच्छा होता 'एक्टिव आर्मामेन्ट्स' (सक्रिय हथियार) लिख देते। कुछ अर्थ तो निकलता।

रोमन बनाम नागरी

नागरी लिपि विश्व की सबसे वैज्ञानिक लिपि है जिसमें हिन्दी लिखी जाती है और अंग्रेजी रोमन लिपि में। इसकी वर्णमाला सबसे बड़ी है। जहाँ रोमन लिपि में केवल पाँच स्वर (वावेल) हैं, नागरी में तेरह हैं। व्यंजन भी जहाँ अंग्रेजी में केवल 21 हैं, नागरी में 31। नागरी में हम जो लिखते हैं, वही पढ़ते हैं। रोमन में ऐसा नहीं है। एक ही अक्षर का अलग-अलग शब्दों में भिन्न-भिन्न उच्चारण होता है। ''सी यू टी - कट'' में 'सी' का उच्चारण 'क' है, ''सी ए एल एल - काल'' में 'का' है, ''सी ए टी - कैट'' में 'कै' है, ''सी आइ जी ए आर - सिगार'' में 'सि' है। नागरी में अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, अं, अः ऋ इतने स्वर हैं। हमें एक ही ध्वनि का अलग-अलग स्वरों के लिए प्रयोग नहीं करना पड़ता। अंग्रेजी में 'अ' के लिए 'ए', 'आ' के लिए 'ए ए', 'इ' के लिए 'आइ', 'ई' के लिए 'ई ई', 'उ' के लिए 'यू', 'ऊ' के लिए 'ओ ओ', 'ए' के लिए 'इ', 'ऐ' के लिए 'ए आइ', 'ओ' के लिए 'ओ', 'औ' के लिए 'ओ यू', 'अं' के लिए 'यू एन', 'अः' के लिए 'ए एच', व 'ऋ' के लिए 'आर आई' लिखना पड़ेगा। फिर भी कइयों का सटीक उच्चारण नहीं होगा। 'श' के लिए टेन्शन में 'एस' का प्रयोग है—टी इ एन एस आइ ओ एन। पर 'अटेन्शन' की वर्तनी में 'एस' नदारद है—ए टी टी इ एन टी आइ ओ एन। इसमें एस की जगह ''टी आइ ओ'' का उच्चारण 'श' है।

हिन्दी पर अंग्रेजी के हावी होने का एतत्सम्बन्धी एक और नमूना देखें। मैंने अन्यत्र लिखा है कि अ और आ स्वरों के लिए, अंग्रेजी में एक ही वावेल है ए। अतः अ के लिए ए और आ के लिए ए ए का प्रयोग होना चाहिए। पर ऐसा होता नहीं। राम, कृष्ण, बुद्ध, योग आदि को रोमन में लिखने पर शब्द के अन्त में ए आता है। अंग्रेजी बोलनेवालों ने, विशेष रूप से विदेशों में, इसका उच्चारण रामा, कृष्णा, बुद्धा और योगा कर दिया। देखादेखी हम हिन्दीवाले भी इनका अनुकरण करने लगे। यह अत्यन्त दुःखद है कि हिन्दीवाले रामा, कृष्णा, बुद्धा और योगा बोलने लगे हैं। काशी में जेसी के एक अध्याय ने तो अपना नाम ही 'शिवा जेसी' रख दिया। भूतपूर्व राज्यपाल स्व० विष्णुकान्त शास्त्री ने इस पर उन्हें लताड़ भी लगाई थी। शिव जो पुल्लिंग है उसे शिवा स्त्रीलिंग कर दिया, वह भी काशी में जो हिन्दी के दिग्गज विद्वानों की नगरी है।

'सी एच' का उच्चारण ''सी एच इ एम आइ सी ए एल'' - 'केमिकल' में क होगा, ''सी एच यू सी के'' - 'चक' में च होगा, ''सी एच ए एफ इ'' - शेफ में श होगा, ''सी इ आर टी'' सर्ट में स होगा। एक ही संयुक्ताक्षर के अलग-अलग उच्चारण हैं, नागरी में ऐसा नहीं है।

कितने शब्दों की वर्तनी ऐसी है जिसमें कुछ अक्षरों का उच्चारण ही नहीं होता, वे व्यर्थ लिखे जाते हैं, जैसे ''एफ ओ आर ई आई जी एन'' - फारेन में 'आई जी' का उच्चारण ही नहीं होता। ''एन यू टी सी एच - नाच'' में 'यू टी' का उच्चारण नहीं होता।

'च' के लिए 'सी एच' का प्रयोग होता है, जैसे 'सी एच ए टी - चैट' में। पर 'सी एच ओ आर डी' 'कोर्ड' में इसका उच्चारण 'को' हो जाता है।

रोमन की वर्णमाला में 'क्ष', 'त्र' और 'ज्ञ' अक्षर है ही नहीं। इसी कारण अंग्रेज 'ज्ञ' का सही उच्चारण नहीं कर पाते थे। वे 'ज्ञान' को 'ज्नान' बोलते थे और वर्तनी थी ''जे एन ए एन ए''। ज्ञानमंडल यंत्रालय ने सीधे-सीधे ''जी वाइ ए एन'' न लिखकर अंग्रेजियत वाली वर्तनी अपनाई थी। मजाक में लोग उसे 'जनानामंडल' कहते थे। काशी की सुप्रतिष्ठित संस्था 'ज्ञानप्रवाह' ने भी अंग्रेजियत वाली वर्तनी अपनाई है।

हिन्दी चलचित्र

हिन्दी चलचित्र और दूरदर्शन ने हिन्दी के प्रचार-प्रसार में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है और निभा रहे हैं। पर हिन्दी चलचित्रों में दो नई अंग्रेजियत वाली प्रवृत्तियाँ चली हैं। पहले तो हिन्दी नाम के साथ अंग्रेजी में उसका अर्थ लिखना आरम्भ हुआ है। उदाहरण पढ़ें—

'रिश्ता—ए बांड आफ लव', 'खामोश—दि साइलेन्ट', 'मित्र—माई फ्रैन्ड', 'बेवफा—दी अनफेथफुल', 'मोड़—दि टर्निंग प्वाइंट', 'इन्साफ—दी जस्टिस', 'मुद्दा—दि इस्यू', 'गर्व—प्राइड ऐंड आनर', 'अनजाने—दि अननोन'।

क्या हमें हिन्दी चलचित्र वाले हिन्दी को अंग्रेजी में पढ़ा रहे हैं? क्या हिन्दी के दर्शकों को हिन्दी नहीं, अंग्रेजी समझ में आती है? या हिन्दी के स्थान पर अंग्रेजी के जानकारों को हिन्दी चलचित्र देखने के लिए आकृष्ट करने की यह चेष्टा है? वाह रे अंग्रेजियत का भूत।

दूसरी प्रवृत्ति तो और भी भीषण है। पूरा नाम ही अंग्रेजी में लिखा जा रहा है। उदाहरण देखें—कैश, हनीमून, राक डांसर, दि पार्टी, हनीमून ट्रैवेल्स प्राइवेट लिमिटेड, मिस्टर हाट मिस्टर कूल, दी रीबेल, रिस्क, बैड ब्वायज गुड ब्वायज, जस्ट मैरिड, हुक ऐंड क्रुक आदि। क्या हिन्दी चलचित्र के दर्शकों को अंग्रेजी नामों से आकर्षित करना पड़ेगा? अंग्रेजी न जाननेवाले दर्शक इनका अर्थ कैसे समझेंगे और कैसे चयन करेंगे? बलिहारी हो अंग्रेजियत की।

स्वतन्त्रता के 60 वर्षों बाद भी हिन्दी चलचित्रों एवं दूरदर्शन के धारावाहिकों की नामावली अंग्रेजी में दिखाई जा रही है। विदेशी भाषाओं की बात छोड़ भी दें तो भारत में ही प्रादेशिक भाषाओं के चलचित्रों एवं दूरदर्शन के धारावाहिकों की नामावली भी प्रादेशिक भाषाओं में ही दिखाई जाती है, यथा बंगला, मलयालम, तेलगू आदि। यदा-कदा ही कोई निर्देशक हिन्दी में नामावली दिखाते हैं। स्व० वी० शान्ताराम इनमें से एक थे। क्या हिन्दी चलचित्रों के निर्माता-निर्देशक यह नहीं समझते कि इन्हें देखने वाले शत-प्रतिशत दर्शक हिन्दी अवश्य जानते हैं. परन्तु इसके विपरीत संभ्रान्त-शिक्षित वर्ग को छोड़कर, बहुसंख्य दर्शक अंग्रेजी नहीं जानते। उन्हें चलचित्र में भाग लेनेवाले कलाकारों एवं प्रविधिज्ञों (तकनीशियनों) का ज्ञान कैसे होगा?

भाषाओं में बड़ी राष्ट्रभाषा होती है।
गुलामी में बड़ी भाषाई गुलामी होती है॥

'भारत की खोज' नेहरू की ऐतिहासिक उपलब्धि

— साधना अग्रवाल

'भारत एक खोज' के लेखक जवाहरलाल नेहरू क्रांतिकारी विचारों के लेखक थे। आज रिसर्च स्कॉलर यह सोचकर हैरान रह जाते हैं कि जेल में बैठकर पाँच हजार साल की कहानी से लेकर आजादी तक उन्होंने जो काम किया, वह किसी ने नहीं किया।

केन्द्रीय सूचना एवं प्रसारणमंत्री श्री प्रियरंजन दासमुंशी ने नेहरू की सुविख्यात पुस्तक 'द डिस्कवरी ऑफ इण्डिया' पर आधारित टीवी सीरियल के डीवीडी संस्करण के लोकार्पण समारोह में 29 जून को कहा कि बचपन में उन्होंने 'भारत एक खोज' पढ़ी थी। जिसने इसे नहीं पढ़ा, वो चाहे कितनी भी पढ़ाई कर ले, लेकिन वह सफल नहीं होता। 20 साल पहले हर रविवार को इसका प्रसारण होता था। आज मैं बहुत शुक्रगुजार हूँ, चाहे कितने भी निजी चैनल हों, लेकिन दूरदर्शन ने इतिहास को जिस तरह समाज के सामने प्रस्तुत किया उतना कोई भी चैनल नहीं करते। नेहरू पहले प्रधानमंत्री थे मात्र यह उनका परिचय नहीं था। इतिहास, सभ्यता को इस तरह पेश करना कोई मामूली बात नहीं। मुझे लगता है कि जेल में रहते हुए क्या स्वयं सरस्वती नेहरूजी की आत्मा में बैठ जाती थीं और श्याम बेनेगल ने जिस तरह इसको प्रस्तुत किया है, उन्होंने यह अपने लिए नहीं, अवार्ड के लिए भी नहीं, बल्कि नई पीढ़ी के लिए किया है जो सही मायने में सेवा है। मेरी कोशिश है कि ये कॉलेजों में, स्कूलों में पहुँचाया जाए। निजी चैनलों से मैं अनुरोध करूँगा कि टीआरपी के चक्कर में न पड़ें बल्कि कम से कम साल में एक बार कुछ तो ऐसा दिखाएँ कि हम अपनी संस्कृति से परिचित हो सकें। सभ्यता भी कोई चीज होती है। पं० नेहरू की कलम से आज इतिहास को इस तरह सामने लाया गया है तो उसकी उपलब्धि पर हमें गर्व होना चाहिए।

'भारत एक खोज' के प्रख्यात निर्माता एवं निर्देशक श्याम बेनेगल ने कहा कि यह सीरियल 1989 ई० में बनाया गया था। अंतत: यह डीवीडी अस्तित्व में आई न केवल भारत में बल्कि विदेशों में भी हमारे जो भारतीय हैं, उन तक भी पहुँची। मेरे पिता ने पं० जी की यह पुस्तक मुझे गिफ्ट दी थी। यह इतिहास की मास्टर किताब है। सन् 1980 दूरदर्शन का स्वर्णिम युग था जब हम लोग, बुनियाद, तमस, भारत एक खोज जैसे सीरियल आते थे। हम नेहरू के आभारी हैं जिन्होंने हमारे इतिहास से नई पीढ़ी को परिचित कराया। यह पुस्तक स्वयं में ऐतिहासिक उपलब्धि है, जिस पर हमने 19 महीने लगातार काम किया सुबह से शाम तक। 22 सुपरिचित इतिहासकारों ने ऐतिहासिक तत्त्वों की पुष्टि की। वैदिक काल से लेकर स्वाधीनता आन्दोलन तक के समय को 53 एपिसोड में प्रस्तुत किया गया। जब नेहरू जेल में थे तब यह पुस्तक लिखी गई। यह पं० नेहरू की नजर से भारत के सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक और आर्थिक ढाँचे को रूप देने वाले सभी तत्त्वों का दस्तावेज है। कमलिनी दत्त इसके लिए बधाई की पात्र हैं जिन्होंने इतनी खूबसूरती से इसे डीवीडी के रूप में प्रस्तुत किया। फिल्म कलाकार ओमपुरी ने कहा कि यह दूरदर्शन और श्याम बेनेगल की ऐतिहासिक उपलब्धि है।

उड़ीसा नहीं ओडिशा

हिन्दी में प्रचलित 'उड़ीसा और उड़िया' ग़लत प्रयोग है। हिन्दी में इसे संशोधित करने की ज़रूरत है क्योंकि 'उड़ीसा' में 'उड़िया' भाषा में 'ओड़िशा' और 'ओड़िया' ही शुद्ध रूप है। अब तो ओड़िशा विधानसभा ने भी तदाशय का प्रस्ताव पारित कर केन्द्र को भेज दिया है। असल में यह आन्दोलन ओड़िया दैनिक 'संवाद' ने ORISSA के स्थान पर ODISHA के लिए आरम्भ किया था बरसों पूर्व ! मैंने स्वयं ओड़िशा के एकमात्र हिन्दी दैनिक 'उत्कलमेल' के कार्यकारी सम्पादक के पद पर रहते हुए पाँच वर्ष पूर्व ही अपनी भूल को सुधार लिया था। 'भारतीय वाङ्मय' के माध्यम से हिन्दी के विद्वत्जनों से प्रार्थना है कि कृपया वे अपने लेखन में 'उड़ीसा' और 'उड़िया' के स्थान पर 'ओड़िशा' और 'ओड़िया' का ही प्रयोग करें। यही शुद्ध रूप और शुद्ध प्रयोग है।

—सुशील दाहिमा 'अभय', राउरकेला

अत्र-तत्र-सर्वत्र

'ज्ञानप्रवाह' में झलकेगा काशी का दर्शन

वाराणसी। सांस्कृतिक अध्ययन एवं शोध केन्द्र 'ज्ञानप्रवाह' के कलामंडप का कायाकल्प काशी दर्शन के रूप में हो गया है। इसके 'काशी कक्ष' में कला, साहित्य, संस्कार, धरोहर को इस तरह से व्यवस्थित किया गया है कि यदि काशी के रंग में रंगना हो तो बस कक्ष का अवलोकन कर लें। संस्था के नवसत्रारंभ के अवसर पर तीन दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार 'काशी की कला एवं पुरातत्त्व' पर होगा।

यूपी का पहला ग्रामीण विश्वविद्यालय

केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने इलाहाबाद को एक बड़ा तोहफा दिया है। यूपी का पहला ग्रामीण विश्वविद्यालय गंगापार में खुलने की अनुमति मिल गई है। इसका नाम नेहरू ग्राम भारती विश्वविद्यालय होगा। 1962 में इसकी आधारशिला प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने ही रखी थी। इसको मूर्त रूप में आने में पूरे 46 वर्ष लग गए। इस सम्बन्ध में 27 जून को अधिसूचना जारी हो गयी है। जे०एन० मिश्र इस विश्वविद्यालय के चांसलर बनाए गए हैं।

नौ दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय रामलीला मेला

मध्य प्रदेश सरकार के संस्कृति विभाग द्वारा भोपाल में नौ दिवसीय (6 जून से 14 जून) अंतर्राष्ट्रीय रामलीला मेले का आयोजन किया गया। विश्व में रामकथा पर केन्द्रित इस समारोह का समारम्भ पूर्व केन्द्रीय मंत्री राजनाथ सिंह ने किया। नौ दिन तक चलनेवाले इस समारोह में कंबोडिया के क्लासिकल ट्रुप ऑफ कंबोडिया, बाली के आई०एस०आई० डेंपनसर ग्रुप, श्रीलंका के अरुषी आर्ट थिएटर, सिंगापुर की भास्कर आर्ट अकादमी, जावा का जोगिया टूरिज्म बोर्ड ग्रुप, लाओस का रायल बेले थिएटर ग्रुप, केरल का मधु मार्गी ग्रुप और अयोध्या की अवध आदर्श रामलीला मंडली की रामलीलाओं का मंचन उल्लेखनीय रहा। इसके अलावा भारतीय लघुचित्र शैलियों में रामकथा चित्रांकन पर केन्द्रित प्रदर्शनी और विश्व में रामकथा के विभिन्न आयामों पर केन्द्रित परिसंवाद का भी आयोजन किया गया। मुल्ला रमूजी संस्कृति भवन में आयोजित विमर्श सत्र में इंद्रनाथ चौधरी, रमेशचंद्र शाह, रामभद्राचार्य, कपिला वात्स्यायन, आचार्य राममूर्ति त्रिपाठी, राधावल्लभ त्रिपाठी, वागीश शुक्ल और मंदाकिनी रामकिंकर ने सहभागिता की।

गाँधीजी के भाषण की दुर्लभ रिकॉर्डिंग

महात्मा गांधी के एक ऐतिहासिक भाषण की दुर्लभ रिकार्डिंग वाशिंग्टन में मिली है। यह भाषण अंग्रेजी में है और इसे उनकी हत्या से कुछ महीने पहले रिकार्ड किया गया था।

यह अंग्रेजी में गांधीजी के दो दुर्लभ भाषणों में से एक है। इस टेप को नेशनल प्रेस क्लब के पूर्व प्रमुख जान कोसग्रोव ने 60 वर्षों तक संभाले रखा। उन्हें बापू के इस भाषण की ऐतिहासिक महत्ता तब समझ में आई, जब इत्तेफाक से उनकी मुलाकात गांधीजी के पौत्र एवं उनके जीवनीकार राजमोहन गांधी से हुई। अल्फ्रेड वाग नामक पत्रकार ने दिल्ली में 2 अप्रैल, 1947 को गाँधीजी का भाषण रिकार्ड दिया था। यह रिकार्डिंग उसी भाषण की है।

गांधीजी की मातृभाषा गुजराती थी, पर वह हिन्दी में भाषण करते थे। उन्होंने सिर्फ दो मौकों पर अंग्रेजी में भाषण किया।

गांधीजी ने यह भाषण जवाहरलाल नेहरू द्वारा आयोजित एशियाई नेताओं के सम्मेलन में दिया था। गाँधीजी इस टेप में दर्ज भाषण में कह रहे हैं, ''मैं आपको पूरब या फिर कहें एशिया का सन्देश देना चाहता हूँ। हमें पश्चिम के तनाव का अनुकरण नहीं करना है। हम पश्चिमी दुनिया की बारूद, बम और गोले की नीति का अनुकरण न करें। अगर आप पश्चिम को कोई सन्देश देना चाहते हैं तो यह सन्देश प्यार का ही हो सकता है।''

तो क्या तुलसीदास अविवाहित थे ?

महाकवि तुलसीदास के विवाह पर नया विवाद खड़ा हो गया है। यूपी बोर्ड की पाठ्यपुस्तकों में रत्नावली से तुलसीदास के विवाह पर कुछ विद्वानों ने आपत्ति दर्ज की है। उनका दावा है कि तुलसीदास अविवाहित थे। उन्हें पुस्तकों में तुलसीदास के जन्मस्थान सूकरक्षेत्र (आजमगढ़) के उल्लेख पर भी आपत्ति है। अब यूपी बोर्ड की हिन्दी पाठ्यक्रम समिति भी इस दावे के आगे झुक रही है। उसने इन अंशों को गलत मानते हुए उन्हें पुस्तकों से हटाने की सिफारिश की है।

हाई स्कूल की पुस्तक 'काव्य संकलन' और इंटर की 'काव्यांजलि' बता रही है कि तुलसीदास का जन्म आजमगढ़ में हुआ था। पाठ्यपुस्तक के अनुसार ''तुलसी का विवाह रत्नावली से हुआ था जिस पर वह इतना अनुरक्त थे कि उनके मायके चले जाने पर रात में बढ़ी हुई नदी को पार कर ससुराल पहुँच गए। रत्नावली ने उनकी भर्त्सना करते हुए कहा—'लाज न आवत आपकौं, दौरे आयहु साथ। धिक् धिक् ऐसे प्रेम कौं, कहा कहौं हौं नाथ॥' इससे प्रभावित होकर वह विरक्त हो गए और काशी चले आए।'' सनातन धर्म परिषद के अध्यक्ष डॉ० स्वामी भगवदाचार्य व तुलसीदास जन्मभूमि सूकर खेत विकास समिति ने पाठ्यपुस्तकों में छपे इन अंशों पर आपत्ति दर्ज की। विधायक राम विशुन आजाद ने भी नियम-51 के तहत इस पर आपत्ति दर्ज की थी।

पाठ्यपुस्तकों में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के हवाले से कहा गया है कि ''यह सूकर क्षेत्र (आजमगढ़) वह स्थान है जो सरयू के किनारे है और जहाँ मेला लगता है।'' श्री आजाद ने दावा किया था कि पाठ्यपुस्तक में आचार्य शुक्ल को गलत सन्दर्भित किया गया है। पाठ्यक्रम समिति का मानना है कि तुलसीदास के विवाह के पक्ष में कोई भी अकाट्य प्रमाण नहीं है, अत: तुलसी रत्नावली के बारे में कोई भी निर्णायक बात नहीं कही जानी चाहिए। समिति ने माना है कि पाठ्यपुस्तकों में सूकर क्षेत्र (आजमगढ़) बताया गया है जो गलत है। हिन्दी साहित्य के इतिहास में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने सूकर क्षेत्र (गोण्डा) का उल्लेख किया है। तुलसीदास बांदा और सूकर क्षेत्र (गोंडा) दोनों से जुड़े थे। दोनों ही जगह राजापुर गाँव है और दोनों सरयूपारीण शांडिल्य गोत्र के ब्राह्मणों के गाँव हैं। राजापुर, बांदा में तुलसीदास के वंशज जो माफीनामा दिखाते हैं उसकी जब तक प्रामाणिकता की जाँच न हो जाए तब तक राजापुर, बांदा के दावे को खारिज नहीं किया जा सकता।

प्रो० चंद्रदेव सिंह बने कुलपति

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के पूर्व छात्र **प्रो० चंद्रदेव सिंह** को मध्यप्रदेश स्थित इंदिरा गांधी जनजातीय केन्द्रीय विश्वविद्यालय (अमरकंटक) का कुलपति बनाया गया है। आजमगढ़ निवासी प्रो० सिंह वर्तमान में मध्य प्रदेश के ही अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय (रीवां) में कार्यरत हैं।

कुटुम्ब शास्त्री सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति

संस्कृत के प्रख्यात विद्वान प्रो० विम्पटि कुटुंब शास्त्री को कुलाधिपति व उत्तर प्रदेश के राज्यपाल टीवी राजेश्वर ने सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय का कुलपति नियुक्त किया है। आन्ध्र प्रदेश के मूल निवासी प्रो० शास्त्री वेदांत व साहित्य के विद्वान हैं। उन्होंने अध्यापन-कार्य सदाशिव केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, पुरी से बतौर लेक्चरर शुरू किया। नई दिल्लीस्थित राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान में अध्यापन के दौरान उन्होंने अपने प्रयासों से इस संस्था को न सिर्फ मानित विश्वविद्यालय का दर्जा दिलाया बल्कि यहाँ के प्रथम कुलपति भी नियुक्त किए गए।

पाण्डुलिपियों के संरक्षण और प्रकाशन आवश्यक

पांडुलिपियाँ हमारे देश की अमूल्य धरोहर हैं। लखनऊ विश्वविद्यालय के पुरातत्त्व विभाग के पूर्व प्रोफेसर किरणकुमार थपलियाल का कहना है कि देश के अनेक हिस्सों में संरक्षित काफी पांडुलिपियाँ नष्ट होने के कगार पर हैं। उन्हें संरक्षित करने की आवश्यकता है अन्यथा आने वाली पीढ़ी इस बौद्धिक सम्पदा में छिपे ज्ञान-विज्ञान से वंचित रह जाएगी।

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय में स्थापित राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन की ओर से परिसर में पाण्डुलिपियों का महत्त्व, संरक्षण व सम्पादनविषयक संगोष्ठी में मुख्य अतिथि प्रो० थपलियाल ने कहा कि पाण्डुलिपियों के प्रकाशन से नवीन ज्ञान सामने आएँगे। अशोक के शिलालेख व अन्य के अभिलेखों में भारतीय इतिहास व ज्ञान-विज्ञान वर्णित है। वर्तमान समय में पाण्डुलिपियों के अध्ययन की आवश्यकता है।

सुदूर गाँव, अनजाने इलाकों से धूल से अटी पड़ी पुरानी पेटियों, कंदराओं में छिपे पड़े और लोगों की आँखों से ओझल इतिहास को बयान करती पाण्डुलिपियों की खोज का कार्य अब दिल्ली के आसपास के क्षेत्रों में केन्द्रित किया गया है। राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन ने योजना के तहत दिल्ली, गुड़गांव और राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के आसपास के शहरों में खजूर या ताड़ के पत्तों आदि पर लिखे इतिहास के अनजाने और अनसुने तथ्यों को खोज निकालने का कार्य शुरू किया है। केन्द्रीय संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री अम्बिका सोनी ने बताया कि देश के अनेक भागों से पाण्डुलिपियों को खोजने का काम राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन के 33 केन्द्रों के जरिये किया जा रहा है। इसके तहत इन दुर्लभ पाण्डुलिपियों के संरक्षण और उनका इलेक्ट्रॉनिक डाटाबेस तैयार करने को प्राथमिकता दी जा रही है। उन्होंने कहा कि पाण्डुलिपियों का संरक्षण एक अनवरत प्रक्रिया है। इसके लिए कोई समय सीमा तय नहीं की जा सकती है। हजारों की संख्या में पाण्डुलिपियों को खोजा गया है। आगे बड़े पैमाने पर इस कार्यक्रम को आगे बढ़ाने की योजना है।

विष्णु प्रभाकर से मुख्यमंत्री मिलीं

वयोवृद्ध साहित्यकार विष्णु प्रभाकर की हालत में सुधार है। उन्हें आईसीयू से हटाकर सामान्य वार्ड में दाखिल कर दिया गया है। दिल्ली की मुख्यमंत्री शीला दीक्षित उनका हाल चाल पूछने पंजाबी बाग स्थित अग्रसेन अस्पताल गयीं। दिल्ली विधानसभा में कांग्रेस के मुख्य सचेतक रमाकांत गोस्वामी और हिन्दी अकादमी के सचिव नानकचंद भी उनके साथ थे। श्रीमती दीक्षित ने कहा कि श्री प्रभाकर की हर तरह की मदद की जाएगी। अकादमी ने श्री प्रभाकर के स्वास्थ्य की स्थिति पर लगातार नजर रखने के लिए अस्पताल में एक अधिकारी को तैनात किया है। हृदय की बीमारी के कारण उन्हें पंजाबी बाग स्थित अग्रसेन अस्पताल में दाखिल कराया गया था। जहाँ उन्हें आईसीयू में दाखिल कर वेंटीलेटर पर रखा गया था। एडिशनल एम०एस० ममता जैन के अनुसार 96 वर्षीय श्री प्रभाकर की उम्र अधिक होने के कारण उनके स्वास्थ्य में कई तरह की जटिलताएँ हैं।

वाशिंगटन में 'न्यूजियम'

वाशिंगटन में 11 अप्रैल 2008 को पत्रकारिता के लिए समर्पित अनूठे संग्रहालय की स्थापना हुई। संग्रहालय में बालकन्स में अमेरिकी पत्रकारों द्वारा इस्तेमाल की गई गोलियों से छलनी हुई कार, रुपर्ट मर्डोक का टेलीफोन, जो उनके अरबों रुपयों के मीडिया साम्राज्य को खड़ा करने में प्रयुक्त हुआ, प्रदर्शित है। बर्लिन की दीवार का अवशेष और 11 सितम्बर को न्यूयार्क के आतंकी हमले में ध्वस्त संचार टावर के अवशेष भी इस संग्रहालय में हैं।

इस 'न्यूजियम' पर पैंतालीस करोड़ डॉलर की लागत आई है। इसे 'न्यूजियम' नाम दिया गया है। 'न्यूजियम' में उदासी का बोध कराती दीवारें उन पत्रकारों की स्मृति को समर्पित हैं जिन्होंने समाचार संकलन करते हुए प्राण गँवाए। इस 'न्यूजियम' की स्थापना फ्रीडम फाउन्डेशन ने की है जिसे स्वतंत्र अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित करने के लिए जाना जाता है।

पहला बुक मॉल कोलकाता में

भारत का पहला समन्वित बुक मॉल कोलकाता में किताबों के प्रसिद्ध मोहल्ले कालेज स्ट्रीट में बन रहा है। दस लाख वर्ग फुट क्षेत्रफल में बन रहे इस माल का नाम 'वर्ण परिचय' रखा गया है। इसके निर्माण पर 289 करोड़ रुपये की लागत आएगी। बुक मॉल के निर्माण का एक चौथाई काम पूरा हो गया है। नगर निगम के आयुक्त अलापन बंद्योपाध्याय ने बताया कि भारत का यह पहला समन्वित पुस्तक मॉल पब्लिक-प्राइवेट पार्टनरशिप के तहत बनाया जा रहा है। इस सात मंजिले मॉल में किताबों की दुकानों के अलावा लाइब्रेरी, 1100 सीटोंवाला मल्टीप्लेक्स, फूड पार्क, पब, सेमिनार हाल, पुस्तक नीलामी केन्द्र, किताबों के कवर की गैलरी, म्यूजिक शॉप होगा।

साठोत्तरी हिन्दी कविता का संक्षिप्त इतिहास

भागलपुर विश्वविद्यालय के पूर्व विभागाध्यक्ष डॉ० गणेशानन्द झा, वरिष्ठ साहित्यकार श्री राधेलाल नवचक्र एवं कवि श्री उमेश प्रसाद शर्मा 'उमेश' ने 'साठोत्तरी हिन्दी कविता का संक्षिप्त इतिहास' लिखने का निर्णय लिया है। इसके लिए इन लेखकों ने ऐसे कवियों, जो उन्नीस सौ साठ के बाद के दशक में काव्य सृजन में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा कर चुके हैं और किसी कारणवश हिन्दी साहित्य के इतिहास में आने से वंचित रह गए हैं, उनसे उनका आत्मकथ्य, नाम, जन्मस्थान, जन्म तिथि, प्रकाशित पुस्तकें, पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित प्रतिनिधि कविताओं का उल्लेख आमंत्रित किया गया है।

काशी के सशक्त हस्ताक्षर

विद्वान लेखक एवं प्राध्यापक : एक रूपरेखा

प्रो० राजमणि शर्मा

एम०ए०, पी०-एचडी० (का०हि०वि०)

[*गाँव की माटी में सुल्तानपुर (उ०प्र०) में 2 नवम्बर 1940 को जन्म*]

अकादमिक गतिविधियाँ : (1) विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली द्वारा पूरे भारत के लिए स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर के लिए तैयार किए गए पाठ्यक्रम का संयोजक एवं संयुक्त समन्वयक पाठ्यक्रम स्वीकृत-प्रचारित। (2) हिन्दी विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में स्नातक और स्नातकोत्तर शिक्षण, शोध-निर्देशन, जुलाई, 2003 में आचार्य-पद से सेवानिवृत्त। (3) भारतीय हिन्दी परिषद् का उपसभापति। (4) अनेक विश्वविद्यालय एवं सरकारी/गैर सरकारी शिक्षण संस्थाओं की विभिन्न समितियों का सदस्य।

प्रकाशित रचनाएँ : हिन्दी भाषा : इतिहास और स्वरूप, भारतीय प्राणधारा का स्वाभाविक विकास : हिन्दी कविता, काव्य भाषा : रचनात्मक सरोकार, बलिया का विरवा : काशी की माटी, अनुवाद विज्ञान : प्रायोगिक सन्दर्भ, अनुवाद विज्ञान, छायावाद और जयशंकर प्रसाद। मेरो मन अनत कहाँ सुख पायो, कथा प्रसंग, हिन्दी भाषा : विविध सन्दर्भ तथा अपभ्रंश भाषा और साहित्य प्रकाश्य।

पुरस्कार-सम्मान : उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान से आचार्य रामचन्द्र शुक्ल नामित पुरस्कार (समीक्षा), काव्यभाषा : रचनात्मक सरोकार पर।

आगामी योजनाएँ : 'आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी का साहित्य कोश' एवं 'एक दलित ब्राह्मण की आत्मकथा' का सम्पादन एवं लेखन योजनाएँ प्राथमिक हैं। जिन्दगी बची और स्वस्थ रहा तो कुछ और सोचूँगा।

क्या खोया/क्या पाया : मेरे पास खोने के लिए कुछ भी न था; हाँ आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी और डॉ० रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव के अवसान के पश्चात उनका वात्सल्य और स्नेह खोया। मेरी समस्त उपलब्धियाँ, मेरे अपने आत्मीयों, दोस्तों की देन है; चाहे वह अध्यापन कला हो या भाषण कला अथवा अध्ययन के प्रति अभिरुचि।

महत्त्वपूर्ण सन्देश : मैंने अनुभव किया स्वार्थ का बलिदान, पर-उपकार, सम्बन्धों का ईमानदारी से निर्वाह, सत्य, अहिंसा, त्याग और कर्त्तव्य के प्रति समर्पण भाव मनुष्य के मार्ग की हर बाधाओं को दूर करता है; अस्तु इन मूल्यों के प्रति समर्पण मनुष्य की सफलता का रहस्य है।

सम्पर्क : चाणक्यपुरी, सुसुवाही, वाराणसी-05
फोन : 0542-2570604

सम्प्रति : स्वतंत्र लेखन, अध्यापन एवं व्याख्यान।

सम्मान-पुरस्कार

सत्रह विद्वानों को हिन्दीसेवी पुरस्कार

केन्द्रीय हिन्दी संस्थान ने वर्ष 2007 के 'हिन्दीसेवी सम्मान' की घोषणा कर दी। पुरस्कार की सात श्रेणियों के लिए 17 व्यक्तियों का चयन किया गया है। हर श्रेणी के चयनित को एक-एक लाख रुपये की राशि प्रदान की जाएगी। पुरस्कार 14 सितम्बर को राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल दिल्ली में प्रदान करेंगी।

संस्थान के उपाध्यक्ष रामशरण जोशी ने बताया कि *हिन्दी के प्रचार और प्रशिक्षण के लिए* चार विद्वानों को '**गंगाशरण सिंह पुरस्कार**' दिया गया है। इसमें तमिलनाडु के **एम० शेषण**, केरल के **ए. अरविंदाक्षण**, मणिपुर के **देवराज** और जम्मू-कश्मीर विश्वविद्यालय की **जौहरा अफजल** हैं।

पत्रकारिता में '**गणेशशंकर विद्यार्थी पुरस्कार**' प्रिण्ट मीडिया में **आलोक मेहता** को दिया है। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में पुरस्कार को निजी चैनलों और दूरदर्शन के बीच विभाजित कर दिया। इसमें एनडीटीवी के **कमाल खान** और दूरदर्शन के **अमरनाथ अमर** का संयुक्त रूप से चयन किया है।

वैज्ञानिक तकनीकी साहित्य के क्षेत्र में '**आत्माराम पुरस्कार**' राजस्थान के **दुर्गादत्त ओझा** और उड़ीसा के **सुबोध महंती** को दिया है। इसी श्रेणी का एक और पुरस्कार दिल्ली की **विनीता सिंघल** और **मनोज पटेरिया** को मिला है।

हिन्दी के आलोचनात्मक क्षेत्र में '**सुब्रह्मण्यम भारती पुरस्कार**' दिल्ली की **निर्मला जैन** और बिहार के **नंद किशोर नवल** को मिला है।

हिन्दी में खोज और यात्रा विवरण के लिए '**राहुल सांकृत्यायन पुरस्कार**' भूमि सुधारों पर सर्वाधिक सक्रिय रहे उत्तराखण्ड के **पूरनचंद जोशी** और राजस्थान के आईपीएस अधिकारी **हरिराम मीणा** को मिला है।

विदेशों में हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए '**डॉ० जार्ज ग्रियर्सन पुरस्कार**' पोलैंड की **दातूना स्ताषिक** को दिया है। विदेशों में भारतीय मूल के व्यक्तियों को दिया जानेवाला '**डॉ० मोटूरि सत्यनारायण पुरस्कार**' अमेरिका निवासी **उषा प्रियंवदा** को मिला है।

ज्ञानपीठ का नवलेखन पुरस्कार

नई दिल्ली। भारतीय ज्ञानपीठ का '**नवलेखन पुरस्कार**' इस बार *कविता के लिए* **रविकांत** (यात्रा) और **उमाशंकर चौधरी** (कहते हैं तब शहंशाह सो रहे थे) को संयुक्त रूप से और *कहानी विधा के लिए* **विमल चंद्र पाण्डेय** (डर) को दिया जाएगा।

निर्णायकमण्डल के अध्यक्ष डॉ० नामवर सिंह व सदस्य थे—ममता कालिया, चित्रा मुद्गल, अनामिका, दिनेश शुक्ल, गंगाप्रसाद विमल और हेमंत कुकरेती।

नामवर सिंह को परम्परा विशिष्ट सम्मान

हिन्दी के प्रख्यात आलोचक **डॉ० नामवर सिंह** को '**परम्परा विशिष्ट सम्मान**' से नवाजा जाएगा। राजधानी की प्रतिष्ठित साहित्यिक संस्था 'परम्परा' ने यह घोषणा की। इससे पूर्व यह सम्मान सर्वश्री विष्णु प्रभाकर, गोपालदास नीरज, जावेद अख्तर तथा गुलजार आदि को मिल चुका है।

सम्मान में 51 हजार रुपये की राशि तथा प्रशस्तिपत्र शामिल है।

रामकिंकर सम्मान तीन व्यक्तियों को

अयोध्या। रामकथा के गूढ़ रहस्यों के व्याख्याता युगतुलसी पण्डित रामकिंकर उपाध्याय की पुण्यस्मृति में रामायणम् आश्रम की ओर से न्याय, शिक्षा व पत्रकारिता में जुड़ी देश की तीन प्रमुख हस्तियों को पुरस्कृत किया गया। युगतुलसी की उत्तराधिकारी सुश्री मंदाकिनी रामकिंकर ने उच्चतम न्यायालय के पूर्व मुख्य न्यायाधीश **आर.सी. लाहोटी**, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति **डॉ० पंजाब सिंह** तथा सनातनी पंचांग, काशी के सम्पादक ज्योतिषाचार्य **अतुल टण्डन** को प्रशस्ति-पत्र, अंगवस्त्रम तथा 11-11 हजार की नकद धनराशि देकर सम्मानित किया।

इस अवसर पर न्यायमूर्ति श्री लाहोटी ने कहा कि जीवन के 67 वर्षों में मिले पुरस्कारों में रामकिंकर पुरस्कार सबसे बड़ा है जिसे पाकर वे अभिभूत हैं। डॉ० पंजाब सिंह ने कहा कि पण्डित रामकिंकर उपाध्याय के नाम से बीएचयू में एक शोध संस्थान खोलने का प्रस्ताव भेजा जा चुका है। संस्थान में युगतुलसी के साहित्य पर शोध होगा। उन्होंने कहा कि रामकिंकर महाराज के साहित्य की गहराई अद्वितीय है।

रुश्दी को बेस्ट आफ द बुकर पुरस्कार

लंदन। भारत में जन्मे लेखक **सलमान रुश्दी** की लोकप्रिय किताब 'मिडनाइट चिल्ड्रेन' को **बेस्ट आफ द बुकर पुरस्कार** से नवाजा गया है। उनकी इस पुस्तक ने छह लेखकों की किताबों को पछाड़ कर यह प्रतिष्ठित पुरस्कार हासिल किया। आठ जुलाई को दोपहर में बंद हुए मतदान में 7801 लोगों ने (आनलाइन और एसएमएस के जरिये) बेस्ट आफ द बुकर पुरस्कार के लिए अन्तिम रूप से चयनित छह पुस्तकों की सूची पर अपनी राय जाहिर की। आधे मतदाताओं की उम्र 25 से 34 वर्ष के बीच है। यह इस बात का प्रतिबिम्ब है कि इस उम्र के पाठकों में स्तरीय साहित्य के प्रति रुचि बढ़ रही है। साउथ बैंक सेंटर में आयोजित समारोह में उनके बेटों जफर और मिलन ने ट्राफी ग्रहण की। रुश्दी की पुस्तक के अलावा चयनित सूची में पैट पारकर की 'द घोस्ट रोड', पीटर कैरे की 'आस्कर एण्ड लुसिंडा', जे०एम० कोएटजी की 'डिसग्रेस', जेजी फारेल की 'द सीज आफ कृष्णापुर' और नादी गोर्डीमर की 'द कंजरवेशनिस्ट' शामिल थी।

डॉ० अमरसिंह वधान सम्मानित

हिमाचल प्रदेश सिरमौर कला संगम बायरी द्वारा प्रसिद्ध साहित्यकार **डॉ० अमरसिंह वधान** को उनकी साहित्यिक उपलब्धियों के लिए '**डॉ० यशवंत सिंह परमार**' पुरस्कार से शॉल, स्मृति चिह्न, पदक एवं प्रशस्तिपत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया।

शिक्षकों को सरस्वती पुरस्कार

उत्तर प्रदेश सरकार उच्च शिक्षा में पठन-पाठन और शोध कार्यों में बढ़िया काम करनेवाले अध्यापकों को सरस्वती पुरस्कार से सम्मानित करेगी। यह पुरस्कार इसी सत्र में शुरू किया जा रहा है। इस पुरस्कार के तहत एक-एक लाख रुपया तीन अध्यापकों को दिया जाएगा जबकि पचास-पचास हजार रुपये छह शिक्षकों को उत्कृष्ट शिक्षक पुरस्कार के रूप में दिए जाएँगे।

नवजोत सिंह सिद्धू को हिन्दी रत्न सम्मान

जाने-माने क्रिकेटर और कमेंटेटर **नवजोत सिंह सिद्धू** को एक अगस्त को राजर्षि पुरुषोत्तम दास टण्डन की जयन्ती पर हिन्दी का देश-विदेश में प्रचार-प्रसार करने के लिए 11वें '**हिन्दी रत्न सम्मान**' से सम्मानित किया जाएगा।

सिद्धू ने पंजाबीभाषी होते हुए भी अपनी मुहावरेदार तथा काव्यात्मक टकसाली हिन्दी का देश-विदेश में खूब प्रचार-प्रसार किया। यह पुरस्कार ऐसे व्यक्ति को दिया जाता है जो हिन्दीभाषी नहीं हो और उसने हिन्दी का प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से प्रचार-प्रसार किया हो। सम्मान के रूप में 31 हजार रुपये की चाँदी की सरस्वती की प्रतिमा व प्रशस्ति पत्र दिया जाता है।

कवि व्योमेश को अंकुर मिश्र सम्मान

वाराणसी के युवा कवि **व्योमेश शुक्ल** को श्रेष्ठ कविताओं के लिए पाँचवें **अंकुर मिश्र सम्मान** हेतु प्रो० नामवर सिंह, विश्वनाथ त्रिपाठी, विष्णु खरे और मंगलेश डबराल की निर्णायक समिति ने सर्वसम्मति से चयन किया। यह पुरस्कार 30 वर्ष से कम उम्र के हिन्दी कवि को उसकी कविताओं के लिए युवा रंगकर्मी अंकुर मिश्र की याद में उनके जन्मदिन 13 जुलाई को दिल्ली के राजेन्द्र भवन सभागार में दिया गया।

जयशंकर प्रसाद नामित पुरस्कार कवि सुशील सरित को

आगरा के बहुचर्चित पत्रकार एवं साहित्यकार **श्री सुशील सरित** को उनके खण्डकाव्य 'अन्तरद्वंद्व' पर उ०प्र० हिन्दी संस्थान द्वारा जयशंकर प्रसाद नामित पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया। पुरस्कारस्वरूप बीस हजार रुपये एवं प्रमाणपत्र मंत्री उ०प्र० नकुल दुबे द्वारा प्रदान किया गया।

डॉ० हरिप्रसाद दुबे को सारस्वत सम्मान

साहित्यिक संस्था हिन्दी सभा, सीतापुर के तत्वावधान में आयोजित कबीर जयन्ती समारोह में **डॉ० हरिप्रसाद दुबे** को **सारस्वत सम्मान** से अलंकृत किया गया। डॉ० गणेशदत्त सारस्वत ने डॉ० दुबे को अंगवस्त्रम्, प्रशस्तिपत्र, सम्मान राशि एवं गीता सन्देश देते श्रीकृष्ण का प्रतीक चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया।

कलमकार सभा द्वारा डॉ० महेन्द्र 'मधुकर' सम्मानित

गाजियाबाद। सुप्रसिद्ध साहित्य-साधक डॉ० हरीश शर्मा के जन्म-दिवस पर गाजियाबाद की अग्रणी साहित्यिक संस्था कलमकार सभा ने अपने तृतीय वार्षिकोत्सव के अवसर पर अन्तरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त हिन्दी साहित्यकार डॉ० महेन्द्र 'मधुकर' का अभिनन्दन किया तथा उनको साहित्य-साधक डॉ० हरीश शर्मा स्मृति सम्मान 2008 प्रदान किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता विख्यात लेखक और प्रेमचंद साहित्य के मर्मज्ञ विद्वान डॉ० कमल किशोर गोयनका ने की।

इस अवसर पर 'कलमकार सभा' से जुड़े लेखकों डॉ० सुरेश 'निर्मल' की पुस्तक 'मेरठ बिसरत नाहीं' (निबंध) डॉ० हरीश शर्मा की 'शतरंज के खिलाड़ी : एक गणितीय आकलन' (समीक्षा), आचार्य मुनीश त्यागी का एकांकी-संग्रह 'हाय री मँहगाई', उमा श्री का उपन्यास 'शुचिता', कमलकिशोर गोयनका द्वारा सम्पादित कोश प्रेमचंद पत्रकोश तथा 'कमलकार-2 (वार्षिकी-2008)' का लोकार्पण भी किया।

व्यंग्यकार आलोक पुराणिक को 'जगन्नाथ राय शर्मा स्मृति सम्मान'

जमशेदपुर। 'विदूषक' पत्रिका द्वारा आयोजित समारोह में युवा व्यंग्यकार **आलोक पुराणिक** को '**जगन्नाथ राय शर्मा स्मृति सम्मान**' से सम्मानित किया गया। सम्मान 'हिन्दुस्तान' (रांची) के स्थानीय समाचारपत्र सम्पादक हरिनारायण सिंह ने दिया। इस अवसर पर 'समकालीन परिदृश्य और व्यंग्य लेखन' विषय पर गोष्ठी का भी आयोजन किया गया।

पत्रकार को गेराल्ड लोएब पुरस्कार

बिहार के दरभंगा-निवासी **संजय झा** को इस साल का प्रतिष्ठित **गेराल्ड लोएब पुरस्कार** मिला है। संजय यह सम्मान पानेवाले पहले भारतीय पत्रकार हैं। संजय को यह पुरस्कार उनके तीन विदेशी सहयोगियों के साथ 'टेलीविजन डेली' कैटिगरी में 'इंडियाज प्रामिस' नाम के कार्यक्रम के लिए मिला है। कार्यक्रम अमेरिकी न्यूज नेटवर्क पीबीएस के लिए तैयार किया गया था। गेराल्ड लोएब पुरस्कार आर्थिक पत्रकारिता में उल्लेखनीय योगदान के लिए दिया जाता है।

'पारिजात' द्वारा बुद्धिनाथ मिश्र सम्मानित

कोलकाता की सांस्कृतिक संस्था 'पारिजात इंस्टीट्यूट ऑफ कल्चर' द्वारा 28 जून को कवि-साहित्यकार **डॉ० बुद्धिनाथ मिश्र** को पगड़ी और अंगवस्त्र तथा बांग्ला में रजत सम्मानपत्र देकर सम्मानित किया गया।

पत्रकार निरुपमा सुब्रमनियन को 'प्रेम भाटिया अवार्ड'

'हिन्दू' की पाकिस्तान स्थित संवाददाता **निरुपमा सुब्रमनियन** को उत्कृष्ट राजनीति रिपोर्टिंग के लिए वर्ष 2008 का प्रतिष्ठित **प्रेम भाटिया** अवार्ड प्रदान किया गया है। पर्यावरण रिपोर्टिंग का पुरस्कार बेंगलूरु की फ्री लांस पत्रकार **केया आचार्य** को दिया गया है। सुश्री निरुपमा सुब्रमनियन ने बेनजीर भुट्टो की हत्या, वकीलों का आन्दोलन, संसदीय चुनाव और पाकिस्तान में लोकतांत्रिक सरकार की बहाली आदि महत्त्वपूर्ण घटनाचक्र का जिस प्रखरता और समग्रता से कवरेज किया, उसे निर्णायक समिति ने श्रेष्ठ पाया।

एस. कल्याणरमण को 'डॉ० हेडगेवार प्रज्ञा सम्मान'

8 जून को कोलकाता की सुप्रसिद्ध सामाजिक संस्था श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय द्वारा प्रवर्तित 19वाँ '**डॉ० हेडगेवार प्रज्ञा सम्मान**' भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता के अनन्य ध्वजवाहक, सरस्वती नदी शोधक, रामसेतु रक्षा मंच के अध्यक्ष एवं बहुभाषाविद् **डॉ० एस० कल्याणरमण** को स्थानीय कलामंदिर प्रेक्षागृह में एक विशेष समारोह में वरिष्ठ चिंतक एवं पूर्व केन्द्रीय मानव-संसाधन विकास मंत्री डॉ० मुरली मनोहर जोशी द्वारा प्रदान किया गया। सम्मान-स्वरूप इक्यावन हजार रुपये की राशि एवं मानपत्र भेंट किया गया।

डॉ० ओंकारलाल शर्मा 'प्रमद' 'साहित्यरत्न' सम्मान से अलंकृत

वयोवृद्ध कवि एवं ज्योतिषाचार्य **डॉ० ओंकारलाल शर्मा 'प्रमद'** को सिरुगुप्पा, बल्लारी (कर्नाटक) में सम्पादक श्री जयसिंह अलवरी द्वारा आयोजित सम्मान समारोह में 'साहित्यरत्न' सम्मान से अलंकृत किया गया।

सम्मानित हुए पुष्पेंद्र पाल सिंह

माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय, भोपाल में पत्रकारिता विभाग के अध्यक्ष श्री पुष्पेंद्रपाल सिंह को पिछले दिनों जालंधर में आयोजित एक समारोह में 'पत्रकारिता विशेष अकादमी सम्मान' प्रदान किया गया। उन्हें यह सम्मान पंजाब सरकार के मंत्री श्री मनोरंजन पालिया ने दिया। श्री सिंह को यह सम्मान पंजाब कला साहित्य अकादमी ने वर्ष 2007 के लिए प्रदान किया। इसके अलावा हाल में ही श्री सिंह को ठाकुर वेदराम प्रिण्ट मीडिया एवं पत्रकारिता पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया है। श्री सिंह मीडिया सम्बन्धी विषयों पर लम्बे समय से पत्र-पत्रिकाओं में लिखते आ रहे हैं। वे पत्रकारिता के शिक्षण-प्रशिक्षण में गहरी रुचि रखने के साथ-साथ कई संगठनों से भी जुड़े हैं।

सुरेश कुमार शुक्ल 'संदेश' पुरस्कृत

युवा साहित्यकार **सुरेश कुमार शुक्ल 'संदेश'** को उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ द्वारा उनकी कृति 'धर्म विजय' (खण्ड काव्य) के लिए वर्ष 2004 का '**आनन्दमिश्र सर्जना पुरस्कार**' प्रदान किया गया है। जबलपुर म०प्र० की साहित्यिक संस्था 'अभियान' के द्वारा 'संदेश' के दोहा संग्रह 'सपनों के प्रासाद' के लिए '**स्वातंत्र्य वीर जगन्नाथ प्रसाद लीला देवी स्मृति हिन्दी भूषण सम्मान**' से अलंकृत किया गया।

पत्रकार दिनेश दुबे सम्मानित

दैनिक 'हिन्दुस्तान' के लखनऊ संस्करण से जुड़े पत्रकार **श्री दिनेश दुबे** को परिणामकेन्द्रित पत्रकारिता के लिए पिछले दिनों 'बस्ती रत्न' सम्मान दिया गया। निराला साहित्य एवं संस्कृति संस्थान द्वारा उन्हें यह सम्मान प्रदान किया गया।

उदयन शर्मा स्मृति पुरस्कारों की घोषणा

'राजस्थान पत्रिका' के सीकर स्थित सीनियर रिपोर्टर सिकन्दर पारिख और 'मलयाला मनोरमा' त्रिचूर के सीनियर फोटोग्राफर अरुण श्रीधर को वर्ष 2007 के उदय शर्मा स्मृति पत्रकारिता अवार्ड से नवाजा जाएगा। पुरस्कार के तहत 21 हजार रुपए की धनराशि, प्रमाणपत्र और स्मृति-चिह्न प्रदान किया जाएगा।

वर्तमान साहित्य-कमलेश्वर
कहानी पुरस्कार - 2008

वर्तमान साहित्य-कमलेश्वर कहानी पुरस्कार-2008 के लिए मौलिक, अप्रकाशित कहानियाँ आमंत्रित हैं। पुरस्कार राशि रु० 11,000.00 है, जो कमलेश्वरजी के परिवार ने इस प्रयोजन हेतु 'वर्तमान साहित्य' को प्रदान की है। कहानियाँ साफ टाइप की हुई हों तथा तीन प्रतियों में हों। कहानी भेजने की अन्तिम तिथि 30 सितम्बर, 2008 है। लिफाफे पर 'वर्तमान साहित्य-कमलेश्वर कहानी पुरस्कार' अवश्य लिखें।

कहानियों का चयन निर्णायक-मण्डल द्वारा किया जायेगा। चयनित कहानी पर पुरस्कार जनवरी, 2009 में प्रदान किया जाएगा।

कहानियाँ सम्पादक, वर्तमान साहित्य को निम्नलिखित पते पर भेजें।

सम्पादक, वर्तमान साहित्य
28-एम०आई०जी०, अवन्तिका-1
रामघाट रोड, अलीगढ़

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

हिन्दी के श्रेष्ठ कवि तथा लेखक/कृतियाँ व समीक्षा

● कबीर

■ *डॉ० जयदेव सिंह तथा डॉ० वासुदेव सिंह*

कबीर-वाङ्मय (पाठभेद, टीका तथा समीक्षा सहित)
प्रथम खण्ड : **रमैनी** 80
द्वितीय खण्ड : **सबद** 300
तृतीय खण्ड : **साखी** 250
कबीर वाणी पीयूष 50
कबीर-साखी-सुधा 10
भये कबीर कबीर *डॉ० शुकदेव सिंह* 250
कबीर और अखा : तुलनात्मक अध्ययन
डॉ० रामनाथ घूरेलाल शर्मा 80
कबीर और भारतीय संत साहित्य
डॉ० रामचन्द्र तिवारी 180
संत कबीर और भगताही पंथ *डॉ० शुकदेव सिंह* 100
संतो राह दुओ हम दीठा (कबीर)
सम्पा० : *डॉ० भगवानदेव पाण्डेय* 150
कबीर बीजक का भाषाशास्त्रीय अध्ययन
डॉ० शुकदेव सिंह 80

● भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

भारत-दुर्दशा (नाटक) 12
श्रीचन्द्रावली नाटिका (नाटक) 16
अँधेर नगरी (नाटक) 12
भारतेन्दु हरिश्चन्द्र : एक व्यक्तित्व चित्र
ज्ञानचंद जैन 190
भारतेन्दु के नाट्य शब्द *डॉ० पूर्णिमा सत्यदेव* 100

● आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

त्रिवेणी (समीक्षात्मक निबन्ध)
सम्पा० : *डॉ० रामचन्द्र तिवारी* 35
चिन्तामणि (निबन्ध)
सम्पा० : *डॉ० रामचन्द्र तिवारी* 40
भ्रमरगीत सार (काव्य) 40
आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (संशोधित परिवर्धित संस्क०) *डॉ० रामचन्द्र तिवारी* 50
आचार्य रामचन्द्र शुक्ल और समकालीन आलोचक *डॉ० रामचन्द्र तिवारी* 60
आचार्य रामचन्द्र शुक्ल आलोचना कोश
डॉ० रामचन्द्र तिवारी 50

● जयशंकर प्रसाद

कामायनी (काव्य) 20
लहर (कविता) 15
प्रसाद तथा 'आँसू' [मूल, टीका तथा समीक्षा] 40
ध्रुवस्वामिनी [मूल तथा समीक्षा] (नाटक) 20
चन्द्रगुप्त (नाटक) 25
स्कन्दगुप्त (नाटक) 20
अजातशत्रु (नाटक) 16
अंतरंग संस्मरणों में जयशंकर 'प्रसाद'
सम्पा० : *पुरुषोत्तमदास मोदी* 150
प्रसाद की चतुर्दशपदियाँ *डॉ० किशोरीलाल गुप्त* 50
प्रसाद स्मृति वातायन
सम्पा० : *डॉ० विद्यानिवास मिश्र* 150
प्रसाद चिंतन★ *डॉ० विमला गुप्ता* 100
कामायनी विमर्श★ *भगीरथ दीक्षित* 100
जयशंकर प्रसाद और लक्ष्मीनारायण मिश्र के नाटकों का तुलनात्मक अध्ययन
डॉ० शशिशेखर नैथानी 100

● प्रेमचंद

'हंस' आत्मकथा अंक (1932 ई०) (पुनर्मुद्रित)
सम्पादक : प्रेमचंद 180
'हंस' काशी अंक (1933 ई०) (पुनर्मुद्रित)
सम्पादक : प्रेमचंद (यन्त्रस्थ)
गोदान (उपन्यास) 75
गबन [सम्पूर्ण] (उपन्यास) 45
संक्षिप्त गबन (उपन्यास) 30
कर्मभूमि (उपन्यास) 40
निर्मला (उपन्यास) 25
मानसरोवर (भाग 1) (कहानी) 50
प्रेमचंद की प्रतिनिधि कहानियाँ (कहानी)
सम्पा० : *प्रो० कुमार पंकज* 60

● अज्ञेय

अज्ञेय : एक मनोवैज्ञानिक अध्ययन
डॉ० ज्वालाप्रसाद खेतान 40
अज्ञेय : शिखर अनुभूतियाँ " 80
अज्ञेय की गद्य-शैली *डॉ० सावित्री मिश्र* 50
अज्ञेय और 'शेखर : एक जीवनी'
डॉ० अनन्तकीर्ति तिवारी 40

● कुबेरनाथ राय

वाणी का क्षीरसागर (ललित निबन्ध) 120
किरात नदी में चन्द्र-मधु (ललित निबन्ध) 80
पत्र मणिपुतुल के नाम (ललित निबन्ध) 80
कंथा-मणि (कविता) 100

● विवेकी राय

पुरुष-पुराण (उपन्यास) 90
बबूल (उपन्यास) 40
लोकऋण (उपन्यास) 80
बनगंगी मुक्त है (उपन्यास) 50
कालातीत (कहानी) 100
गूँगा जहाज (कहानी) 120
जगत तपोवन सो कियो (ललित निबन्ध) 100
मनबोध मास्टर की डायरी
(संस्मरण/रेखाचित्र/रिपोर्ताज) 200
विवेकी राय और उनका सृजन संसार
सम्पा० : *डॉ० मान्धाता राय* 150
अक्षर बीज की हरियाली (विवेकी राय रचना समीक्षा)
डॉ० वेदप्रकाश अमिताभ 180
टूटते हुए गाँव का दस्तावेज (लोकऋण : बनगंगी मुक्त है) सम्पा० : *डॉ० सर्वजीत राय* 40
सृजन यज्ञ जारी है★ (विवेकी राय : साहित्य समीक्षा)
सम्पा० : *डॉ० अनिलकुमार 'आंजनेय'* 100

● प्रेरक सूक्तियाँ

मानस सूक्ति सुधा *डॉ० भगवानदेव पाण्डेय* 80
दीप का लक्ष्य प्रकाश *सूर्यकुमार शुक्ल* 150
बृहत श्लोक संग्रह (सर्वधर्म सार)
प्रो० कल्याणमल लोढ़ा 200

● संस्मरण, जीवनचरित, यात्रा, डायरी

अब तो बात फैल गई *कान्तिकुमार जैन* 250
महाराष्ट्र के कर्मयोगी *ना०वि० सप्रे* 80
कवि बनारसीदास की आत्मकथा *ज्ञानचन्द जैन* 80
तुंगभद्रा से गंगातट : हरिहर से विश्वनाथ
के० चन्द्रमौलि 180
सारस्वत बोध के प्रतिमान : आचार्य रामचन्द्र तिवारी
डॉ० वेदप्रकाश पाण्डेय व डॉ० अमरनाथ 250
स्मृति शेष : देवेश का दस्तावेज
डॉ० इन्द्रदेव सिंह 200
वटवृक्ष (अमृतलाल नागर) की छाया में
कुमुद नागर 190
लाई हयात आए... *डॉ० लक्ष्मीधर मालवीय* 280
अभियान और यात्राएँ सम्पा० : *विष्णु प्रभाकर* 20
क्रान्ति के वे दिन★ *काशीराम* 30
सरदार माने सरदार *डॉ० गुणवन्त शाह* 25
बेतवा की निजवार्ता *हरगोविन्द गुप्त* 100
जो छोड़ गये : वे भी रहेंगे *शंकरदयाल सिंह* 40
मेरा बचपन : मेरा गाँव, मेरा संघर्ष : मेरा कलकत्ता
रामेश्वर टाँटिया 150
वे दिन वे लोग *डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त* 60
बढ़ते कदम-बदलते आयाम
डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त 250
चित्र और चरित्र *विश्वनाथ मुखर्जी* 40
मुझे विश्वास है *विमल मित्र* 60
मेरे पुलिस सेवा के वे दिन *बिश्वनाथ लाहिरी* 80
हारी हुई लड़ाई का वारिस (स्व० ठाकुरप्रसाद सिंह) *उमेशप्रसाद सिंह* 100

मुगल बादशाहों की कहानी : उनकी जबानी
अयोध्याप्रसाद गोयलीय 40

हिन्दी के श्रेष्ठ रेखाचित्र
सम्पा० : *डॉ० चौथीराम यादव* 25

संस्मरण और रेखाचित्र सम्पा० : *उर्मिला मोदी* 30

रेखाएँ और रेखाएँ सम्पा० : *सुधाकर पाण्डेय तथा डॉ० विश्वनाथप्रसाद तिवारी* 40

● उपन्यास

एक थी रुचि *बच्चन सिंह* 150

तथागत (आत्मकथात्मक उपन्यास)
डॉ० बाबूराम त्रिपाठी 100

चौदह फेरे *शिवानी* 100

मंगला *अनन्तगोपाल शेवड़े* 30

खबर की औकात *बच्चन सिंह* 300

सूर्यवंश का प्रताप *डॉ० राजेन्द्रमोहन भटनागर* 180

हस्तिनापुर का शूद्र महामात्य *डॉ० युगेश्वर* 140

कैबरे डान्सर *आबिद सुरती* 200

पांचाली (नाथवती अनाथवत्) *डॉ० बच्चन सिंह* 125

ननकी *बच्चन सिंह* (पत्रकार) 60

तरुण संन्यासी (विवेकानंद) *राजेन्द्रमोहन भटनागर* 60

ललिता (तमिल उपन्यास का अनुवाद) *अखिलन* 25

नया जीवन *अखिलन* 60

सागरी पताका *राधामोहन उपाध्याय* 250

मैत्रेयी (औपनिषदिक उपन्यास) *प्रभुदयाल मिश्र* 120

मरने के बाद *परिपूर्णानन्द वर्म्मा* 30

नसीब अपना-अपना *विमल मित्र* 40

महाकवि कालिदास की आत्मकथा
डॉ० जयशंकर द्विवेदी 80

कामरूप *लालजी सिंह* 40

गाँधी की काँवर *हरीन्द्र दवे* 40

बहुत देर कर दी *अलीम मसरूर* 60

एक कैकेयी : पाँच मन्थरा *उर्वशी शर्मा* 30

बज उठी पायलिया (इळंगोवडिहळ् रचित शिलप्पदिकारम्) *रा० वीलिनाथन्* 50

आओ लौट चलें *न्यायमूर्ति गणेशदत्त दूबे* 40

अरे यह कैसा मन ? *शान्तिकुमारी वाजपेयी* 50

● कहानी

नामालूम रिश्तों का दंश *डॉ० नीहारिका* 120

सिंहासन बत्तीसी *डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव* 120

वेताल पचीसी *अनु० सं० डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव* 80

आखिरी हँसी *निशांतकेतु* 30

भुवनेश्वर की रचनाएँ सं. : *डॉ० शुकदेव सिंह* 30

लाल हवेली *शिवानी* 60

सुबह हो गयी *वीरेन्द्रप्रसाद मिश्र* 30

दिल का पौधा *अलीम मसरूर* 35

तीसरा यात्री *डॉ० कुसुम चतुर्वेदी* 80

आँगन में उगी पौध *डॉ० कुसुम चतुर्वेदी* 140

हारूँगी नहीं *द्विजेन्द्रनाथ मिश्र 'निर्गुण'* 20

इतिहास के निर्झर *रामेश्वर टाँटिया* 30

मुट्ठी में बन्द तूफान *अनिन्दिता* 95

अनुत्तरित प्रश्न *अनिता पण्डा* 70

और आसमान झुक गया *साधना राकेश* 120

● कहानी-संग्रह (मौलिक कृतियाँ)

हिन्दी की श्रेष्ठ कहानियाँ
सं० : *पुरुषोत्तमदास मोदी* 250

आधुनिक प्रतिनिधि कहानियाँ
सं० : *डॉ० मुनीन्द्र तिवारी* 45

कहानियाँ (कई कहानियाँ)
सं० : *डॉ० शुकदेव सिंह* 30

आधुनिक कहानियाँ सं० : *डॉ० सुरेन्द्र प्रताप* 25

प्रतिनिधि कहानियाँ सं० : *डॉ० बच्चन सिंह* 45

आधुनिक कहानी-संग्रह
सं० : *केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा* 40

कृती कथाएँ सं० : *डॉ० शुकदेव सिंह तथा डॉ० विजयबहादुर सिंह* 25

● हास्य-व्यंग्य

स्वर्ग का उल्लू *ना० वि० सप्रे* 100

साहित्यकारों के हास्य-व्यंग्य
डॉ० भवानीलाल भारतीय 100

आज भी वही बनारस है (सचित्र)
विश्वंभरनाथ त्रिपाठी 'बड़े गुरू' 150

कलागुरु केदारशर्मा के व्यंग्य-चित्रों में काशी
डॉ० धीरेन्द्रनाथ सिंह 300

धूर्त्ताख्यान *आचार्य हरिभद्र सूरि* 40

मुद्रिका रहस्य *शरद जोशी* 60

अन्नपूर्णानन्द रचनावली *अन्नपूर्णानन्द* 150

लालाजी का पर्दा *अशोकजी* 120

एक राजनेता की कुण्डली (राजनीतिक हास्य-व्यंग्य) *एक भारतीय* 70

● साहित्यिक निबन्ध

साहित्यिक निबंध *(संशोधित एवं परिवर्धित चतुर्थ संस्करण)*
डॉ० त्रिभुवन सिंह, डॉ० विजयबहादुर सिंह 500

● ललित निबन्ध

कोकिल बोल रहा *युगेश्वर* 80

भोर का आवाहन *डॉ० विद्यानिवास मिश्र* 20

बिन पानी सब सून *डॉ० वेदप्रकाश पाण्डेय* 90

कहीं दूर जब दिन ढले *डॉ० गुणवन्त शाह* 40

ललित निबन्ध : अवधारणा एवं सृजन★
अष्टभुजा शुक्ल 60

ललित निबन्ध *केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा* 40

● निबन्ध संग्रह (सम्पादित)

अनुत्तरित प्रश्न *अनिता पण्डा* 70

निबन्ध संकलन *डॉ० रामकली सराफ* 40

आधुनिक निबन्ध *डॉ० सुरेन्द्रप्रताप* 20

निबन्ध और निबन्ध *उमाकान्त त्रिपाठी* 20

सात निबन्ध *डॉ० रघुवंश तथा डॉ० परमानन्द श्रीवास्तव* 16

निबन्ध-निचय *डॉ० केशवप्रसाद सिंह तथा डॉ० वासुदेव सिंह* 16

निबन्ध माला *डॉ० रामचन्द्र तिवारी व डॉ० सत्यनारायण मिश्र* 10

निबन्ध-सौरभ *डॉ० श्रीप्रसाद, डॉ० बिसम्भरनाथ* 15

संस्कृति-प्रवाह *प्रो० सोमेश्वर* 20

निबन्धायन *डॉ० नागेन्द्रनाथ उपाध्याय* 15

निबंध निकष *डॉ० रामचन्द्र तिवारी* 50

गद्य-सौरभ *सुमन मोदी* 16

निबंधश्री *अरुणिमा दिलजन* 15

गद्य-गौरव *उर्मिला मोदी* 15

संस्कृति संगम *डॉ० श्रीप्रसाद तथा डॉ० बिसम्भरनाथ* 12

समसामयिक निबन्ध *डॉ० देवव्रत* 20

● नाटक, एकांकी (मौलिक तथा सम्पादित)

घोड़ा पै हौदा, हाथी पर जीन (नाट्यरूपान्तरित कहानियाँ)
डॉ० भानुशंकर मेहता 120

देवयानी : उत्कृष्ट पौराणिक नाटक
डॉ० एन० चन्द्रशेखरन् नायर 20

मांदर बज उठा (रेडियो नाटक संकलन) *अनिन्दिता* 150

शताब्दी पुरुष (नेताजी सुभाषचन्द्र बोस और जवानों पर केन्द्रित सम्पूर्ण नाटक) *राजेन्द्रमोहन भटनागर* 100

महाकवि कालिदास
शिवप्रसाद मिश्र 'रुद्र काशिकेय' 25

पूर्वार्द्ध *डॉ० शिवमूरत सिंह* 25

हास्यार्णव तथा उपालंभ-शतक (कविवर रसरूप)
सम्पा० : *डॉ० बटेकृष्ण* 20

भुवनेश्वर की रचनाएँ सम्पा० : *डॉ० शुकदेव सिंह* 30

छोटे नाटक सम्पा० : *डॉ० शुकदेव सिंह* 22

एकांकी कुञ्ज सम्पा० : *डॉ० गोपीनाथ तिवारी व डॉ० देवर्षि सनाढ्य* 25

गंगाद्वार *लक्ष्मीनारायण मिश्र* 40

● काव्य-ग्रन्थ

जौहर *श्यामनारायण पाण्डेय* 80

परशुराम (खण्ड-काव्य) *श्यामनारायण पाण्डेय* 90

पद्मावत (जायसी) स्तुति, सिंहल द्वीप वर्णन, मानसरोदक तथा नागमती सन्देश खण्ड
डॉ० सच्चिदानन्द राय व डॉ० मान्धाता राय 36

मलिक मुहम्मद जायसी और पद्मावत :
[नखशिख एवं नागमती वियोग खण्ड]
डॉ० मोहनलाल तिवारी 40

पद्मावती समय (पृथ्वीराज रासो)
सम्पा० : *डॉ० मोहनलाल तिवारी* 25

कन्हावत (जायसी कृत) *डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त* 80

मिरगावती (कुतुबन कृत)
सम्पा० : *डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त* 150

वेलि क्रिसन रुकमणी री
सम्पा० : *डॉ० आनन्दप्रकाश दीक्षित* 80
कीर्तिलता और विद्यापति का युग
डॉ० अवधेश प्रधान 40
नेमिकुंजर कृत गजसिंह कुमार प्रबन्ध
डॉ० मदनगोपाल गुप्त 10
भक्त भावन (ग्वालकवि कृत) *डॉ० प्रेमलता बाफना* 80
मध्ययुगीन काव्य प्रतिभाएँ
डॉ० रामकली सराफ 120
संत रज्जब *डॉ० नन्दकिशोर पाण्डेय* 180
महाराष्ट्र के प्रिय संत और उनकी हिन्दी वाणी
डॉ० विनयमोहन शर्मा 10

● कविता-संग्रह (मौलिक कृतियाँ)

धूमिल की कविताएँ सं. : *डॉ० शुकदेव सिंह* 80
कंथा-मणि *कुबेरनाथ राय* 100
माताभूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः *डॉ० शम्भुनाथ सिंह* 50
इंद्रधनुष *अनिता निहालानी* 100
तुम शिव नहीं हो! *आभा गुप्ता ठाकुर* 50
मुट्ठी भर भूख *डॉ० मुनि देवेन्द्र सिंह* 120
मन का हिरना *गिरिधर करुण* 50
बात क्या है ? *गिरिधर करुण* 50
इतिहास का दर्द *डॉ० श्यामकिशोर मिश्र* 90
एक पाँव पर गाँव *डॉ० सत्यनारायण त्रिपाठी* 100
हादसों के शहर में (गज़ल) *डॉ० अर्चना श्रीवास्तव* 40
आषाढ़स्य प्रथम दिने *नारायण सुमंत* 80
एक शब्द उठाता हूँ *अनन्त मिश्र* 180
वेद की कविता *प्रभुदयाल मिश्र* 120
दीप का लक्ष्य प्रकाश *सूर्यकुमार शुक्ल* 150
असीम कुछ भी नहीं *डॉ० सदानन्द शाही* 100
हम अलख के स्वर अकिंचन *अनिल मिश्र* 90
कालिदास : मेघदूत (काव्यानुवाद)
डॉ० श्यामलाकान्त वर्मा 20
मत कहो दास हूँ *डॉ० दामोदर पाण्डेय* 100
मोक्षदायिनी काशी में गंगा के तट पर
केकी एन० दारूवाला 40
फूलों की घाटी *गिरिराज शाह* 50
गूँजने दो उसे *बच्चन सिंह* 40
अनुपूर्वा *रामेश्वर शुक्ल 'अंचल'* 40
भाव-तरंग *मधु वार्ष्णेय* 200
अविरल रश्मि *रश्मि रेखा* 150

● काव्य-संकलन (सम्पादित)

आधुनिक भारतीय कविता *डॉ० अवधेशनारायण मिश्र, डॉ० नन्दकिशोर पाण्डेय* 80
काव्य भारती *अनुरागकुमार* 10
काव्य प्रवाह *कन्हैया सिंह* 12
राष्ट्रप्रेम के गीत *पं० कृपाशंकर शुक्ल* 100
राष्ट्रीय-सांस्कृतिक काव्य-सुधा
डॉ० शिवकुमार मिश्र 16
आधुनिक हिन्दी काव्य *डॉ० सत्यनारायण सिंह* 30
आधुनिक काव्य विविधा
डॉ० शम्भुनाथ त्रिपाठी 25
अज्ञेय और मुक्तिबोध की प्रतिनिधि कविताएँ
डॉ० शम्भुनाथ त्रिपाठी 30
छायावादोत्तर प्रतिनिधि कवि और उनकी कविताएँ *डॉ० शम्भुनाथ त्रिपाठी* 50
आधुनिक काव्यधारा *डॉ० विजयपाल सिंह* 36
छायातप *डॉ० सत्यनारायण त्रिपाठी तथा डॉ० रामदेव शुक्ल* 20
छायापथ *डॉ० जगदीशप्रसाद श्रीवास्तव तथा डॉ० रामदेव शुक्ल* 20
छायावाद के प्रतिनिधि कवि
डॉ० विजयपाल सिंह 30
काव्य-सौरभ सम्पा० : *पुरुषोत्तमदास मोदी* 25
पद्य परिमल सम्पा० : *पुरुषोत्तमदास मोदी* 10
समकालीन काव्य *डॉ० कन्हैया सिंह तथा डॉ० सुरेशचन्द्र पाण्डेय* 20
समकालीन कविता *डॉ० मालती तिवारी* 15
दिशान्तर *डॉ० परमानन्द श्रीवास्तव तथा डॉ० विश्वनाथप्रसाद तिवारी* 25
अस्मिता *डॉ० जगदीशप्रसाद श्रीवास्तव तथा डॉ० जितेन्द्रनाथ पाठक* 32
अभिव्यक्ति *डॉ० परमानन्द श्रीवास्तव* 15
रीति-रस *डॉ० शुकदेव सिंह* 15
समकालीन हिन्दी कविता : तीन हस्ताक्षर (मुक्तिबोध, धूमिल, देवताले)
डॉ० शिवशंकर पाण्डेय 20
मध्यकालीन काव्य-संग्रह
केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा 45
आधुनिक काव्य-संग्रह (संशोधित परिवर्धित संस्करण) *केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा* 140
रीति काव्यधारा *डॉ० रामचन्द्र तिवारी तथा डॉ० रामफेर त्रिपाठी* 50
केशव-काव्य-कौमुदी *डॉ० विजयपाल सिंह* 10
पृथ्वीराज रासो-सार *डॉ० कन्हैया सिंह* 15
संक्षिप्त रामचन्द्रिका सं. : *डॉ० रामचन्द्र तिवारी* 20
रामचरितमानस : अयोध्या काण्ड
डॉ० रामचन्द्र तिवारी 40
भूषण मंजूषा सम्पा० : *ब्रजकिशोर मिश्र* 20
सूर-सञ्चयन *उर्मिला मोदी* 30

● सहायक ग्रन्थ

मदुराई कामराज यूनिवर्सिटी, बी०ए०/ बी०एस-सी०, हिन्दी गाइड, प्रथम भाग *प्रथम व द्वितीय प्रश्नपत्र* 40
मदुराई कामराज यूनिवर्सिटी, बी०ए०/ बी०एस-सी०, हिन्दी गाइड, द्वितीय भाग *तृतीय व चतुर्थ प्रश्नपत्र* 80

● बाल, प्रौढ़ तथा नवसाक्षरोपयोगी

■ **प्रेमचंद**
अलग्योझा (कहानी) 16
पंच-परमेश्वर (कहानी) 15
परीक्षा (कहानी) 15
बैर का अंत (कहानी) 15

■ **डॉ० श्रीप्रसाद**
मुनमुन के खिलौने (कहानी) 20
मेरा साथी घोड़ा (कविता) 25
बालगीत (कविता) 20
फूलों के गीत (कविता) 10
ढोल बजा (नाटक) 15
आँगन के फूल (कविता) 25
समय के पंख (कहानी) 25
गुड्डे का जन्मदिन (बच्चों के नौ नाटक) 15

■ **भानुशंकर मेहता**
माँ और शिशु (स्वास्थ्य) 25
स्वास्थ्य का क ख ग (स्वास्थ्य) 15
आबादी की बाढ़ (स्वास्थ्य) 15

■ **विनोदचन्द्र पाण्डेय 'विनोद'**
शिशु गीतिका (बाल-गीत) 10
आओ गाएँ गीत खुशी के (बाल-गीत) 15
चित्रगीत (कविता) 20
गान विज्ञान के (कविता) 15

■ **नरेन्द्र नीरव**
वनवासी भालूचोथवा (कहानी) 12
अनपढ़ प्रजा (कहानी) 15

■ **माताप्रसाद**
वीरांगना झलकारी बाई (नाटक) 16

■ **कलक्टर सिंह केसरी**
हे मातृभूमि (कविता) 25

■ **प्रदीप : नेकी का बदला** (कहानी) 20

■ **डॉ० शोभनाथ लाल**
चलो खेलने चाँद पर (कविता) 20

■ **डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त**
हमारे देश के सिक्के (इतिहास) 25

■ **ज्ञानचन्द्र : लोकविज्ञान** (विज्ञान) 20

■ **डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल**
सुनहले हंस (कहानी) 20

■ **रामवचन सिंह 'आनन्द'**
मेरा घर (कविताएँ) 10

■ **डॉ० रोहिताश्व अस्थाना**
खेलो गाओ, बढ़ते जाओ (कविता) 12

■ **घमंडीलाल अग्रवाल**
राही हैं हम (बालगीत संग्रह) 12

विश्वविद्यालय प्रकाशन की अनोखी प्रस्तुति

हिन्दी कथा-साहित्य की 'प्रेम-परक शैली' के सबसे बड़े कथा-शिल्पी, प्रख्यात कथाकार

द्विजेन्द्रनाथ मिश्र 'निर्गुण' की सम्पूर्ण रचनाओं का अनूठा संग्रह...

निर्गुण रचनावली

(छः खण्डों में)

सम्पादक

एल. उमाशंकर सिंह

मूल्य - सजिल्द : रु० 3000/-मात्र, अजिल्द : रु० 1800/-मात्र

खण्ड-1 : **उपन्यास तथा कहानियाँ,** खण्ड-2 : **कहानियाँ,** खण्ड-3 : **कहानियाँ,** खण्ड-4 : **कहानियाँ,** खण्ड-5 : **कहानियाँ,** खण्ड-6 : **कविताएँ / गीत / लेख / संस्मरण / साक्षात्कार / पत्र / चित्र व परिशिष्ट**

- शुरुआती दौर में निर्गुण की दु:खान्त कहानियों को पढ़कर पाठक अन्दर से तिल-मिलाकर रह जाते थे। नीलकण्ठ तो एक शिव ही थे पर उस आदर्श की ओर उन्मुख होने वालों में निर्गुण अग्रणी हैं। उनकी कहानियाँ कला की दृष्टि से उत्कृष्ट हैं।
—आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
- जो अकिंचनता की सीमा तक शालीन, उदात्त है, जिसका प्यार, स्नेह करुणा में सराबोर है, जिसकी कुण्ठा अपनी निजी है, जो आडम्बरहीन संकोची, प्रदर्शन से दूर और दम्भहीन है उसी का नाम द्विजेन्द्रनाथ मिश्र 'निर्गुण' है।
निर्गुणजी की रचनाएँ पढ़ते समय हमें शरत् और प्रेमचंद की एक साथ याद आती है।
—विष्णु प्रभाकर
- निर्गुणजी पर भारतीय संस्कृति की अमिट छाप है और इतनी गहरी है कि बिखरते-बिखरते भी उन्हें समेट लेती है। उनका लेखन समग्र लेखन बन जाता है। जिसकी हवा ही कुछ और होती है। वे कहीं अति का छोर नहीं छूते हैं, और शिल्प की ऐसी धार आगे कर चलते हैं कि घोर आधुनिकतावादी भी और कुछ नहीं सोच सकता।
—डॉ० विवेकी राय
- जब तक हिन्दी में निर्गुण जी जैसे कहानीकार कहानी लिख रहे हैं, यह नहीं कहा जा सकता कि प्रेमचंद के बाद हिन्दी में उच्चकोटि की कहानी का लिखना बन्द हो गया। इनको हम किसी भी अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के कहानीकार के समक्ष रख सकते हैं। निर्गुण जैसे कलाकार के होते हुए अन्य भाषाओं के कहानीकारों की ओर हमें दौड़ने की क्या जरूरत है?
—रामधारी सिंह 'दिनकर'
- मध्यम वर्ग के दायरे में अत्यन्त सामान्य आदमी को लेकर जिस निर्व्याज ढंग से निर्गुण ने अपनी कहानियों का ताना-बाना बुना है वह अद्वितीय है और निर्गुण की कहानियों का स्थान हिन्दी साहित्य में उसने सुरक्षित कर दिया है। **—डॉ० विद्यानिवास मिश्र**

हिन्दी साहित्य : विशिष्ट पुस्तकें

● व्याकरण तथा भाषा

हिन्दी भाषा, व्याकरण और रचना *डॉ० अर्जुन तिवारी* 150
प्रामाणिक व्याकरण एवं रचना *डॉ० विजयपाल सिंह* 70
हिन्दी व्याकरण की सरल पद्धति *डॉ० बदरीनाथ कपूर* 25
हिन्दी वातायन *डॉ० के०एम० चन्द्रमोहन* 25
अर्थ विज्ञान और व्याकरण दर्शन *डॉ० कपिलदेव द्विवेदी* 400
भाषा-विज्ञान एवं भाषा-शास्त्र *''* 250
व्यावहारिक हिन्दी *पं० रमापति शुक्ल* 15
हिन्दी व्याकरण और रचना *पं० रमापति शुक्ल* 15
लिपि, वर्तनी और भाषा *डॉ० बदरीनाथ कपूर* 20

भाषा विज्ञान (पूर्वांचल वि०वि०,बी०ए०तृतीय वर्ष) *डॉ० कपिलदेव द्विवेदी* 30
भाषाशास्त्र तथा हिन्दी भाषा की रूपरेखा *डॉ० देवेन्द्रकुमार शास्त्री* 100
संस्कृत का भाषाशास्त्रीय अध्ययन *डॉ० भोलाशंकर व्यास* 80
हिन्दी-भाषा, साहित्य और नागरी लिपि *डॉ० कन्हैया सिंह* 40
हिन्दी-भाषा और लिपि का ऐतिहासिक विकास *प्रो० सत्यनारायण त्रिपाठी* 90
कार्यालयीय हिन्दी *डॉ० विजयपाल सिंह* 60
प्रयोजनमूलक हिन्दी : सिद्धान्त और व्यवहार (सरकारी कामकाज में हिन्दी का प्रयोग) (परिवर्धित संस्करण) *रघुनन्दनप्रसाद शर्मा* 180
व्यावहारिक और प्रयोजनमूलक हिन्दी *डॉ० अर्चना श्रीवास्तव* 40
पूर्वी अपभ्रंश भाषा *डॉ० राधाकान्त मिश्र* 80
हिन्दी का सांस्कृतिक परिवेश *डॉ० लालजी सिंह* 50
प्रमुख बिहारी बोलियों का तुलनात्मक अध्ययन *डॉ० त्रिभुवन ओझा* 100
हिन्दी में अनेकार्थता का अनुशीलन *''* 100

● काव्यशास्त्र

काव्यशास्त्र *डॉ० भगीरथ मिश्र* 250
पाश्चात्य काव्यशास्त्र : इतिहास, सिद्धान्त और वाद *डॉ० भगीरथ मिश्र* 150
नया काव्यशास्त्र *डॉ० भगीरथ मिश्र* 80
काव्य रस : चिन्तन और आस्वाद *''* 50
भारतीय तथा पाश्चात्य काव्यशास्त्र *डॉ० अर्चना श्रीवास्तव* 70
भारतीय काव्यशास्त्र की आचार्य-परम्परा *डॉ० राधावल्लभ त्रिपाठी* 180
साहित्य का मूल्याङ्कन *डब्लू. बेसिल वर्सफोल्ड, अनु.डॉ० रामचन्द्र तिवारी* 100

स्मृति-शेष

डॉ० शुकदेव सिंह की जयन्ती

वाराणसी। 24 जुलाई को साहित्यकार डॉ० शुकदेव सिंह की जयन्ती के अवसर पर वक्ताओं ने कहा कि संत परम्परा का मार्ग डॉ० शुकदेव सिंह के साहित्यिक अवदान से होकर गुजरता है। वह कबीर की विचारधारा के संवाहक थे। यह विचार साहित्यकारों ने 'कबीर-विवेक' परिवार द्वारा आयोजित डॉ० शुकदेव सिंह की 75वीं जयन्ती पर व्यक्त किये। प्रो० श्यामसुन्दर शुक्ल ने कहा कि डॉ० शुकदेव सिंह संत साहित्य का अध्ययन करने वाले विरल विद्वान थे। न्यायमूर्ति गणेशदत्त दुबे ने कहा कि शुकदेव अकादमिक दुनियां की बड़ी विभूति थे। पं० श्रीकृष्ण तिवारी ने अनेक स्मरण सुनाते हुए उन्हें कुशल प्राध्यापक और समीक्षक बतलाया। डॉ० उदयप्रताप सिंह ने उन्हें साधक की संज्ञा दी। डॉ० मनोजकुमार सिंह ने कहा कि वह शिष्यों के लिए चिंतनशील रहते थे। कथाकार डॉ० नीरजा माधव ने कहा कि आकाशवाणी, दूरदर्शन और जनसंचार माध्यमों के जरिए उन्होंने संत वाणी को अंतरराष्ट्रीय प्रचार-प्रसार दिया, वह हिन्दी लेखकों में विरल थे। डॉ० मुक्ता ने उन्हें चट्टान की तरह अडिग व्यक्तित्व वाला विद्वान बतलाया। डॉ० वशिष्ठ तिवारी ने प्राचीन और आधुनिक साहित्य पर उनके समान अधिकार के साथ ही उनकी चिंतन-दृष्टि की मौलिकता को रेखांकित किया। श्रीमती कुसुम चतुर्वेदी ने कहा कि उन्होंने दलित चिंतक के रूप में अलग पहचान बनाई। प्रो० श्रीनिवास पाण्डेय ने कहा कि वह गुरु-शिष्य परम्परा के आदर्श प्रतिमान थे।

लल्लुभाई महादेवभाई रबारी का निधन

1 मई 1942 को **लल्लुभाई महादेवभाई रबारी** का जन्म महेसाणा (गुजरात) में हुआ था। गुजरात विद्यापीठ से स्नातक, हिन्दी सेवक विशेष, हिन्दी अनुवाद विशारद तथा गुजरात सरकार से हिन्दी शिक्षक सनद की उपाधि प्राप्त करने के बाद लल्लुभाई ने 1962 से गुजरात हिन्दी विद्यापीठ में हिन्दी प्रचार समिति के संयोजक तथा परीक्षा मंत्री के पद पर और मई 2001 से संयोजन के रूप में विद्यापीठ के क्रियाकलापों में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। आप महाकवि तुलसीदास रचित रामचरित मानस के अतिरिक्त गीता प्रेस गोरखपुर से प्रकाशित अन्य अनेक पुस्तकों का हिन्दी से गुजराती में अनुवाद किया है।

कीर्ति चौधरी स्मरण

नई दिल्ली। 30 जून 2008 को राजेन्द्र भवन में राजेन्द्र प्रसाद अकादमी और 'एकाग्र' से सौजन्य से आयोजित कीर्ति चौधरी स्मृति-संध्या कई मानों में विशिष्ट रही। श्री सुरेश सलिल ने इस संध्या का प्रवर्तन करते हुए उपस्थित कवियों को कीर्ति जी की कविताओं के पाठ के लिए आमंत्रित किया। सर्वश्री कुँवर नारायण, केदार नाथ सिंह, अशोक वाजपेयी, अजित कुमार, शेर जंग गर्ग, अर्चना वर्मा, प्रभा दीक्षित, गिरधर राठी, राजनारायण बिसारिया, भगवान सिंह, पंकज सिंह, विश्वनाथ त्रिपाठी, के०जी० वर्मा, कैलाश वाजपेयी सरीखे विद्वत-जनों की उपस्थिति में कीर्तिजी के अग्रज कवि अजित कुमार ने सबसे पहले 'बरसते हैं मेघ झर झर' कविता का पाठ किया। सभा के अंत में वरिष्ठ कवि कुँवर नारायणजी ने कीर्तिजी के साथ अनिवार्यत: जुड़ी ओंकारजी की स्मृति को भी अपने संस्मरणों में साकार कर दिया। तीसरा सप्तक की सहज-सरल कवयित्री के व्यक्तित्व के अनेक पहलुओं का सभी सहृदयों ने मर्मस्पर्शी स्मरण किया।

गणितज्ञ प्रो० त्रिविक्रमपति नहीं रहे

इलाहाबाद। प्रसिद्ध गणितज्ञ व इलाहाबाद विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति **प्रो० त्रिविक्रम पति** का 2 जुलाई को निधन हो गया। वह 79 वर्ष के थे।

आचार्य डॉ० प्रभुदयाल अग्निहोत्री का निधन

28 मार्च 1913 को जन्मे आचार्य **डॉ० प्रभुदयाल अग्निहोत्री** ने अपने सृजनशील जीवन के 95 वर्ष पूर्ण कर 5 जून 2008 को भोपाल में अन्तिम साँस लेकर तेजस्वी मेधा के अध्याय को विराम लगा दिया। वैदिक और संस्कृत साहित्य का यह अध्येता अन्तिम समय में अथर्ववेद के हिन्दी भाष्य के रूप में हिन्दी वाङ्मय को अनमोल निधि सौंप गया। ज्ञानपीठ से प्रकाशित होनेवाले ग्रन्थ के प्रूफ पढ़ने के बाद ही इस मनीषी ने मानो जीवन की साध पूरी कर ली हो। 'अग्निगर्भा' जैसी काव्य रचनाओं के साथ ही दर्शन, निबन्ध, संस्मरण और साहित्यिक आलोचनाओं की 75 पुस्तकों के रचनाकार डॉ० अग्निहोत्री को 'पंतजलि कालीन भारत' ने विशेष ख्याति दिलाई थी।

ओमप्रकाश मेहरा का निधन

16 दिसम्बर 1938 को होशंगाबाद (म०प्र०) के एक गाँव में जन्मे **ओमप्रकाश मेहरा** ने प्रशासन के उच्च पदों पर रहते हुए नैतिक मूल्यों और मानवीय संवेदनशीलता को संरक्षित रखा। हिन्दी साहित्य और भाषा के प्रति अनन्य अनुराग रखनेवाले मेहराजी की कहानियों, कविताओं तथा गजलों में उनकी सहज संवेदनशीलता का परिचय मिलता है। प्रचार से विमुख मौन साधना के पक्षधर श्री ओमप्रकाश मेहरा को प्रशासन तथा साहित्य जगत में विशेष सम्मान प्राप्त रहा। 'पाल वाली नाव', अंतत: तथा 'मेरी गजलें' जैसी कृतियाँ उनकी रचनात्मक प्रतिभा का प्रमाण देती हैं। 16 जून को उन्होंने इस संसार को अलविदा कह दिया।

'वर्तमान' के सम्पादक वरुण सेनगुप्त का निधन

बांग्ला दैनिक पत्रिका 'वर्तमान' के सम्पादक **वरुण सेनगुप्त** का 19 जून को 74 वर्ष की अवस्था में देहान्त हो गया।

प्रो० शिव सागर शुक्ल नहीं रहे

प्रख्यात आयुर्वेदाचार्य एवं राजकीय आयुर्वेद कालेज के पूर्व प्रधानाचार्य **प्रो० शिव सागर शुक्ल** की 23 जुलाई को ब्रेन हैमरेज के कारण मृत्यु हो गयी। प्रो० शुक्ल की गिनती देश के प्रतिष्ठित आयुर्वेद विद्वानों में की जाती थी।

कवि अमोघनारायण नहीं रहे

प्रख्यात कवि, साहित्यकार और स्वतंत्रता सेनानी **पण्डित अमोघ नारायण झा** का नई दिल्ली में सहसा हृदयगति रुक जाने से निधन हो गया। उनकी आयु 87 वर्ष थी। वह अपने पीछे एक भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं। पेशे से शिक्षक अमोघ बाबू की दो काव्य-कृतियाँ 'गीत गन्ध' और 'मैं तो तेरे पास में' कविता-संग्रह के रूप में प्रकाशित हैं।

मनोरमा देवी बिरला का देहान्त

उद्योगपति कृष्णकुमार बिरला की धर्मपत्नी **मनोरमा देवी बिरला** का अन्तिम संस्कार 30 जुलाई को कोलकाता में किया गया। इस अवसर पर उपस्थित बिरला परिवार के सदस्यों के अतिरिक्त बड़ी संख्या में उनके रिश्तेदारों, पारिवारिक मित्रों व शहर के अन्य प्रतिष्ठित लोगों ने उन्हें अश्रुपूरित विदाई दी।

मोहनलाल तिवारी का स्मरण

हिन्दी के विद्वान समीक्षक व साहित्यकार डॉ० मोहनलाल तिवारी के व्यक्तित्व व उनके कृतित्व को भुलाया नहीं जा सकता है। साहित्यिक संस्था 'रचना' की ओर से 30 जुलाई को नागरी प्रचारिणी सभा में डॉ० तिवारी की जयन्ती के मौके पर प्रो० गौरीशंकर गुप्त ने उक्त बातें कही। समारोह में डॉ० छविनाथ पाण्डेय, डॉ० सुमन जैन, श्यामजी उपाध्याय आदि ने भी विचार व्यक्त किए।

समवेदना के पत्र

बहुत विलम्ब से ज्ञात हुआ कि आदरणीय भाई पुरुषोत्तमजी मोदी बाबा विश्वनाथ की नगरी काशी को छोड़कर कैलाशधाम चले गये। यह समाचार जानकर अत्यन्त दु:ख हुआ। उनका आत्मीय प्रेम एवं प्रकाशन जगत में सिद्धान्त व नीतिपूर्ण व्यवसाय सदा स्मरणीय रहेगा। उनसे एक-दो बार ही प्रत्यक्ष भेंट का सुअवसर प्राप्त हुआ था। इतने अल्पकाल में ही भाई मोदीजी ने जो उदार सद्व्यवहार प्रदान किया, वह सदा याद रहेगा।

❑ **बंशीलाल मेड़तिया,**
'कमल प्रकाशन', इन्दौर

श्रद्धेय पुरुषोत्तमजी की मृत्यु का समाचार पढ़ने के बाद ही आप दोनों भाइयों को मुझे पत्र लिखना चाहिए था पर न लिख सका। पुरुषोत्तमजी से मेरा 1952 में गोरखपुर में परिचय हुआ था। उस वक्त मैं 17-18 वर्ष का था। बैंक रोड की दुकान पर मैं बीच-बीच में जाता था और श्रद्धेय पुरुषोत्तमजी से किताबों के बारे में बात करता था। उस परिचय को उन्होंने प्राय: 55 वर्षों तक याद रखा और 'भारतीय वाङ्मय' लगातार भिजवाते रहे और मेरी खोज-खबर लेते रहे। 'भारतीय वाङ्मय' मैं हमेशा आद्योपांत पढ़ता हूँ। इसकी मेरे लिए जबरदस्त उपयोगिता है। मैंने सोचा था कि श्रद्धेय पुरुषोत्तमजी की मृत्यु के बाद उसका प्रकाशन या तो बन्द हो जाएगा या उसमें वह बात नहीं रहेगी जो पहले थी। लेकिन यह अत्यन्त प्रसन्नता की बात है कि इसका स्वरूप किंचित भी नहीं बदला है और यह पहले की तरह मेरे जैसे हिन्दीप्रेमी के लिए ऐसी सूचनाओं और समाचारों का स्रोत बना हुआ है जिनसे मैं वंचित रहता। एक हिन्दीप्रेमी के रूप में इसके लिए आप लोगों के प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ। यह भी आशा करता हूँ कि हमारी हिन्दी के पुराने लेखकों के बारे में 'भारतीय वाङ्मय' दुर्लभ जानकारी देता रहेगा। जून के अंक में रायकृष्णदास की पत्रिका 'सरोज' के बारे में मुझे ऐसी जानकारी मिली जिसका मुझे भान नहीं था।

श्रद्धेय पुरुषोत्तमजी के प्रति देर से ही श्रद्धांजलि प्रकट करने का मौका मिला है, उससे ही थोड़ी दिलासा प्राप्त करता हूँ।

❑ **अशोक सेकसरिया,** कोलकाता

अध्येताओं, पुस्तकालयों, शिक्षा संस्थाओं

के लिए

साहित्यिक तथा विभिन्न विषयों की हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत पुस्तकों का विशाल संग्रह

तीन हजार वर्ग फुट में विशाल शोरूम

विश्वविद्यालय प्रकाशन

विशालाक्षी भवन, चौक
(चौक पुलिस स्टेशन परिसर के पार्श्व में)
वाराणसी - 221 001 (उ०प्र०)
Phone & Fax : (0542) 2413741, 2413082
E-mail : vvp@vsnl.com & sales@vvpbooks.com
Website : www.vvpbooks.com

जनगण जितना भाषा का निर्माण करते हैं उससे कहीं अधिक भाषा जनगण का निर्माण करती है। —जर्मन महाकवि 'गेटे'

पाठकों के पत्र

'भारतीय वाङ्मय' प्रतिमाह प्राप्त हो रहा है। प्रसन्नता है कि श्री पुरुषोत्तमदास मोदी के बाद उनके सुपुत्र श्री पराग कुमार मोदी इस पत्रिका का सम्पादन उसी प्रकार कर रहे हैं जैसे पहले हो रहा था। उनके द्वारा सम्पादकीय पढ़कर स्व० मोदीजी की याद आ जाती है। पत्रिका में कोई परिवर्तन नहीं। साधुवाद है दोनों भाइयों को।

साहित्य-पुरुष की शताब्दी-स्मृति व सुनो, पापा सुनो, सम्पादकीय पढ़ कर अच्छा लगा। साहित्यिक कार्यक्रमों में सामान्य छात्र, बुद्धिजीवी व दूसरे पेशों से जुड़े लोग प्राय: दूर रहते हैं, बहुत सच्चाई है इस बात में। साहित्यिक गोष्ठियों में साहित्यकार तथा कुछ साहित्यप्रेमी ही भाग लेते हैं। युवावर्ग की कोई रुचि नहीं।

— विनोद शंकर गुप्त, हिसार

ज्ञान-विज्ञान के प्रकाशन, सम्मान-व्याख्यान, आमन्त्रण-निमंत्रण, निधन-अभिनंदन, विमोचन, लोकार्पण, पुरस्कार-शिविर, संगोष्ठी और समारोहों की सूचनाओं से भरपूर हम सभी साहित्य-प्रेमियों, मनीषियों की चिरप्रतीक्षित आपका 'भारतीय वाङ्मय' जून 2008 ई० का अंक प्राप्त हुआ। उर्जस्वित संपादकीय एवं उत्कृष्ट लेखों से युक्त पत्रिका साहित्यिक जगत का प्रतिनिधित्व कर रही है। देश-विदेश में प्रसारित-विस्तृत हिन्दी भाषा व साहित्य की गतिविधियों की भरपूर सूचना देनेवाली हिन्दी की एकमात्र 'भारतीय वाङ्मय' पत्रिका निरन्तर पढ़ने को मिल जाती है। इस हेतु आप सभी के साथ विश्वविद्यालय प्रकाशन को हार्दिक बधाई।

— राजकुमार 'मणि', वाराणसी

'भारतीय वाङ्मय' का जून अंक प्राप्त हुआ। स्वर्गीय मोदीजी का दायित्व-निर्वाह बड़ी सक्षमता से कर रहे हैं, इससे प्रसन्नता है। पुस्तकों का संसार और सभा/संगोष्ठी समाचार से परिचित कराने में इस पत्रिका की कोई तुलना नहीं है। महान साहित्यकारों के हास्य-व्यंग्य और उत्तर-प्रत्युत्तर मनोरंजक होते हैं—इसका उदाहरण है—इस अंक का 'प्रेयसी'। प्रो० वसुधा डालमिया का आलेख विदेशों में हिन्दी भाषा-साहित्य की दशा-दिशा पर मार्मिक टिप्पणी है। प्रख्यात कथाकार अमरकांत का आर्थिक संकट इस बात का सबूत है कि भारत में साहित्यकारों की घोर उपेक्षा है।

— डॉ० व्यासमणि त्रिपाठी, अण्डमान

मुझे चिरप्रतीक्षित 'भारतीय वाङ्मय' के सभी अंक मिल गये। एक-एक कर सभी अंक मैं पढ़ गयी, जैसे लगा कि न केवल अपने लोग, न केवल बनारस वरन पूरा भारत मेरे पास है। सचमुच इतने कम पृष्ठों में इतनी अधिक सामग्री! पत्रिका का वही कलेवर, वही तेवर, अद्‌भुत, कहीं कोई अंतर नहीं। सब कुछ पूर्ववत्। विरासत की सहेज, दायित्व का समुचित निर्वहन कम मुश्किल भरा नहीं होता। उस कठिन चुनौती को स्वीकार कर जिस माद्दे के साथ आप लोगों ने पत्रिका के अंक-दर-अंक निकाले हैं, जितनी प्रशंसा की जाए, कम है। यह अलग बात है कि पत्रिका को पढ़ते हुए उन वात्सल्यमयी अशीषती आँखों को भुला पाना इतना आसान नहीं रहा। लेकिन उनकी कर्मठता, जीवटता और सक्रियता से मिली क्रियाशीलता और जुझारूपन ही हमारी उत्प्रेरणा है, हमारी उपलब्धि है, पाती है, संबल है।

— प्रो० डॉक्टर रामकली सर्राफ, पोलैण्ड
(डॉ० सर्राफ काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में हिन्दी की प्रोफेसर हैं।)

साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों एवं सरोकारों की पत्रिका 'भारतीय वाङ्मय' का जुलाई अंक पढ़कर अतीव प्रसन्नता हुई जिसमें पुस्तकों की महत्ता-उपादेयता के साथ-साथ संस्कारजन्य वृत्ति का संदेश मिला है। मुख्य पृष्ठ पर हास्य-व्यंग्य विधा मुखरित हुई है तथा आर्थिक यंत्रणा के प्रति चिंता स्वाभाविक है। 'अगली सदी का शोधपत्र' अनेक समसामयिक चुनौतियों का स्मरण कराता है तथा साहित्य में बाजारवाद पर चिंता व्यक्त की गई है जो अद्यतन परिवेश में ज्वलंत समस्या है। शिक्षा और सम्भावना की दिशा और दशा पर पाठकों का ध्यान केन्द्रित किया गया है। यत्र-तत्र-सर्वत्र में विविध सूचनाएँ दी गई हैं तथा संस्कृति, संस्कार तथा अपनी मूल पहचान बनाए रखने के लिए अपनी भाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार हेतु आगे आने की आवश्यकता है। सम्मान-पुरस्कार शीर्षक से अनेक हिन्दी-संस्कृत के साहित्यकारों को पुरस्कृत-सम्मानित करने की चर्चा की गई है। इतिहास, कला और संस्कृति की महत्त्वपूर्ण कृतियों के प्रकाशन की सूचना भी पाठकीय स्पंदन का कारण है जिसकी प्रतीक्षा पाठकों को बराबर बनी रहती है। स्मृतिशेष में दिवंगत साहित्यकारों के प्रति विनम्र श्रद्धांजलि है। पाठकों के पत्र, पत्रकारिता विधा का द्योतन करते हैं तथा साहित्यानुशीलन की वृत्ति के परिचायक सिद्ध हुए हैं। संगोष्ठी और लोकार्पण साहित्यिक-सांस्कृतिक अनुष्ठान के प्रतिदर्श हैं एवं आदर्श हैं और विचार-विमर्श के प्रतीक जिसका प्रकाशन लोकहित में परमावश्यक है। पुस्तक-परिचय में प्रतिनिधि मानक ग्रन्थों की चर्चा निश्चय ही शोधार्थियों एवं साहित्य-समीक्षकों के लिए उपयोगी सिद्ध हुई है।

— डॉ० पशुपतिनाथ उपाध्याय, अलीगढ़

हिन्दी साहित्य लोक की प्रतिष्ठित पत्रिका 'भारतीय वाङ्मय' का जून 2008 अंक मिला। यह देखकर बहुत अच्छा लगा कि आप अपने पूज्य पिता द्वारा स्थापित-सम्पादित पत्रिका को यथावत रूप दे पाने में पूर्ण समर्थ प्रमाणित हो रहे हैं। सम्पादन-प्रकाशन हेतु शतश: बधाई।

— भानुदत्त त्रिपाठी 'मधुरेश', उन्नाव

संगोष्ठी/लोकार्पण

लमही महोत्सव

लमही (वाराणसी)। अमर कथाकार प्रेमचंद की 128वीं जयन्ती उनकी जन्मस्थली लमही गाँव में मनाई गई। प्रेमचंद स्मारक भवन एवं विकासीय योजना समिति की ओर से जिलाधिकारी ए.के. उपाध्याय ने 'मुंशी प्रेमचंद लमही महोत्सव' का शुभारम्भ किया। पूरे समय तक गाँव में बिजली कटौती के बीच नाटक व कठपुतली के कार्यक्रम हुए। चित्र प्रदर्शनी लगी। लोकगीत व काव्यगोष्ठी हुई। खास यह कि अबकी लमही में 'मुंशीजी' को याद करने वालों में न तो उनके वंशज दिखे और न ही साहित्य जगत के जुड़े लोगों की विशेष उपस्थिति रही। संस्कृति विभाग का कोई प्रतिनिधि मौके पर नहीं था। ग्रामीणों की भीड़ रही।

इस अवसर पर जिलाधिकारी श्री उपाध्याय ने कहा कि प्रेमचंद अंतर्राष्ट्रीय स्तर के विचारक, समाज सुधारक व चिंतक थे। गाँव में शोध केन्द्र स्थापित करने के लिए का०हि०वि०वि० को मिले 2 करोड़ रुपये के समुचित उपयोग के बारे में का०हि०वि०वि० के कुलपति से बात होगी। प्रेमचंद को जन-जन तक पहुँचाने के लिए सितम्बर में स्कूली बच्चों को लमही का भ्रमण कराया जाएगा।

त्रैमासिक पत्रिका 'लमही' लोकार्पित

लमही (वाराणसी)। मुंशी प्रेमचंद के सरस्वती प्रेस में काम करनेवाले लमही-निवासी रामसूरत ने प्रेमचंद-जयन्ती पर त्रैमासिक पत्रिका 'लमही' का लोकार्पण किया। 'मुंशीजी' की 128वीं जयन्ती के मौके पर लमही में एक ओर जहाँ एक के बाद एक कई कार्यक्रम पेश किये जा रहे थे वहीं निकट ही रामसूरत के आवास पर हुआ यह आयोजन खामोशी लिये था। प्रेमचंद के वंशज ऋत्विक राय व प्रपौत्र विजय राय सम्पादित पत्रिका 'लमही' के लोकार्पण के मौके पर गिने-चुने लोग ही मौजूद थे। वक्ताओं ने पत्रिका के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए प्रेमचंद के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को याद किया।

कालजयी पुस्तकें

गोस्वामी तुलसीदास के बाद मुंशी प्रेमचंद की कृतियों का दूसरी भाषाओं में सर्वाधिक अनुवाद हुआ। प्रेमचंद ने गुलामी व शोषण से उपजे दर्द को शिद्दत से महसूस किया तो भाषा, सौहार्द व साम्प्रदायिक सौहार्द के लिए सदा सचेत रहे। उनकी छोटी से छोटी कहानी भी गम्भीर घाव करने वाली है। वे औचित्यबोध व न्यायबोध से परिपूर्ण कालजयी रचनाकार थे। ऐसे साहित्यकारों की रचनाएँ हर काल में प्रासंगिक होती हैं व कभी पुरानी नहीं पड़ती हैं।

उपर्युक्त बातें महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ में हिन्दी विभाग की ओर से मुंशी प्रेमचंद जयंती के उपलक्ष्य में वक्ताओं ने कही। प्रो० चौथीराम यादव ने कहा कि आज जहाँ भूमण्डलीकरण का जश्न मनाया जा रहा है वहीं किसान आत्महत्या करने को विवश हैं।

संसद एक तमाशा

वाराणसी। महाभारत में दोनों पक्ष खुलकर सामने खड़े थे, लेकिन परमाणु करार के मसले पर संसद भवन के नजारे ने कौरवों और पाण्डवों का भेद मिटा दिया। देश की सबसे बड़ी जनपंचायत के सामने द्रौपदी का चीरहरण होता रहा और उसे बचाने वाला नजर नहीं आया। ऐसी स्थितियाँ भारतीय संस्कृति के क्षरण के चलते ही सामने आ रही हैं। यह कहना है वरिष्ठ पत्रकार हृदयनारायण दीक्षित का। 28 जुलाई को वे का०हि०वि०वि० के मालवीय भवन में प्रबोधिनी फाउण्डेशन और परमिता संस्थान की ओर से आयोजित इतिहास, संस्कृति और संविधानविषयक संगोष्ठी में बोल रहे थे। विशिष्ट अतिथि के रूप में वरिष्ठ पत्रकार प्रताप सोमवंशी ने कहा कि प्रेमचंद का किसान

भारत का स्वतन्त्रता-आन्दोलन और राष्ट्रभाषा हिन्दी-साहित्य

कालडी (दक्षिण भारत) के श्री शंकराचार्य विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के तत्त्वावधान में 'स्वतंत्रता आन्दोलन और हिन्दी साहित्य' विषय पर त्रिदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी की गयी। प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की 150वीं तथा भारतीय स्वतंत्रता की 60वीं सालगिरह के सन्दर्भ में स्वतंत्रता-पूर्व व परवर्ती हिन्दी साहित्य पर विचार-विमर्श, इस संगोष्ठी का मुख्य उद्देश्य था। स्वतंत्रता आन्दोलन में साहित्य का जो योगदान रहा तथा देश की स्वतंत्रता पर मंडरानेवाली साम्राज्यवाद, नवउपनिवेशवाद, सांप्रदायिकता जैसी चुनौतियों का प्रतिरोध करने में हिन्दी साहित्य की सक्षम भूमिका पर संगोष्ठी केन्द्रित रही। इस अवसर पर देशभर से विशिष्ट साहित्यकार आए।

राष्ट्रीय संगोष्ठी का समारम्भ संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति डॉक्टर के०एस० राधाकृष्णन ने किया। उन्होंने कहा कि हमें स्वाधीनता के शत्रु अर्थात् व्यक्ति के भीतरी शत्रु को पहले पहचानना है और फिर उस पर विजय प्राप्त करनी है।

इस सत्र की अध्यक्षता जे०एन०यू० के भारतीय भाषा केन्द्र के अध्यक्ष डॉ० वीर भारत तलवार ने की। 'समयान्तर' पत्रिका के सम्पादक श्री पंकज विष्ट ने बीज-भाषण में 'स्वतंत्रता आन्दोलन, नवउपनिवेशवाद और हिन्दी साहित्य' पर अपने विचार प्रस्तुत किये। युवा आलोचक डॉ० विनोद तिवारी ने अपना आलेख 'उपनिवेश और हिन्दी उपन्यास' प्रस्तुत किया। 'स्वाधीनता संग्राम और स्त्री साहित्य' शीर्षक आलेक में डॉ० गरिमा श्रीवास्तव ने स्त्री वैचारिकता के ठोस प्रमाण पर अपनी बात रखी। उपन्यास पर केन्द्रित दूसरे सत्र की अध्यक्षता इलाहाबाद वि०वि० के प्रोफेसर डॉ० राजेन्द्र कुमार ने की। पय्यन्नूर कॉलेज के डॉ० के० जनार्दन ने 'राष्ट्रीय आंदोलन की चेतना-प्रेमचंदयुगीन उपन्यास में (गांधीवादी कृतियों के सन्दर्भ में)' तथा 'ज़िन्दगी एक ज़िन्दा शब्द' शीर्षक से क्रमश: अपने आलेख प्रस्तुत किये।

दूसरे दिन संगोष्ठी कविता पर केन्द्रित रही। कवि, आलोचक और कोच्चिन वि०वि० के प्रोफेसर डॉ० ए० अरविन्दाक्षन, डॉ० राजेन्द्र कुमार और गुरूवायूर श्रीकृष्णा कालेज की डॉ० हरिणी मेनन ने आलेख प्रस्तुत किये। अरविन्दाक्षन जी ने कविता को सशक्त अभिव्यंजना बताया। दूसरे सत्र में प्रोफेसर अरविन्दाक्षनजी की अध्यक्षता के अन्तर्गत दुर्ग, छत्तीसगढ़ के प्रोफेसर डॉ० सियाराम शर्मा, केरल विश्वविद्यालय की रीडर डॉ० जे० उमा तथा कवि, आलोचक और सागर वि०वि० के प्रोफेसर डॉ० वीरेन्द्र मोहन ने 'स्वाधीनता का स्वप्न', नवउपनिवेशवाद की गुलामी और हिन्दी कविता पर 'स्वतंत्रता आंदोलन और नयी कविता' पर तथा 'स्वतंत्रता आंदोलन और द्विवेदीयुगीन साहित्य' पर अपने आलेख प्रस्तुत किये।

तीसरे दिन का पहला सत्र उपन्यास पर केन्द्रित रहा जिसकी अध्यक्षता डॉ० विनोद तिवारी ने की। डॉ० के० मोहनन पिल्लै तथा डॉ० षीला टी० नायर के 'साम्यवादी उपन्यासकारों की देन : स्वाधीनता के परिप्रेक्ष्य में' तथा 'स्वतंत्रता आन्दोलन और सत्तरोत्तर उपन्यास' विषय पर क्रमश: आलेख प्रस्तुतिकरण हुए।

दूसरा सत्र नाटक पर केन्द्रित रहा। सत्र में डॉ० वीरेन्द्र मोहन ने अध्यक्ष पद संभाला। कालिकट वि०वि० में प्रोफेसर रहे डॉ० टी०एन० विश्वम्भरन तथा डॉ० एन०एम० सण्णी ने 'स्वतंत्रता आन्दोलन और प्रसादोत्तर नाटक' तथा 'भारतेन्दु के मौलिक नाटकों में उपनिवेश-विरोधी स्वर' विषय पर क्रमश: आलेख प्रस्तुत किये। तीसरे अन्तिम सत्र में डॉ० प्रभाकरन ने अध्यक्ष की जिम्मेदारी निभायी। इस सत्र में कोच्चिन वि०वि० के प्रोफेसर आर० शशिधरन ने 'स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटक और स्वतंत्रता आन्दोलन', डॉ० के० अजिता ने 'नव-औपनिवेशिक सन्दर्भ में यादों की दुरुस्ती' तथा डॉ० प्रणीता ने 'प्रसाद और छायावाद का पुनर्वाचन' शीर्षक आलेख क्रमश: प्रस्तुत किये।

राष्ट्रीय संगोष्ठी के संयोजक थे डॉक्टर वी०जी० गोपालकृष्णन।

आत्महत्या नहीं करता जबकि आधुनिक कृषि उपकरणों से लैस किसान आत्महत्या के लिए मजबूर है। यह हमारी संस्कृति पर पड़ने वाले दुष्परिणामों का ही परिणाम है। इस अवसर पर त्रैमासिक पत्रिका 'परमिता' का लोकार्पण भी किया गया।

कादम्बिनी क्लब का वार्षिकोत्सव

कादम्बिनी क्लब, गया के चौथे वार्षिकोत्सव अवसर पर मगध प्रमंडल के आयुक्त के०पी० रमय्या मुख्य अतिथि और कथाकार शैवाल विशिष्ट अतिथि थे। इस अवसर पर 'वर्तमान में कला की उपयोगिता' विषय पर हुई परिचर्चा में वीरेन्द्र कुमार सिंह ने अपने विचार रखे। सभा के दूसरे सत्र में पी०एन० राय एवं सोनू अन्नपूर्णा ने कविता-पाठ किया। कादम्बिनी क्लब, मोहम्मदबाग, लखनऊ द्वारा आयोजित समारोह में कर्नल निर्मल सिन्हा के काव्य-संग्रह 'असंख्य दीप जले' तथा मांडवी चंद्रा के काव्य-संग्रह 'भोर का स्वागत' का लोकार्पण करते हुए आलोचक शंभुनाथ ने कहा कि कादम्बिनी पत्रिका ही नहीं, इस क्लब ने नये रचनाकारों के प्रोत्साहन का महत्त्वपूर्ण कार्य किया है।

'कविता का लोकतंत्र' का लोकार्पण

नई दिल्ली। मणिका फाउंडेशन द्वारा आयोजित समारोह में वरिष्ठ कवयित्री रमणिका गुप्ता पर केन्द्रित मदन कश्यम द्वारा सम्पादित पुस्तक 'रमणिका गुप्ता : प्रतिनिधि कविताएँ' और 'पातियां प्रेम की' (प्रेम कविताओं का संकलन) और अभिषेक कश्यप की पुस्तक 'कविता का लोकतंत्र' का लोकार्पण अशोक वाजपेयी ने किया।

प्रतिनिधि कविताओं का उर्दू अनुवाद

नई दिल्ली। साहित्य अकादमी द्वारा आयोजित समारोह में सुदीप बनर्जी के हिन्दी में प्रकाशित और वरिष्ठ कवि विष्णु नागर तथा लीलाधर मंडलोई द्वारा सम्पादित काव्य-संग्रह 'प्रतिनिधि कविताएँ' का उर्दू अनुवाद 'नुमाइंदे नज़्मे' का लोकार्पण जामिया मिलिया इस्लामिया के कुलपति मुशीरुल हसन ने किया। अकादेमी द्वारा प्रकाशित इस संग्रह का अनुवाद उर्दू के प्रसिद्ध लेखक सैय्यद सादिक ने दिया है।

छत्तीसगढ़ साहित्य सम्मेलन

पिछले दिनों छत्तीसगढ़ी साहित्य समिति ने दूधाधारी मठ में छत्तीसगढ़ी साहित्य सम्मेलन आयोजित किया जिसका उद्घाटन रामसुंदर दास ने किया। अध्यक्ष थे देवेंद्र वर्मा। 'छत्तीसगढ़ी राजभाषा और साहित्यकारों का दायित्व' पर आधारित संगोष्ठी में श्यामलाल चतुर्वेदी, प्रभाकर चौबे, विनय पाठक और मुकुंद कौशल आदि ने चर्चा की। दूसरे सत्र में साहित्यकारों का सम्मान किया गया। मुख्य अतिथि थे अशोक शर्मा।

'दलित, अल्पसंख्यक सशक्तीकरण' पुस्तक का लोकार्पण

वरिष्ठ पत्रकार सन्तोष भारतीय द्वारा सम्पादित पुस्तक 'दलित, अल्पसंख्यक सशक्तीकरण' का लोकार्पण गत दिनों नई दिल्ली में हुआ। पूर्व प्रधानमंत्री इंद्रकुमार गुजराल ने लोकार्पण किया। उन्होंने कहा कि आजादी के साठ साल बाद भी हम सामाजिक परिवर्तन नहीं कर पाए। उन्होंने पुस्तक को वैचारिक पुस्तक का दर्जा देते हुए कहा कि जिनका भी रिश्ता परिवर्तन से है उन्हें इसे पढ़ना चाहिए। लोकार्पण समारोह की अध्यक्षता केन्द्रीय मंत्री रामविलास पासवान ने की। पुस्तक में प्रधानमंत्री डॉ० मनमोहन सिंह, पूर्व प्रधानमंत्री वी०पी० सिंह, इंद्रकुमार गुजराल, केन्द्रीय मंत्री ए०आर० अंतुले, सुशील कुमार शिंदे, शिवराज पाटील सहित दस से ज्यादा केन्द्रीय मंत्रियों और असगर अली इंजीनियर, पी०एस० कृष्णन, प्रो० इम्तियाज अहमद, ए०एस० नाकादार, विमल थोराट सहित तीस से ज्यादा बुद्धिजीवियों के लेख शामिल हैं।

अवधनारायण मुद्गल-समग्र का लोकार्पण

अवध को मैं लखनऊ में तो ऊपरी तौर पर ही जान सका था, लेकिन 'सारिका' के सम्पादन के दौरान मैंने उसे अधिक जाना। यह विचार 'रशियन कल्चरल सेंटर' में वरिष्ठ कवि-कथाकार कुँवर नारायण ने व्यक्त किये। वह किताब घर द्वारा प्रकाशित 'अवधनारायण मुद्गल समग्र' के लोकार्पण के सभापति की हैसियत से बोल रहे थे।

समग्र के सम्पादक और कथाकार महेश दर्पण ने मुद्गलजी के साथ अपने आत्मीय रिश्तों के साथ ही उनके रचना-संसार के साथ अपने लगाव की बात कही। रूसी केन्द्र के निदेशक चराकास ने कहा कि यह महत्त्वपूर्ण लेखक की रचनाओं की समग्र प्रस्तुति तो है ही, इसके जरिए हम उनके समय को भी जान-समझ सकते हैं। मुख्य अतिथि ममता कालिया ने कहा कि अवधजी ने साहित्यिक पत्रकारिता का लम्बा युग जिया है।

इस अवसर पर अवधनारायण मुद्गल ने अपनी कुछ कविताओं का पाठ किया।

लोकार्पण एवं सम्मान समारोह

अखिल भारतीय साहित्य परिषद, जोधपुर द्वारा जनकवि गणेशीलाल व्यास उस्ताद सभागार, सूचना केन्द्र, जोधपुर में 'लोकार्पण एवं सम्मान समारोह' डॉ० (श्रीमती) अजित गुप्ता (अध्यक्ष, राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर) के मुख्य अतिथ्य एवं बनवारीलाल गौड़ (कुलपति, राजस्थान आयुर्वेद विश्वविद्यालय, जोधपुर) के सभापतित्व में हुआ। इस अवसर पर परिषद् की स्मारिका 'हमारा दृष्टिकोण' तथा श्री हरि प्रकाश सठी के कहानी संग्रह 'माटी के दीये' का लोकार्पण हुआ।

1857 की क्रांति पुस्तक पर विचार-गोष्ठी

जनवादी लेखक संघ, भोजपुर (बक्सर) के तत्त्वावधान में सुभाष शर्मा, अनन्त कुमार सिंह और जवाहर पाण्डेय रचित पुस्तक 'कुँअर सिंह और 1857 की क्रांति' पर गत दिनों विचार-गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी का सभापतित्व जयप्रकाश विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ० दुर्ग विजय सिंह ने किया। गोष्ठी के विशिष्ट अतिथि वीर कुँअर सिंह विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ० रामपाल सिंह ने कहा कि आज के नेतृत्वकर्ता अपने सामाजिक परिवेश और राजनीतिक उत्तरदायित्व के प्रति उतने जिम्मेदार नहीं हैं, जितने कुँअर सिंह थे। इस पुस्तक में कई अछूती जानकारियाँ आज महत्त्वपूर्ण हैं।

'कबीर की सामाजिक चेतना' विषयक संगोष्ठी

सीतापुर। हिन्दी सभा के तत्त्वावधान में 18 जून 2008 को कबीर जयन्ती पर ''कबीर की समाजिक चेतना'' विषयक संगोष्ठी आयोजित की गयी। इसमें मुख्य वक्ता स्तम्भकार एवं हिन्दीसेवी डॉ० हरिप्रसाद दुबे थे। डॉ० दुबे ने अपने उद्बोधन में कहा कि कबीर कथनी से अधिक करनी में विश्वास करते थे। सत्य एवं आवश्यकता भर धन में अटूट आस्था थी। जैसे-जैसे जगत में जीवन मूल्यों का संकट बढ़ेगा वैसे-वैसे कबीर जैसे महापुरुषों की आवश्यकता बढ़ेगी।

उद्भ्रान्त के काव्य-नाटक पर चर्चा

इप्टा और केन्द्रीय हिन्दी संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में आगरा में पिछले दिनों जाने-माने कवि और दूरदर्शन महानिदेशालय के वरिष्ठ निदेशक उद्भ्रान्त ने अपने काव्य-नाटक 'ब्लैकहोल' का पाठ किया।

संस्थान के नजीर सभागार में आयोजित इस कार्यक्रम में नाटक पर विचारपूर्ण चर्चा हुई। अध्यक्षीय भाषण में प्रो० रामवीर सिंह ने लम्बे अन्तराल के बाद काव्य नाटक आने की सराहना की। उन्होंने कहा कि रचना वही है, जो आलोचक का सामना कर सके।

लेखक उद्भ्रान्त का कहना था कि उन्होंने मनुष्य के अन्त: और बाह्य संघर्ष को उजागर करने की कोशिश की है।

साहित्य और संस्कृति संकट के घेरे में

वाराणसी। भारतीय साहित्य परिषद के सचिव श्री प्रवीण आर्य ने वाराणसी में विभिन्न इकाइयों की संगठनात्मक बैठकों को सम्बोधित करते हुए कहा कि साहित्यकारों में भी अब राष्ट्रीय विचारधारा का ह्रास दिखने लगा है। उनके द्वारा सृजित साहित्य एक वर्गविशेष या समस्याविशेष तक अपनी लक्ष्मणरेखा खींच चुका है। ऐसे वातावरण में भारतीय संस्कृति और भारत देश दोनों आरक्षित हो गए हैं। वाराणसी के

साहित्यकार आज ही नहीं सदियों से राष्ट्रीय मानस पर छायी तन्द्रा को तोड़ते रहे हैं, आज भी उन्हें इस अन्धकारमय वातावरण को प्रकाशित करने की जरूरत है।

'भारत राष्ट्र, वर्तमान संकट और साहित्य की भूमिका' संगोष्ठी में परिषद के सदस्य डॉ० उदयप्रताप सिंह ने कहा कि आज देश बाह्य संकट का मुकाबला तो कर सकता है, पर आंतरिक संकट, जिससे परिवारों का टूटना, संस्कृति की उपेक्षा, स्वत्व का अभाव, गुलामी का मानस और यूरोपीय विचारों के अंधानुकरण ने संकट को बढ़ा दिया है। इसका सही उत्तर सत्साहित्य ही दे सकता है। भाव-सभ्यता का पुनरोदय साहित्य और साहित्यकार ही कर सकता है। संगोष्ठी में प्रो० पूर्णमासी राय, प्रो० युगेश्वर, डॉ० बदरीनाथ कपूर, डॉ० अशोककुमार सिंह, परमानंद आनंद ने साहित्य और साहित्यकार को जागरूक होने पर बल दिया।

माया गोविंद का एकल काव्यपाठ

नई दिल्ली। गोपालप्रसाद व्यास की तीसरी पुण्यतिथि के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम 'काव्ययात्रा : कवि के मुख से' में हिन्दी भवन सभागार में वरिष्ठ और लोकप्रिय कवयित्री माया गोविंद ने अपने एकल काव्यपाठ से ऐसा समाँ बाँधा कि श्रोता झूम उठे। मुख्य अतिथि व्यंग्य कवि श्री अशोक चक्रधर ने माया गोविंद की रचनाशीलता और लोकप्रियता को रेखांकित किया। कार्यक्रम का सभापतित्व हिन्दी भवन के अध्यक्ष श्री त्रिलोकीनाथ चतुर्वेदी ने किया।

'विभाजन की असली कहानी'

लखनऊ। क्या भारत-विभाजन की सच्चाई प्रचलित मान्यताओं से अलग है? क्या इसमें अमेरिका की भूमिका थी? क्या वह रूस के खिलाफ मुस्लिम राज्य के निर्माण की राजनीति का हिस्सा था? विभाजन के इन तथ्यों की गहराई से छानबीन करने और कई नए मामलों को प्रकाश में लाने वाली पुस्तक 'विभाजन की असली कहानी' का लोकार्पण राज्यपाल टी०वी० राजेश्वर ने किया। राजकमल प्रकाशन द्वारा प्रकाशित नरेन्द्र सिंह सरीली की यह पुस्तक वर्ष 2005 में प्रकाशित उनकी अंग्रेजी पुस्तक का हिन्दी अनुवाद है।

हिन्दी पत्रकारिता दिवस

कोलकाता से प्रकाशित हिन्दी के प्रथम समाचारपत्र 'उदन्त मार्तण्ड' की स्मृति में आयोजित हिन्दी पत्रकारिता दिवस का आयोजन हिन्दी-क्षेत्र के विभिन्न शहरों, अंचलों में हुआ। इस अवसर पर भारतीय पत्रकार संघ (आई-एफ-डब्ल्यू-जे) के अध्यक्ष के० विक्रमराव ने कहा कि हिन्दी भाषा को दूसरी भाषाओं के ज्यादा से ज्यादा शब्दों को स्वीकार करना चाहिए जैसा कि अंग्रेजी भाषा में देखा जाता है। पत्रकार संघ की उत्तर प्रदेश इकाई के अध्यक्ष अशोक मधुप ने आयोजन की अध्यक्षता की। यह कार्यक्रम लखनऊ, बिजनौर, सीतापुर, देहरादून आदि क्षेत्रों में अलग-अलग आयोजित किया गया जिसमें प्रिण्ट मीडिया से जुड़े पत्रकारों ने विभिन्न समस्याओं पर विचार-विमर्श किया।

बाल-साहित्य संवर्धन कार्यशाला

बाल साहित्य के विकास, संवर्धन और बच्चों में पुस्तकों के प्रति लगाव उत्पन्न करने के उद्देश्य से नेशनल बुक ट्रस्ट की शाखा राष्ट्रीय बाल साहित्य केन्द्र (एन-सी-सी-एल) द्वारा प्रतिवर्ष भारत के विभिन्न क्षेत्रों में बाल साहित्य लेखकों, तत्संबंधी चित्रकारों की कार्यशालाओं का आयोजन किया जाता है, जिनमें परिचर्चा-सत्र भी आयोजित किये जाते हैं। ऐसी कार्यशालाओं में बच्चों की भागीदारी बाल-साहित्य की सर्जना, पाठ और पाठक का सम्बन्ध स्थापित करने में सहायक होती है। पिछले दिनों ये कार्यशालाएँ जम्मू-कश्मीर के श्रीनगर, उत्तर प्रदेश के मऊ एवं आगरा और हरियाणा (करनाल) में आयोजित की गयी।

बाल-साहित्य अनुवाद कार्यशाला

नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा अहमदाबाद के गुजरात विद्यापीठ में पिछले दिनों गुजराती भाषा में बच्चों के बेहतर साहित्य अनुवाद को लेकर कार्यशाला का आयोजन किया गया। अहमदाबाद आकाशवाणी के केन्द्र निदेशक श्री भगीरथ पंड्या ने अध्यक्ष पद से सम्बोधित करते हुए कहा कि आज की पीढ़ी के बच्चे अपनी मातृभाषा से वंचित हो रहे हैं। वे प्राय: अंग्रेजी शब्दों के प्रयोग से भाषा को विकृत कर देते हैं, भाषा के इस भ्रष्ट-स्वरूप को परिवार और माता-पिता की स्वीकृति प्राप्त है, बच्चे के मुँह से अंग्रेजी शब्द सुनकर स्वजनों की प्रसन्नता ही भाषिक-विकृति का कारण है। दूसरी ओर समाज में केवल वरिष्ठ-जन ही मातृभाषा और संस्कृति के गौरव की बात करते हैं जबकि हमें अपने बच्चों में भाषा और संस्कृति के गौरव-बोध को जागृत करना चाहिए। इस विचार-सत्र में अनुवादक और शिक्षाशास्त्री श्री जीतेन्द्र देसाई, बाल साहित्यकार श्री यशवंत मेहता, कलाकार रजनी व्यास ने विचार व्यक्त किये। इस कार्यशाला के समन्वयक थे एन-बी-टी के गुजराती सम्पादक श्री भाग्येन्द्र पटेल।

बाणभट्ट एवं षष्ठ कबीर समारोह

'प्राणलोक' संस्था के तत्वावधान में मध्यप्रदेश शासन, संस्कृति मंत्रालय के सहयोग से महाकवि बाणभट्ट की 1417वीं जयन्ती तथा कबीर की 611वीं जयन्ती के उपलक्ष्य में षष्ठ राष्ट्रीय कबीर समारोह का संयुक्त आयोजन रीवा में सम्पन्न हुआ। समारोह के मुख्य अतिथि प्रो० हेमलता बोलिया तथा अध्यक्ष प्रो० देवनारायण झा थे। इस अवसर पर 'कादम्बरी का प्रीति सौन्दर्य' एवं 'कबीर का रचना संसार' विषयों पर वक्ताओं के व्याख्यान हुए। समारम्भ सत्र एवं संगोष्ठी का संचालन श्री दर्शन राही ने किया। श्री राही ने बताया कि भमरसेन के सोन नद के तट पर 'प्रीतिकूट' है जहाँ बाणभट्ट का जन्म हुआ और हर्ष की राजसभा से लौटने के बाद उन्होंने वहीं प्रीति काव्य 'कादम्बरी' का सृजन किया।

अध्यात्म-प्रेम-रामायण (महाकाव्य) का विमोचन कार्यक्रम सम्पन्न

हिन्दी साहित्य के जाने-माने कवि डॉ० जे०एल० त्रिपाठी 'प्रेमानन्द' के महाकाव्य अध्यात्म-प्रेम रामायण एवं धर्मगीता का लोकार्पण हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग के प्रधानमंत्री श्री श्रीधर शास्त्री के आयोजकत्व में इलाहाबाद में केशर विद्यापीठ के सभागार में हुआ।

'ग़ज़ल-गुलज़ार' लोकार्पित

लखनऊ जनपद हिन्दी साहित्य सम्मेलन एवं चेतना साहित्य परिषद् के संयुक्त तत्त्वावधान में कवि डॉ० मिर्ज़ा हसन नासिर के ग़ज़ल-संग्रह 'ग़ज़ल-गुलज़ार' का लोकार्पण उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष डॉ० शम्भुनाथ के द्वारा किया गया।

कथा-संग्रह प्रेम-सेतु का लोकार्पण

हिन्दी की लब्धप्रतिष्ठ लेखिका श्रीमती निर्मला कपिला की सोलह कहानियों के संग्रह 'प्रेम सेतु' का लोकार्पण नया-नंगल रोपड़ (पंजाब) में साहित्यिक समारोह में वरिष्ठ लेखक डॉ० चक्रधर नलिन द्वारा किया गया।

डॉ० कर्ण सिंह की पुस्तक 'मेरा जीवन-दर्शन' का लोकार्पण

विगत 4 जुलाई को यशस्वी लेखक डॉ० कर्ण सिंह की पुस्तक 'I Believe' का लोकार्पण भारत के माननीय उपराष्ट्रपति श्री हामिद अंसारी के हाथों उनके आवास 6, मौलाना आज़ाद रोड, नई दिल्ली के सेमिनार हॉल में हुआ। पुस्तक के लेखक श्री कर्ण सिंह ने, जो माननीय सांसद, भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद के अध्यक्ष तथा भूतपूर्व केन्द्रीय मंत्री हैं, अपने जीवन-दर्शन और उनके अंतरंग बिन्दुओं की गम्भीरता से चर्चा की तथा पुस्तक की संरचना पर प्रकाश डाला।

लोकार्पित पुस्तक 'I Believe' 'मेरा जीवन-दर्शन' पुस्तक का अंग्रेजी संस्करण है।

'भारतीय वाङ्मय' का जून अंक मिला। आपकी किताबें नामक कविता पढ़ी तथा अपने स्कूल के प्यारे बच्चों को भी यह कविता सुनायी।

'इक्कीसवीं सदी की भाषा-हिन्दी' नामक आलेख बहुत अच्छा लगा, आपके कार्यों की भूरि प्रशंसा कर स्वयं को धन्य समझ रहा हूँ।

— हेमचन्द्र रियाल, टिहरीगढ़

पुस्तक परिचय

हंस (आत्मकथांक)
(1932 ई०)

सम्पादक : **प्रेमचंद**

प्रथम संस्करण : 1932 ई०

प्रथम आवृत्ति : 2008 ई०

पृष्ठ : 208

अजिल्द: रु० 180.00/ **ISBN: 978-81-7124-631-1**
प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

अतीत का पुनरवलोकन
'हंस' का आत्मकथा अंक

अतीत को स्मरण करना मनुष्य का स्वभाव है। समय आने पर साहित्यकार अन्यों की गाथा लिखने के साथ-साथ अपने विगत का भी स्मरण करता है। 'हंस' के यशस्वी संस्थापक और सम्पादक मुंशी प्रेमचंद ने जब 1932 ई० में अपने इस मासिक पत्र का 'आत्मकथा अंक' प्रकाशित किया था तब विभिन्न लेखकों एवं रचनाकारों से उनका संक्षिप्त आत्मवृत्त तथा रोचक संस्मरण जुटाने के लिए कितना श्रम किया होगा, यह जानना कठिन नहीं है। आज हिन्दी के कितने वरिष्ठ प्राध्यापक तथा उच्च श्रेणियों के छात्र हैं जो उन रायबहादुर सीताराम बी०ए० के बारे में जानते हैं जिन्होंने शेक्सपियर के नाटकों को हिन्दी में लाने का श्रम किया था। काशी के नागरी प्रचारिणी सभा के तीन संस्थापकों (बाबू श्यामसुन्दर दास तथा ठाकुर शिवकुमार सिंह के साथ) में से एक पं० रामनारायण मिश्र के बारे में हम कितनी जानकारी रखते हैं ? शिवपूजन सहाय की सम्पादनकला तथा ग्रन्थ-संशोधन-क्षमता की जानकारी भी कितनों को है ? इस 'आत्मकथा अंक' में प्रेमचंद ने अपने समानधर्मा कथा-लेखक त्रयी के अन्य दो कथाकारों पं० सुदर्शन तथा पं० विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक' के आत्मवृत्तान्त तो दिये ही हैं, हिन्दी में जासूसी उपन्यासों के प्रवर्तक गोपालराम गहमरी तथा अपने से बाद के मनोविज्ञान-आश्रित उपन्यासों के लेखक जैनेन्द्र के आत्मकथानकों को भी स्थान दिया है। हास्य रस के उस युग के प्रगल्भ लेखक अन्नपूर्णानन्द का अपनी परीक्षा का संस्मरण कम रोचक नहीं है।

किन्तु 'हंस' के इस विश्रुत विशेषांक का दायरा इतना ही नहीं है। उर्दू से हिन्दी में आये बाबू धनपत राय उर्फ नवाबराय उर्फ प्रेमचंद यदि इस अंक में 'ज़माना' के सम्पादक मुंशी दयानारायण निगम, बी०एच०यू० में फारसी-अरबी के प्रोफेसर मौलवी महेशप्रसाद तथा इकबाल वर्मा सेहर के संस्मरण सम्मिलित नहीं करते तो यह कार्य अधूरा ही रहता। 'ज़माना' वह पहला उर्दू रिसाला था जिसने प्रेमचंद की उर्दू रचनाओं को स्थान दिया था। इस अंक में विशुद्ध साहित्य से हटकर वाङ्मय की अन्य विधाओं को अपने रचनाकौशल से समृद्ध करनेवाले लेखकों को भी स्थान मिला है। प्रसिद्ध देशभक्त भाई परमानन्द (एक जेल से दूसरे जेल में), दर्शनशास्त्र के प्रसिद्ध लेखक किन्तु इण्डियन प्रेस, इलाहाबाद के अनुरोध पर हिन्दी व्याकरण पर अपनी कलम चलानेवाले पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय, रामायण की कथा को अपनी वाचनशैली से जन-जन तक पहुँचानेवाले पं० राधेश्याम कथावाचक तथा आर्य संन्यासी स्वामी आनन्द भिक्षु सरस्वती के इतिवृत्त कम रोचक नहीं है। उपाध्यायजी तो बी०टी० की क्लास में प्रेमचंद के सहपाठी ही थे।

'हंस' के इस आत्मकथा अंक की एक अन्य विशेषता की ओर हमारा ध्यान स्वभावत: जाता है। उस युग में जब भारत की आम जनता ऐलोपैथी के बनिस्पत आयुर्वेद का अधिक विश्वास करती थी, हमारे देश ने कुछ ऐसे पीयूषपाणि वैद्यों का कृतित्व देखा जिन्होंने आयुर्वेद की औषधियों में नये प्रयोग किये, अपने व्यवसाय को सफलता की ऊँची मंजिलों तक पहुँचाया, साथ ही स्वास्थ्य एवं चिकित्साविषयक उच्च कोटि का साहित्य भी लिखा। ऐसे ही वैद्यों में परिगणित होते हैं—पं० ठाकुरदत्त शर्मा, लाहौरवाले 'अमृतधारा' के आविष्कारक तथा लगभग पांच दर्जन पुस्तकों के लेखक। 'अमृतधारा' की लोकप्रियता को इसी तथ्य से आंका जा सकता है कि इस औषधालय के स्थान को अमृतधारा भवन, वहाँ के मार्ग को अमृतधारा रोड तथा वहाँ के पोस्ट आफिस को अमृतधारा डाकखाना कहा जाता था। साहित्यिक अभिरुचि के अन्य वैद्य थे बाबू हरिदास वैद्य जिन्होंने सात भागों में 'चिकित्सा-चन्द्रोदय' लिख कर ख्याति के साथ द्रव्योपार्जन भी किया। भर्तृहरि के शतकत्रय (शृंगार, नीति, वैराग्य) का विशद अनुवाद उन्हें सफल टीकाकार का स्थान दिला चुका है। आयुर्वेद तथा लेखन दोनों में समान रुचिवाले मथुरा के पं० क्षेत्रपाल शर्मा का नाम उस युग में जाना माना था।

आत्मकथा अंक के प्रारम्भ में जयशंकर प्रसाद की पद्यात्मक आत्मकथा छायावादी शैली में दी गई है। साहित्य के इतिहास के अध्येताओं को ज्ञात है कि उस युग में हंस, सुधा, माधुरी, सरस्वती आदि पत्रों में गद्य काव्य पर्याप्त संख्या में लिखे जाते थे। सर्वश्री राय कृष्णदास, दिनेश नन्दिनी चोरडिया (बाद में डालमिया), शंकरदेव विद्यालंकार (मातृभाषा गुजराती थी) तथा तेजनारायण काक (बाद में राजस्थान काडर के आई०ए०एस० अफसर) आदि उस युग के प्रसिद्ध गद्य काव्यकार थे। आत्मकथा अंक में इन लेखकों की भावस्फूर्त रचनाएँ स्थान प्राप्त कर सकी हैं। संस्मरणों का अपना महत्त्व होता है जो सम्बन्धित व्यक्ति के जीवन की अनेक अज्ञात परतों को खोलता है। इस सन्दर्भ में पं० रामचन्द्र शुक्ल का लेख 'प्रेमघन की छायास्मृति', लंदन में रहकर हिन्दी लिखनेवाले धनीराम प्रेम का लेख 'मेरा साहित्य जीवन', सद्गुरुशरण अवस्थी का 'दरिद्र दर्पण' आदि विशेष रूप से रोचक तथा पठनीय हैं। पौन शती पहले छपे इस दुर्लभ स्मृति-भण्डार को पुन: उपलब्ध कराने के लिए विश्वविद्यालय प्रकाशन हमारे साधुवाद का पात्र है। आशा है, इसी क्रम में 'हंस' का **काशी अंक** तथा पं० बाबूराव विष्णु पराड़कर द्वारा सम्पादित प्रेमचंद स्मृति अंक भी हमें उपलब्ध हो सकेंगे।

—डॉ० भवानीलाल भारतीय

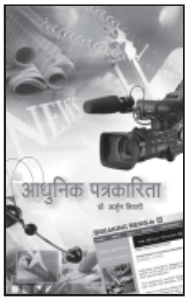

आधुनिक पत्रकारिता

डॉ० अर्जुन तिवारी

संशोधित तथा परिवर्धित
पंचम संस्करण : 2008 ई०

पृष्ठ : 320

सजिल्द: रु० 250.00/ **ISBN: 978-81-7124-649-6**
अजिल्द: रु० 150.00/ **ISBN: 978-81-7124-650-2**
प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

आजकल कम्प्यूटर, इन्टरनेट, साइबर, डिजिटल उपक्रम, उपग्रह एवं अन्तरिक्ष संसाधनों के चलते संवादों का तत्काल विस्तार हो रहा है जिसके फलस्वरूप मानव अधिक चैतन्य है। नित-नूतन परिवर्तित परिवेश में मानव-मन चमत्कृत और स्तब्ध है। साम्प्रतिक संचार-साधनों को जीवन-जगत् सम्बन्धी मानव-जिज्ञासा का सूत्रधार माना जा रहा है। प्रयोग, शोध, अध्ययन और विश्लेषण-वैशिष्ट्य से संश्लिष्ट आधुनिक पत्रकारिता अब सशक्त पत्रकारिता विज्ञान के रूप में प्रतिष्ठित है। अंग्रेजी का 'जर्नलिज़्म' शब्द पत्रकारिता सुलभ सत्कार्य, विचार, दर्शन का भाव नहीं वहन करता। 'इज़्म' 'जर्नल' से जुड़कर 'फासिज़्म', 'मार्क्सिज़्म', 'कम्यूनिज़्म', 'एथेइज़्म' जैसे गंध देता है। वादों-प्रतिवादों से दूर पत्रकारिता प्रौद्योगिकी, कला और शिल्प की त्रिवेणी है। अपने विकास-क्रम में संवाद-कला, सम्पादन-कला, जनसंचार एवं मीडिया के महत्त्वपूर्ण सोपानों को तय कर पत्रकारिता अब जीवन कला एवं प्रौद्योगिकी विज्ञान है जिसके लिए 'जर्नोलॉजी' शब्द उपयुक्त है। 'सोसियोलॉजी', 'साइकोलॉजी', 'ज़ियोलॉजी', 'फिलोलॉजी' के समान जर्नोलॉजी में 'ऑन लाइन जर्नलिज़्म', 'ई-जर्नलिज़्म', 'वेब

जर्नलिज़्म', 'डिजिटल जर्नलिज़्म' समाहित है। सम्प्रति पत्रकारिता के स्थान पर 'पत्रकारिता विज्ञान' एवं जर्नलिज़्म के स्थान पर 'जर्नोलॉजी' शब्द वरेण्य है।

'नया नजरिया-नयी तकनीक', 'हर खबर ताजा-खबर', 'सच्ची खबरें-पक्की खबरें' तथा 'देश की धड़कन के साथ धड़कता सूचना-स्रोत' से संदर्भित कृति 'आधुनिक पत्रकारिता' का पंचम संस्करण जनसंचार-जगत् में सुनिश्चित ही उल्लेख्य है। पाठकों ने इस ग्रन्थ को 'आचार-ग्रन्थ', 'फाउंडेशन बुक' के रूप में सम्मानित किया है।

'पत्रकारिता के विविध रूप', 'पत्रकारिता : शीघ्रता में प्रस्तुत साहित्य', 'पीत पत्रकारिता', 'फोटो पत्रकारिता', 'फिल्म पत्रकारिता', 'आधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी' एवं 'ई-जर्नलिज़्म' जैसे सामयिक तथ्यों से सम्बद्ध अध्याय जोड़कर ग्रन्थ को हर प्रकार से परिपूर्ण बनाने का प्रयास किया गया है।

इलेक्ट्रॉनिक स्नूपिंग, ऑपरेशन पिन, तहलका, कोबरा, स्टिंग ऑपरेशन दुर्योधन सन्दर्भित महत्त्वपूर्ण बातें स्टिंग ऑपरेशन में प्रस्तुत हैं। प्रशासनीय गोपनीयता अधिनियम १९२३ के परिप्रेक्ष्य में सूचना का अधिकार सूचना का तोहफा है, एक कारगर हथियार है। ब्लॉगिंग जैसे अद्यतन विषय पर सामग्री प्रस्तुत कर ग्रन्थ को अत्याधुनिक बनाया गया है।

बहुविध रस-गंध से सम्पृक्त हिन्दी पत्रकारिता विषय-वस्तु, शिल्प, प्रौद्योगिकी और दृष्टिबोध के चलते विस्तृत आयामी हो चली है। जीव-जगत् की आशा-निराशा, मोह-मोहभंग, सफलता-असफलता को अभिव्यक्ति देकर हिन्दी के माध्यम सर्वहित के प्रति समर्पित है। सरल-तरल हिन्दी के विकास के साथ ही पत्रकारिता जन-सेवा, सुधार, नवोन्मेष एवं कलात्मक अभिरुचि के साथ ज्ञान-विस्तार की दिशा में हर क्षण अग्रसर है। ताजगी, गहराई, पैनापन और विस्तारवाली पत्रकारिता के सर्वांग अनुशीलन से ही पत्रकार यशस्वी हो सकता है जिसके लिए आवश्यक सभी संसाधन इस ग्रन्थ में हैं।

संचार, मुद्रण, प्रसारण के क्षेत्र में क्षण-प्रति क्षण हो रहे आविष्कारों से मीडिया-जगत् में अप्रत्याशित क्रान्ति है। 'पेनलेस' और 'पेपरलेस' पत्रकारिता की बात देखी जा रही है। द्रुत संवाद-व्यवस्था में प्रशिक्षित होकर पत्रकारों को कदम से कदम मिलाकर चलना होगा ताकि २१वीं सदी की आपाधापी और अपसंस्कृति की हलचल में उनके विचार समय और समाज को स्वस्थ दिशा दे सकें।

आशा है, पत्रकारिता के प्रशिक्षणार्थियों के लिए यह पुस्तक अपरिहार्य सिद्ध होगी।

संत रज्जब

डॉ० नन्दकिशोर पाण्डेय

द्वितीय संशोधित तथा परिवर्धित संस्करण : 2007 ई०

पृष्ठ : 212

सजिल्द: रु० 180.00/ **ISBN: 978-81-7124-605-2**
अजिल्द: रु० 120.00/ **ISBN: 978-81-7124-604-5**
प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

रज्जब तैं गज्जब किया

संत रज्जब को भजनानन्दी संत कहा गया है। उन्होंने परमात्मा के चिंतन का मूलाधार भजन स्वीकार किया था। रज्जब का जन्म जयपुर के निकट सांगानेर में हुआ था। वह जब युवा हुए तो पिता ने आमेर में उनका विवाह तय किया। उन दिनों संत दादू दयाल का आश्रम आमेर में था। रज्जब की बारात संत दादू के आश्रम के पास से गुजरी। अचानक उनका घोड़ा आश्रम के सामने रुक गया। रज्जब घोड़े से उतर कर संत दादू दयाल का आशीर्वाद लेने गये। रज्जब ने ज्यों ही दादू दयाल के चरणों की धूलि मस्तक पर लगाई तो उन्हें लगा कि जैसे संत दादू से उनका जन्म-जन्म का संबंध है। तभी दादू दयाल ने कहा—

रज्जब तैं गज्जब किया, सिर पर बांधा मौर।
आया था हरिभजन कूं, करै नरक की ठौर॥

यह सुनकर रज्जब का मन पलट गया और उन्होंने शादी करने से मना कर दिया। दादू दयाल ने बहुत समझाया कि गृहस्थ बनकर भजन करो। लेकिन रज्जब नहीं माने। वह संत दादू दयाल के आश्रम में ही रहने लगे। दादू ने उन्हें दीक्षा दी। फिर तो रज्जब उनके प्रमुख शिष्यों में से एक बन गए। वह दूल्हा-वेष में रहने लगे—क्योंकि उनको इसी वेष में गुरु ने स्वीकार किया था।

संत रज्जब ने कहा कि जिसके हृदय में हरि का निवास नहीं है, वह तो सूने घर के समान है। परमात्मा तो अपना रस देने के लिए, आनन्द बाँटने के लिए सदा उत्सुक रहते हैं। वह आनन्द रस देते नहीं थकते और उनका दास-प्रेमी भी उसे लेते नहीं थकता। परमात्मा तो रसरसिया हैं, वह युगों-युगों से हमारी प्यास पूरी करते आ रहे हैं :

साईं देता ना थकै, लेता थकै न दास।
रज्जब रसरसिया अमित, जुग-जुग पूरे प्यास॥

रज्जब को भजन करना अत्यन्त प्रिय था। वह कहते थे कि ब्रह्म सबसे अलग भी है और सबसे मिला हुआ भी है। वह साकार भी है, निराकार भी है। उसकी ही शक्ति से पूरा जगत प्राणमय है। इसलिए ब्रह्म के चिंतन, स्मरण, भजन और मनन में ही परम सुख सन्निहित है।

संत रज्जब ने अपने पदों में निर्गुण-सगुण से परे निराकार चिन्मय परमात्मा की महिमा गाई। वह कहते थे कि मेरे परमात्मा तो मायारहित हैं, घट-घट में रहने वाले हैं, परम पवित्र हैं, पूर्ण ब्रह्म हैं, निर्गुण और सगुण होकर भी दोनों से परे हैं।

संत रज्जब ने कहा कि राम-रस पीते रहना ही सच्ची साधना का स्वरूप है।

राम रस पीजिए रे, पीए सब सुख होई।
पीवत ही पातक कहै, सब संतनि दिसिजोई॥

संत रज्जब ने कहा कि साधना को तब तक पूर्ण न समझिए, जब तक आप यह कहते रहें कि मैंने तत्व जान लिया है। जानना तो तब होता है, जब जानने वाला ज्ञान की सीमा पार कर जाए। उसे अपना कुछ न याद रहे। संत रज्जब ने कहा कि राम-नाम ही भवसागर से पार उतारने में समर्थ है। रज्जब अनुभवी संत और प्रेमी महात्मा थे।

—डॉ० हरिकृष्ण देवसरे

कवि बनारसीदास की आत्मकथा

(1586 से 1643 ई० के लगभग)

ज्ञानचन्द जैन

प्रथम संस्करण : 2006 ई०

पृष्ठ : 104

सजिल्द: रु० 80.00/ **ISBN: 81-7124-507-2**
प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

स्व० ज्ञानचन्द जैन ने कवि बनारसीदास की आत्मकथा (1586-1643 ई० के लगभग) के सम्बन्ध में बड़ी कुशलता और दूरदर्शिता का परिचय देते हुए पूर्ण वास्तविकता सामने रखी है। यह बनारसीदास की तीन पीढ़ियों की (व्यापारिक वर्ग) सही स्थिति देने के साथ-साथ ऐतिहासिक, सामाजिक तथा साहित्यिक वास्तविकता की स्थिति बड़ी विशद रूप में सामने रखती है।

श्री ज्ञानचन्दजी ने लगातार कई वर्षों तक साहित्यिक स्थिति आदि का अध्ययन करने के उपरान्त अपने अनुभवजन्य ज्ञान का परिचय देकर 88वें वर्ष में ये आत्मकथा सामने रखी है जिसका नाम अर्ध-कथानक दिया है। इसे बनारसीदास ने लगातार साहित्यिक क्षेत्र में कदम रखकर अपने 55 वर्ष में आश्विनी सुदी 13 संवत् 1693 में पूर्ण किया था।

इस आत्मकथा का सम्पादन श्री नाथूराम प्रेमी, विद्वान व अनुभवी सम्पादक ने किया था। यह हिन्दी की पहली आत्मकथा मानी जाती है जो आज से साढ़े तीन सौ से कुछ अधिक वर्षों पहले लिखी गई थी। उस समय हिन्दुस्तान में मुगल साम्राज्य के संस्थापक बाबर ने अपनी आत्मकथा मातृभाषा तुर्की में 'तुजुकेबाबरनामा' से लिखी थी

जो एक साहित्यकार के रूप में अधिक जानी जाती है। इसके बाद बाबर के परपोते जहाँगीर बादशाह की आत्मकथा 'तुजुके जहाँगीरी' भी तुर्की भाषा में ही थी।

हिन्दी भाषा में सबसे प्रथम बनारसीदास की आत्मकथा सबसे पहले लिखी गई। इसकी भाषा प्रचुरता से खड़ी बोली में है जो इसकी विशेषता है।

इस आत्मकथा से जानकारी मिलती है कि बनारसीदास का जन्म जौनपुर में हुआ था और उनके पिता खरगसेन मोती, मानिक चुन्नी का व्यापार करते थे। उनके नाना भी एक प्रसिद्ध जौहरी थे। सबसे प्रथम उनका नाम विक्रमाजीत रखा था, बाद में भगवान जितेन्द्र की जन्म नगरी के नाम पर बनारसीदास रखा गया।

बनारसीदास को 30 वर्ष की आयु तक अपने पिता की छत्रछाया प्राप्त रही, वैसे उन्होंने 24 वर्ष की अवस्था में व्यापार जीवन में प्रवेश किया था। वह जहाँगीर बादशाह का जमाना था। सबसे पहले उन्होंने कौड़ियों का व्यापार शुरू किया और बाद में वे भी बढ़ते-बढ़ते अपना व्याार करने लगे थे। उनके व्यापार का केन्द्र आगरा था। उनके पिता खरगसेन की मृत्यु 65 वर्ष की आयु में हुई थी, परन्तु बनारसीदास व्यापार क्षेत्र में लगे रहे थे। उन्होंने जौनपुर, पटना, बनारस शहरों में भी व्यापार किया।

बनारसीदास की आत्मकथा से स्पष्ट होता है कि व्यापारी वर्ग राज्याधिकारियों की आए दिन लूट खसोट से त्रस्त रहता था। अकबर के 43वें राज्यवर्ष में बनारसीदास को स्थनीय मुगल अधिकारियों की लूट-खसोट का पहला अनुभव हुआ था। उनके पिता खरगसेन को भी इसी लूट-खसोट के दौरान जौनपुर से भागना पड़ा था।

जहाँगीर बादशाह के 10वें राज्यवर्ष में बनारसीदास जब नेमा साहू के साझीदार बनकर बनारस, पटना, जौनपुर में व्यापार करते थे, उन्हें राज्याधिकारियों की लूट-खसोट का दूसरी बार अनुभव हुआ था।

एक बादशाह के मरने पर और नये बादशाह के तख्त पर बैठने और उसके नाम की दुहाई फिरने तक नगरों में अराजकता फैली रहती थी। नगरवासी नगर छोड़कर भाग जाते थे और सामान्य स्थिति होने पर लौटकर फिर अपने स्थान पर आकर कारोबार करने लगते थे।

सामाजिक दृष्टि से उनकी आत्मकथा में उनके काल के समाज का विश्लेषण करने के लिए मूल्यवान सामग्री मिलती है। उस काल का समाज केवल शासक वर्ग तथा प्रजा वर्ग में ही नहीं उसी के समानान्तर प्रजा वर्ग धनी और निर्धन वर्ग, ऊँची जातियों और नीची जातियों के लोगों में विभाजित था। गुणी, शिल्पकारों तथा कुशल कारीगरों की गणना शूद्र वर्ग में होती थी। यद्यपि वे मुगलकाल की आर्थिक स्थिति सुधारने में योगदान देते थे। देखा जाय तो सामान्य प्रजाजन का जीवन किस प्रकार व्यतीत होता था, इस सम्बन्धी जानकारी आत्मकथा से अच्छी मिलती है।

आत्मकथा से जानकारी मिलती है कि 14 वर्ष की आयु में बनारसीदास ने पण्डित देवदत्त के पास बैठकर विद्या का अभ्यास किया था। उस काल का राघव पांडवाय नामक संस्कृत के प्रसिद्ध द्वयार्थक काल के रचयिता महाकवि धनंजय का बनाया कोशग्रन्थ नाममाला के 200 श्लोक उन्होंने कंठस्थ कर लिए थे। उन्होंने ज्योतिषशास्त्र, अलंकारशास्त्र तथा लघुकोशशास्त्र (कामशास्त्र) का भी अध्ययन किया। उन्होंने आचारनीति, समाजनीति तथा राजधर्म का ज्ञान कराने वाले 400 स्फुट श्लोक भी कंठस्थ कर लिये थे।

चौदह वर्ष की आयु में विद्या से सम्पन्न बनने के साथ ही वह आशिकबाज भी बन गए। जतीजी के एक शिष्य मुनि भानचन्द्र से बनारसीदास का स्नेहभाव हो गया और वह उनके काव्य गुरु बन गए। यह बात उनके पिता खरगसेन को भी ज्ञात थी जो उनके साथ उनसे मिलने गए थे।

बनारस और जौनपुर के मुगल हाकिम ने सुकवि बन जाने पर बनारसीदास को सम्मानित किया और उन्हें अपना हिन्दी शिक्षक बनाया था तो उसे वे इसी नाममाला के दोहे और कभी छन्द शास्त्र या ग्रन्थ श्रुतबोध पढ़ाया करते थे।

बनारसीदास के काव्य-गुरु मुनि भानचन्द्र के सम्पर्क में आने पर उन्होंने जैन धर्म अंगीकार कर लिया था और मुनि ने उनके लिए संस्कृत, प्राकृत तथा देशभाषाओं की रचनाओं का एक गुटका अपने हाथ से लिखकर उनको दिया था। बाद में श्री बनारसीदास के अनुभव और बढ़ी हुई काव्य प्रवृत्ति के कारण लोग उन्हें जैन धर्म के ज्ञानी तथा अध्यात्मवादी कवि के रूप में जानते थे। इस सम्बन्धी विवरण श्री बनारसीदास ने सौ छन्दों की एक रचना में व्यक्त किया है।

इस प्रकार उनकी साहित्यिक रुचि बढ़ती गई और वह आत्मकथा के रूप में सामने आई। ये आत्मकथा दोहा, चौपाई के 675 छन्दों में लिखी गई है जिसका सम्पादन ऊपर उल्लिखित श्री नाथूराम प्रेमी ने किया था। बनारसीदास ने 57-58 वर्ष की आयु पाई थी। अर्ध कथानक के बाद उन्होंने नाटक समय सार काव्य रचना की। उनकी स्फुट काव्य कृतियों का संकलन उनके देहान्त के बाद एक भक्त ने बनारसी विलास के नाम से किया जो चैत सुदी 8 संवत् 1701 (सन् 1644) में ग्रन्थ रूप में सामने आया।

इस प्रकार हम देखते हैं कि अर्धकथानक आत्मकथा जहाँ बनारसीदास के घरेलू व व्यापारिक जीवन-तीन पीढ़ियों की स्थिति तो सामने रखती ही है। साथ ही ऐतिहासिक दृष्टि से बाबर, अकबर, जहाँगीर जैसे मुगल शासकों के राज्यों की वास्तविकता, उस समय की सामाजिक स्थिति जनता की वास्तविकता का दिग्दर्शन कराने के साथ-साथ हिन्दी खड़ी बोली में अपना विशिष्ट स्थान रखती है। सबसे प्रथम आत्मकथा के रूप में जानी जाती है। हिन्दी साहित्य में उसने विशिष्ट स्थान पाया है। हमें श्री बनारसीदासजी का इस अर्थ में ऋणी होना चाहिए कि उन्होंने साहित्य की नई विधा का जन्म बहुत वर्ष पूर्व ही कर दिया था जिसे साहित्यकार अध्ययन उपरान्त ही जान पाये। निश्चय ही इसको जानने का श्रेय विद्वान् स्वर्गवासी श्री ज्ञानचन्द जैन को जाना चाहिए जिन्होंने अध्ययन और परिश्रम उपरान्त हमें पूर्ण जानकारी दी। इसके लिए प्रकाशक विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी भी बधाई के पात्र हैं कि उन्होंने ऐसे महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ का प्रकाशन कर साहित्य की श्रीवृद्धि में योगदान दिया।

—मदनमोहन वर्मा

ग्वालियर (मध्य प्रदेश)

फ्रेण्डशिप डे !

किसी ने एक विद्वान से पूछा कि आपका सबसे अच्छा दोस्त कौन है? विद्वान ने बिना एक पल गँवाये उत्तर दिया—किताबें। क्योंकि किताबें आप से कुछ लेती नहीं सिर्फ आपको देती ही हैं। और ये सच भी है। आज के दौर में लोग अपने इसी सबसे अच्छे दोस्त से दूर होते जा रहे हैं। सस्ते उपन्यास और कोर्स की किताबें तो बिक रही हैं लेकिन अच्छी साहित्यिक किताबों के प्रति लोगों का रुझान लगातार घट रहा है।

14वाँ

नई दिल्ली पुस्तक मेला

(शनिवार, 30 अगस्त से रविवार 7 सितम्बर 2008)

प्रगति मैदान, नई दिल्ली में

विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक, वाराणसी

विविध विषयों की नवीनतम पुस्तकों के साथ प्रथम बार उपस्थित हो रहा है।

जिसमें शामिल हैं **हंस** के 'दुर्लभ अंक' व अनेकानेक विशिष्ट प्रकाशन।

आगामी प्रकाशन

बौद्ध कापालिक साधना और साहित्य

डॉ० नागेन्द्रनाथ उपाध्याय

द्वितीय संस्करण : 2008 ई०

सिद्ध-नाथ-सन्त साहित्य का अध्ययन करते समय लेखक ने डॉ० हजारीप्रसादजी द्विवेदी के 'नाथ सम्प्रदाय' का स्वाध्याय किया था और हर बार उससे कुछ नया मिलता रहा। 'बामारग' और कान्हुपा के कापालिक सम्बन्ध के मूल के प्रति लेखक का औत्सुक्य तीव्र था कि स्नेलग्रोव का 'हेवज्रतन्त्र' मिल गया। अनेक स्रोतों का संधान करते-करते अनेक सूत्र मिले, जिनका समन्वय-सामंजस्य इस ग्रन्थ के रूप में प्रस्तुत हो रहा है। बौद्ध सिद्धों में कृष्णपाद की अपभ्रंश रचनाओं ने विविध रूपों में आकृष्ट किया था। फलत: 'तान्त्रिक बौद्ध सिद्धाचार्य कृष्णवज्रपाद की अपभ्रंश रचनाओं का अध्ययन और सम्पादन' विषयक शोधप्रबन्ध पर कानपुर विश्वविद्यालय ने डी०लिट्० की उपाधि प्रदान की। उस शोधप्रबन्ध को कृष्णपाद के 13 चर्यापदों और 32 दोहों के मूल ताड़पत्रीय हस्तलेखों के आधार पर सम्पादन, डॉ० बागची द्वारा प्रस्तुत संस्कृत छाया श्लोकों के संस्कार, मुनिदत्त और मेखला की संस्कृत टीकाओं के हिन्दी रूपान्तर, चर्यापदों और दोहों पर हिन्दी में भाष्य, पारिभाषिक शब्दों पर विस्तृत टिप्पणियों आदि से सम्पन्न किया गया था। इस ग्रन्थ में मूल शोधप्रबन्ध के अध्ययन खण्ड को नवीन सामग्री के आधार पर संशोधित-परिवर्धित कर प्रस्तुत किया जा रहा है। तेंजुर से रचनाएँ अनूदित कर प्रस्तुत की जा रही हैं और इतर सामग्री भी बौद्ध कापालिक साधना और साहित्य के स्वरूप को अधिक प्रकाशित करने के लिए समायोजित की जा रही है। सामान्यतया सुपठित समाज को भी तान्त्रिक बौद्धों की कापालिकता का परिचय नहीं है। इसीलिए सारे सुलभ सूत्रों को यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है, फिर भी यह दावा नहीं है कि कापालिक बौद्धों का कोई अपना 'यान' रहा होगा। 'सम्प्रदाय' का सम्बन्ध गुरु-शिष्य परम्परा से है जबकि कुछ लोग इसे एक धार्मिक गठन मान लेते हैं। तान्त्रिक बौद्धों के अन्तर्गत ही चर्या, आचार, साधन सामग्री, वेश-भूषा तथा विचारणासम्बन्धी कुछ विशेषताओं से उनका वैलक्षण्य प्रतिपादित किया जा सकता है।

भोजपुरी और हिन्दी

डॉ० शुकदेव सिंह

प्रथम संस्करण : 2008 ई०

हिन्दी राजभाषा बनी, नहीं बनी। भोजपुरी गाते-बजाते अब फिल्मों की दुनिया से देश-देशान्तर में कहीं 'क्रियोल' बनकर, कहीं भारत की 'जातीय-स्मृति' बनकर अपने पूर्वजों की गिरमिटिया याद के साथ मजदूरों की भाषा से देशान्तर की राजभाषा बन गई है। ''हम न मरिहाँ, मरिहैं संसारा'' के विश्वास के साथ इसे फिर दुनिया के सामने कर रहा हूँ।

'भोजपुरी' पर बारह-तेरह हजार पृष्ठ काम मेरे साथ ही हुआ। एक तरह से मैंने ही किया। तब मेरे सहकर्मी कम से कम मेरे ही बराबर काम करने के लिए तैयार रहते थे। आज भी डॉ० आनन्द कुमार पाण्डेय जैसे मेरे छात्र और विद्याकर्मी अपनी व्यस्त दिनचर्या के बावजूद मेरी कलम बनकर लिखते हैं। किसी छूटते-टूटते प्रसंग पर 'बना नहीं' की टोक-टाक करते रहते हैं। मैं उन्हें उसी तरह से लाजवाब करता हूँ जैसे जब 'किशन चन्दर' जैसे महान् लेखक ने 'मण्टो' से पूछा कि मेरी कहानियों के बारे में तुम्हारी क्या राय है? तो मण्टो ने जवाब दिया था कि 'तू बातें ही बनाता रहेगा या कहानियाँ भी लिखेगा।' मैं आनन्द से कहता रहता हूँ कि तुम केवल 'मित्र-मित्र' ही कहते रहोगे या कोई नयी किताब या लेख लिख छपाकर शिवप्रसाद सिंह पर लिखी किताब का बीज विटप, तरु या अक्षय-वट भी बनाओगे? इस कित किंचित के साथ उन तेरह हजार पृष्ठों में से गाँव-गाँव में इस्तेमाल होने वाली घर-वार, खेत-खलिहान, सार-मवार, चरनी, खूँटा, पगहा, ढाबा, मड़ई, खुरपी, गड़ासी जैसे ग्रामीण जीवन की पेशापरक शब्दावली के नमूने दे रहा हूँ। ट्रैक्टर आया तो डर, हेंगा, परिहथ, हरिस, जुआठ, पैना, पांचर, फार चले गए। नयी धुलाई मशीन की वजह से छाडी, नाद, रेह, धोबिया-पाट, छइयो-छइयो, जजमान, पौनी क्रमश: अखबार आये तो डुग्गी, डफला, झाल, करताल, टी०वी० आया तो नाच-गाने से जुड़े शब्द, क्रिकेट आया तो गुल्ली-डंडा, बाना-बनेठी, कबड्डी, ऊढ़ा, घर-घरौना हजारों शब्द मर गये। मैंने शब्दों की शवयात्रा से जहाँ-तहाँ ठहरकर कुछ शब्दों के नमूने इसीलिए इस पुस्तक में दिये। लोकोक्तियाँ, मुहावरे, कहावतें, घाघ-भड्डुरी की सूक्तियाँ, जन्म-संस्कार से लेकर शादी-विवाह, गारी, तीज-त्योहार, खान-पान, मिठाई, तिलवा, ढूँढी, भेली, राब, बहुरी, दाना, चूरा, परमल, भाती और रिझौना, गहुली (व्यंग्य और कटाक्ष से अधिक तीखा) तमाम तरह के ग्रामीण शब्दों के कुछ नमूने इस पुस्तक में दिये जा रहे हैं। 'चुमावन' से लेकर परिछावन और विदाई, रुलाई के साथ संभवत: पहली बार, हिन्दू-विवाह, गीतों के समानान्तर मुस्लिम निकाह गीतों में से कुछ सबूत इस किताब में भी हैं।

यह किताब भोजपुरी 'पढ़त' का छोटे से छोटा नमूना भर है। मेरी सत्तर वर्ष की श्रुति, स्मृति, पढ़ाई, लिखाई अर्थात् ''कुछ शेष चिह्न हैं, मेरे उस महा मिलन के''। **—स्व० डॉ० शुकदेव सिंह**

प्रेरक प्रसंग

माइकेल मधुसूदन : एक महान व्यक्तित्व

आगन्तुक की आँखें फटी की फटी रह गईं। बोला—''आप...माइकेल ...मधुसूदन दत्त... मगर चित्रों में तो...।''

माइकेल ने फीकी मुस्कान बिखेर दी—''चित्रों में आपने कीमती पोशाकों में सुसज्जित माइकेल का अतीत देखा है, मैं वर्तमान हूँ। पर बोलिए मेरे लिए क्या आज्ञा है?'' ब्राह्मण ने सकुचाते हुए कहा—''मैंने सुना था कि आपके यहाँ से कोई खाली हाथ नहीं लौटता...खैर छोड़िये... आप स्वयं ही आर्थिक संकट में है।'' कहकर वह वापस मुड़ने लगा।

कालजयी कृति 'मेघनाथ वध' के रचयिता मधुसूदन दत्त ने स्वभावसुलभ मुक्त हास्य किया—''मेरे कष्ट की चिन्ता न करें श्रीमान्। माइकेल धन से गरीब जरूर हो गया है...मगर मन से बादशाह है। क्या कष्ट है निस्संकोच कहिए।''

ब्राह्मण ने भारी आवाज में कहा—''बात ऐसी है कि एक दरिद्री पुरोहित हूँ...कन्या के विवाह का बोझ सिर पर है...'' कहते हुए ब्राह्मण की आँखें भर आईं।

अगले ही क्षण भावुक कवि ने अपनी फटी जेब में हाथ डालकर वे पूरे 500 रुपये निकाल कर दे दिये जो अभी कुछ समय पूर्व ही एक प्रकाशक ने उनकी करुण स्थिति को देखकर अग्रिम पारिश्रमिक के रूप में उन्हें दिये थे और...कवि ने शीघ्र एक पुस्तक लिख देने का वायदा किया था।

इस अप्रत्याशित दान से गद्गद् ब्राह्मण के आशीर्वाद देकर चले जाने के बाद कवि की दृष्टि अपनी विदेशी पत्नी पर पड़ी जिसके वस्त्र जगह-जगह से फटे हुए थे। उसके हाथ में एक मुड़ी-तुड़ी चिट थी जिस पर बाजार से मंगाई जाने वाली वस्तुओं के नाम लिखे थे, जिनमें पुत्री की औषधि, पति-पत्नी के वस्त्रादि एवं खाद्य पदार्थ सम्मिलित थे। कवि अपनी पत्नी के पास बढ़ आये। गम्भीर आवाज में बोले—''प्रिये, मैं जानता हूँ...जिसकी बेटी उचित चिकित्सा के अभाव में मर रही हो...जिसकी पत्नी फटे वस्त्र पहन कर अपने शारीरिक संयम की रक्षा करती हो...जो स्वयं वस्त्रादि के अभाव में लोक समाज में जाने में असमर्थ हो, उसे इस तरह अपरिणामदर्शी और अविवेचक नहीं बनना चाहिए...पर मैं क्या करूँ... मेरे भीतर कविहृदय राजाधिराज है न...किसी का भी कष्ट उसे विचलित कर देता है...क्षमा करना।''

भावाभिभूत पत्नी ने झुककर पति के चरण स्पर्श किये, बोली—''माइकेल, अब तक तुम्हें मैं मात्र प्रतिभासम्पन्न कवि के रूप में ही जानती थी...तुम्हारा व्यक्तित्व कितना महान है यह आज मैं जान पाई। मैं विदेशी हूँ...तुम्हारे ही मुँह से मैंने कर्ण और हरिश्चन्द्र की दान-गाथाएँ सुनी हैं...आज उनके दर्शन भी कर लिये।''

प्राप्त पुस्तकें और पत्रिकाएँ

रोज एक कविता : रोज एक पाठक : डॉ० एस० सुब्रह्मण्यम् 'विष्णुप्रिया', प्रकाशक : हिन्दी हृदय, 1, सुब्रह्मण्यम् एवेन्यू, वाल्मीकि नगर, तिरुवान्मियूर, चेन्ने-600041

प्रस्तुत प्रयास के लिए श्री 'विष्णुप्रिया' जी का अभिनंदन! विशेषत: इसलिए भी कि तमिल भाषाभाषी हिन्दी-प्रेमी होकर भी हिन्दी भाषा को लोकभाषा/राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने के लिए इन्होंने प्रतिदिन एक कविता और एक पाठक का संकल्प लेकर जो कार्य आरम्भ किया है वह प्रशंसनीय ही नहीं, अनुकरणीय भी है।

शब्द साधक और साहित्य : डॉ० अमरेन्द्र, प्रकाशक : अंगिका फाउण्डेशन, नई दिल्ली, मूल्य : 125/- रुपये

किसी भी रचना और रचनाकार की भावभूमि को स्पर्श करते हुए साहित्य का विश्लेषण करना कठिन प्रक्रिया है। इसी प्रक्रिया के अन्तर्गत डॉ० अमरेन्द्र ने जो फीचर, समीक्षा, प्रोफाइल आदि लिखे हैं उन्हीं आलेखों का पठनीय संकलन है 'शब्दसाधक और साहित्य'।

आदमी के लिए : लेखक ओम रायजादा, प्रकाशक : अनुजा प्रकाशन, ईश्वरपुरा, कटनी (मध्य प्रदेश), मूल्य : सजिल्द 25/- रुपये, पेपर बैक : 10/- रु०, जन संस्करण-5/- रु०

आदमी के लिए, ज़िन्दगी के गीत गानेवाले कवि ओम रायजादा की इन गज़लों में सामयिक राजनीतिक और सामाजिक जीवन की विसंगतियाँ अंकित हैं। इनमें जन की पीड़ा है, जीवन का व्यंग्य है, कवि का आक्रोश है। युग-वेदना को, उसके ज़ख्मों को काव्याभिव्यक्ति देना कवि का कर्म है, और युग चेतना को जागृत करना कविता का धर्म है। इस दृष्टि से ये पंक्तियाँ—''लोग क्यों बेजुबाँ आजकल/उठ रहीं आँधियाँ आजकल।'' × × × ''कलम की तलवार की इस धार के ही साथ हम/गोलियों की या बमों की हम जुबाँ पैदा करें।''

तुमुल तूफानी (साप्ताहिक) : चन्दौसी, मुरादाबाद

तेजस् (पाक्षिक) : आई०एम०एम०, बीकानेर

वर्तमान साहित्य (जुलाई 2008) : कुँवरपाल सिंह/नमिता सिंह, 28, एम०आई०जी०, अवन्तिका-1, रामघाट रोड, अलीगढ़, मूल्य : 18.00 मात्र।

अक्षर पर्व (जून 2008) : सम्पादक : सर्वमित्रा सुरजन, देशबन्धु प्रकाशन विभाग, देशबन्धु परिसर, रामसागरपारा, रायपुर-492001, छत्तीसगढ़, मूल्य : 15.00 मात्र।

प्रत्यय (त्रैमासिक) : सं० सर्वेश पाण्डेय, 134, गालिबपुर, मऊनाथभंजन, मऊ (उ०प्र०), मूल्य : 30.00 मात्र।

भारतवाणी (जून 2008) : सं० डॉ० चन्दूलाल दूबे, सचिव, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, धारवाड-580 001, मूल्य : 50.00 रुपये वार्षिक चन्दा।

आनन्दयात्रा (जुलाई 2008) : श्री श्री आनन्दमयी चैरिटेबल ट्रस्ट के लिये प्रो० कमलाकांत घोष द्वारा प्रकाशित, कोलकाता-1

कृषि वार्ता (मई 2008) : सं० रामशर्मा, कृषि एवं ग्राम विकास परिषद्, अवंति विहार, रायपुर, छत्तीसगढ़, मूल्य : 15.00।

आरोग्य (जुलाई 2008) : सं० विमलकुमार मोदी, आरोग्य मन्दिर, गोरखपुर (उ०प्र०), मूल्य : 7.00 रुपये मात्र।

मैसूर हिन्दी प्रचार परिषद् पत्रिका (जून 2008) : सं० डॉ० बि० राम संजीवय्या, 58, बेस्ट ऑफ कार्ड रोड, राजाजीनगर, बेंगलूर-560 010, मूल्य : 5.00 रुपये मात्र।

आश्वस्त (जून 2008) : सं० सुश्री डॉ० तार परमार, भारती दलित साहित्य अकादमी, मध्यप्रदेश, उज्जैन, मूल्य : 15.00 रुपये।

आकंठ (मई 2008) : सं० हरिशंकर अग्रवाल, इन्द्रिरा गाँधी वार्ड, तहसील कालोनी, बनवारी रोड, पिपरिया (म०प्र०), पूर्णत: अव्यावसायिक।

भारतीय वाङ्मय

मासिक

वर्ष : 9 **अगस्त 2008** **अंक : 8**

संस्थापक एवं पूर्व प्रधान संपादक

स्व० पुरुषोत्तमदास मोदी

संपादक : **परागकुमार मोदी**

वार्षिक शुल्क : रु० 50.00

अनुरागकुमार मोदी

द्वारा

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

के लिए प्रकाशित

वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा० लि०

वाराणसी *द्वारा मुद्रित*

डाक रजिस्टर्ड नं० ए डी-174/2003 RNI No. UPHIN/2000/10104

प्रेस रजिस्ट्रेशन एक्ट 1807 ई० धारा 5 के अन्तर्गत

Licenced to post without prepayment at

G.P.O. Varanasi

Licence No. LWP-VSI-01/2001

सेवा में,

प्रेषक : (If undelivered please return to :)

☎ : Offi. : (0542) 2413741, 2413082, 2421472, (Resi.) 2436349, 2436498, 2311423 ● Fax : (0542) 2413082

E-mail : sales@vvpbooks.com ● Website : **www.vvpbooks.com**

विश्वविद्यालय प्रकाशन

प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता

(विविध विषयों की हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी पुस्तकों का विशाल संग्रह)

विशालाक्षी भवन, पो०बॉक्स 1149

चौक, वाराणसी-221 001 (उ०प्र०) (भारत)

VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN

Premier Publisher & Bookseller

(BOOKS IN HINDI, SANSKRIT & ENGLISH FOR STUDENTS, SCHOLARS, ACADEMICIANS & LIBRARIANS)

Vishalakshi Building, P.O. Box : 1149

Chowk, VARANASI-221 001(U.P.) (INDIA)